स्वर्गकी सुन्दरियां।

अनुवादक और प्रकाशक,
महावीरप्रसाद गहमरी,
स्वर्गमाला कार्यालय,
मुरादपुर—बांकीपुर।

Narayan Singh at the B. P. & Publishing
ate Press Moradpur, Bankipur.

स्वर्गमालाके नियम।
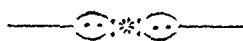
स्वर्गमाला ग्रन्थावलीमें हर साल १००० पृष्ठोंकी पुस्तकें प्रकाशित होंगी। सालभरमें बारह पुस्तकें या पुस्तकोंके बारह खण्ड क्रमशः निकलेंगे। जो लोग दो रुपये पेशगी भेजकर स्वर्गमालाके ग्राहक बनेंगे उनको एक वर्षमें प्रकाशित होनेवाली एक हजार पृष्ठोंकी पुस्तकें दी जायंगी। डाक महसूल कुछ नहीं लिया जायगा। फुटकर दाम हर खण्डका ।)

लिये बढ़ियासे बढ़िया पकवान बनवाया और सुन्दरसे सुन्दर बिछौनेका प्रबन्ध कराया। यह सब देखकर बूढ़ा बारहट बहुत खुश हुआ। युवक रानाजीके उपस्थित न होनेसे उसने अपने आदर मानकी विशेष आशा नहीं रखी थी; परन्तु जब ऐसा बढ़िया सत्कार हुआ तब बूढ़े बाबाका जी खुश हुआ ही चाहे। भोजनादिके पश्चात् रातको बारहट जब पलंग पर बैठा तब केसरीसिंह अपने हाथसे उसको पंखा करने लगा और जब बारहट लेट गया तब बालक केसरी सिंह उसके पैर दबाने लगा। यह देखकर बारहट बोल उठा है! हैं! केसरीसिंहजी! यह क्या करते हो? ऐसा भी कहीं होता है? तुम राजकुमार हो; तुम्हारे यहां नौकर चाकरों की कमी थोड़े है। मैं तुमसे ऐसी सेवाकी इच्छा नहीं रखता। पर केसरीसिंहने विशेष प्रेमसे, कुछ हठसे और कुछ बालस्वभावकी सरलतासे कहा कि आप तो मेरे बड़े हैं। मेरे पिताजी आपका सम्मान करते थे और मेरे बड़े भाई भी आपका बड़ा ख्याल रखते हैं तब मैं बालक होकर अगर इतनी सेवा करूं तो कौन बड़ी बात है? यह कहकर उसने पैर दबानेका काम जारी रखा। बूढ़ा बारहट तो छोटे राजकुमारका यह प्रेम देख कर बुलबुल हो गया। वह थका हुआ था और भोजन आनन्दसे हुआ था तथा बिछौना बड़ा गुलगुल था, इससे वह थोड़ी ही देरमें सो गया। पर केसरीसिंह अपने कोमल नन्हें नन्हें हाथोंसे उसके पैर दबाता ही रहा।

उसने सोचा कि जबतक कविजी न कहें तबतक कैसे छोड़ूं। यह सोच कर वह उस काममें बराबर डटा रहा। बूढ़े बारहटजी तो खुर्राटे भर रहे थे। रातके तीन बजे जब कविकी नींद टूटी और उस समय तक केसरीसिंहको पैर दबाते देखा तब उसने चकित होकर पूछा कि बेटा! क्या तू अभी तक जागता है और मेरे पैर दबाता है? ओ हो!

विनीत भावसे केसरीसिंहने कहा कि चाचा जी! आपके हुक्म बिना मैं कैसे सोता? यह सुन कर बारहटके जीमें उसके ऊपर बड़ा ही प्रेम हुआ और राजकुलके बालकमें ऐसी नम्रता, ऐसा भाव और ऐसी सहनशीलता देख कर उसके विस्मयका आरपार नहीं रहा। इन सबकी उमंगमें और उपकार वृत्तिके बोझसे दब जानेके कारण उस समय उनके मनमें सैकड़ों प्रकारकी कल्पनाएं, वृत्तियां तथा भावनाएं जाग्रत हो गयीं और उसमें अमूल्य कविताकी तरङ्गें आपसे आप उठने लगी। उस समयके आनन्दमें मग्न होकर बारहटने चमकती हुई आँखोंसे बालककी ओर देखते हुए कहा कि बेटा केसरीसिंह! इस समय कविता देवी प्रसन्न होकर उतर आयी हैं इसलिये तू मुझे अपना पराक्रम बता, मैं उस पराक्रमका गुण गाकर तुझे दुनियामें अमर कर दूं। बोल बेटा! बोल, देर मत कर, शरम मत कर। जल्दी बता। इस समय कविता देवी तुझपर प्रसन्न हो गयी हैं।

यह सुनकर केसरीसिंहने कहा कि चाचाजी! मैं क्या हूं, मुझमें पराक्रम क्या है? मैंने अभीतक कुछ नहीं

किया है। मैं तो अभी खेलता खाता हूं और पढ़ता हूं। आपके आशीर्वादसे पीछे कुछ हो तो हो पर अभी तो मुझसे कहने योग्य पराक्रम कुछ नहीं बन सका है।

कवितावे आवेगमें आये हुए बारहटने कहा—नहीं बेटा! तूने कुछ तो किया होगा। तेरे ऐसा प्रेमी, चतुर और बहादुर लड़का बिना कुछ किये नहीं रह सकता। अच्छा कोई छोटा मोटा काम तूने किया हो तो वही बता। बेटा! लजा मत। इस समय साक्षात् सरस्वती उतर आयी है, उनका लाभ मुझे लेने दे और तुझे देने दे।

यह सुन कर जरा शरमाते शरमाते सिर नीचे किये केसरीसिंहने कहा कि चाचाजी! मैंने सिंहका एक छोटा सा बच्चा मारा था पर यह बात आपसे कहने लायक नहीं है। वह तो छोटा सा शावक था।

कविकी कृपाकाफल—केसरीसिंह जागा।

कविने कहा—नहीं, नहीं, नहीं। वह केसरी शेर था; पर तू शरमाता है इससे साफ साफ नहीं कहता। मैं समझ गया कि तूने केसरी सिंहको मारा है और इतना ही मेरे लिये यथेष्ट है। अब देख इसको खूबी। यह कहकर बूढ़ा बारहट कविता करने लगा। फिर तो वह वाग्धारा चली कि क्या कहा जाय! स्वभाव कविके अन्तःकरणमें साक्षात् कविता देवीका आविर्भाव होने पर वह जैसा सरस, अलौकिक और फड़कती हुई कल्पना पूर्ण वर्णन करता है उसका स्वाद रसिक जन ही जानते हैं, उसकी प्रशंसा नहीं की जा सकती। बारहटने केसरीसिंहकी बड़ाई और उसके मारे हुए सिंहका

वर्णन ऐसा बढ़िया किया कि उसे सुनकर सब लोग दंग हो गये। इसके बाद बारहट विदा हो गया।

अपनी प्रशंसाकी बड़ी कविता सुनकर और उसकी झंकार, उसके तादृश्यभाव, उसका स्वाभाविक वर्णन और उसकी हृदय हुलसानेवाली बातें तथा उसमें अनुपम पराक्रम करनेकी युक्तियां देखकर बालक केसरी सिंहकी चित्तवृत्ति अधिक तीव्र, अधिक दृढ़ और महत्वाकांक्षावाली हो गयी। इससे उस दिनसे वह निशानेबाजीमें अधिक ध्यान देने लगा। उसके बड़े भाईने उसके लिये सब अनुकूल प्रबन्ध कर दिया। क्योंकि वह बारहटके मुंहसे अपने छोटे भाईका बखान सुनकर बहुत खुश हुआ था पर इसके साथ ही उसके जीमें यह बात गड़ गयी थी कि बारहटने अपनी कवितामें अत्युक्ति की है। केसरीसिंहमें अभी इतनी बहादुरी नहीं है पर भविष्यमें वह ऐसा बहादुर हो तो अच्छी बात है। इससे उसने छोटे भाईकी उन्नतिके लिये हथियार, घोड़े, शिक्षक और घूमने फिरने आदि का अच्छा सुबीता कर दिया। नवयुवक केसरीसिंह भी उमङ्गके साथ उससे लाभ उठाने लगा। क्योंकि बारहटके आलंकारिक प्रासादिक काव्यसे उसके अन्दरकी महत्वाकांक्षा जाग उठी थी। उसमें बहादुरीका जो बीज था उसको बहादुरीके बखानसे पानी मिल गया। उसमें जो कुलका अभिमान, जातिका अभिमान, देशका अभिमान और अधिकारका [illegible] था उसको विशाल बनानेकी फुर्ती उसमें आगयी

थी; इसलिये वह जी जानसे निशानेबाजी सीखने लगा और थोड़े ही समयमें रजवाड़ोंमें नामी निशाना-बाज कहलाया। वह बाघका शिकार करने लगा।

इसके बाद पांच वर्ष बीत गये और धीरे धीरे बारहटकी कविता देश देशमें फैल गयी। रजवाड़ोंमें घर घर केसरीसिंहका बखान होने लगा। यह बखान सुनकर सिरोहीकी राजकुमारीने उससे ब्याह करनेकी इच्छा प्रगट की। सिरोहीके राजाने केसरीसिंहके पास सगाईके लिये नारियल भेजा। केसरीसिंहने भी उस राजकुमारीके विषय में कितनी ही अच्छी बातें सुनी थीं इससे उसने यह सम्बन्ध स्वीकार किया। जल्द ब्याह हो गया। केसरीसिंह भी जवान था और राजकुमारी भी सत्रह अठारह वर्षकी थी।

अपने पतिकी बहादुरी देखनेकी इच्छा।

जब राजकुमारी ससुराल आयी तब उसने एक दिन केसरीसिंहसे कहा—मैंने सुना है कि तुम शेर मारते हो। मैं देखना चाहती हूं। यह सुनकर केसरीसिंहने कहा कि यह कौन बड़ी बात है आज ही देखो। यह कहकर वह उसी दिन जङ्गलमें चला गया और दस पन्द्रह कोसमें एक सिंहको मार कर उठा लाया और अपनी पत्नीके महलके पास रख दिया। सिरोहीकी राजकन्या सिंहको देखनेके लिये भीतरसे वहां आयी पर सिंहको देखकर कुछ नहीं बोली, चुपचाप खड़ी रही। यह देखकर केसरीसिंह कुछ विस्मित हुआ और सोचने लगा कि इसको कुछ आश्चर्य क्यों नहीं होता? जानपर खेलकर मैं ऐसा विकराल सिंह मार

लाया और इसके मुंहसे प्रशंसाका एक शब्द भी नहीं निकला। तो क्या इस युवतीमें कुछ दिल नहीं है? नहीं, नहीं ऐसा नहीं हो सकता। यह बड़ी गौरवान्वा है और बड़ी बड़ी आशाएं रखनेवाली है। शायद छोटा शेर देखकर इसको आश्चर्य नहीं हुआ। यह सोचकर केसरीसिंह दूसरे दिन फिर शिकार करने गया और बहुत दूरके जङ्गलमें एक बहुत बड़ा शेर मार लाया और अपनी प्यारीके सामने रक्खा। सिरोहीकी राजकुमारी उसको देखकर भी कुछ खुश नहीं मालूम हुई। तीसरे दिन केसरीसिंह उससे भी बड़ा एक शेर मार लाया पर उसे भी देखकर सिरोहीकी राजकन्या प्रसन्न नहीं हुई। तब केसरीसिंहसे नहीं रहा गया। उसका धैर्य छूट गया। उसका चेहरा बदल गया। वह कुछ कहना ही चाहता था कि इतनेमें वह मनमोहनी प्रसन्नवदना युवती मधुर स्वरसे, शरमाती शरमाती बोली—प्यारे! इसीको तुम सिंह कहते हो? यह सिंह नहीं कहलाता। असली सिंह तो यहां है ही नहीं। असली सिंह सिरोहीके जङ्गलोंमें होते हैं उनको जब मारो तब तुम्हारी बहादुरी। ऐसा कुत्ते का सा बाघ मार लानेसे क्या होता है? यह सुनकर केसरीसिंहने कहा कि जब मैं वैसा सिंह मार लाऊंगा तभी तुमसे सम्बन्ध रखूँगा। मैं तुमको खुश करने योग्य सिंह न मार लाऊं तो केसरीसिंह नहीं। तुम अपने बापको चिट्ठी लिखो। मैं काल ही सिरोही जाऊंगा।

दूसरे दिन केसरीसिंहने अपनी पत्नी और कुछ आदमियोंको साथ लेकर सिरोहीकी तरफ कूच किया और लम्बी लम्बी मञ्जिलें तय कर कुछ दिनोंमें वहां पहुंच गया। उसको आया देखकर और केसरीसिंहका शिकार खेलनेका शौक सुनकर सिरोहीके महाराजको बड़ी चिन्ता हुई; क्योंकि सिरोहीके जङ्गलोंमें रहनेवाले केसरी सिंह को मारना सहज नहीं था; बड़े भारी जान जोखोंका काम था और ऐसे हजारों शिकारी मारे गये थे। इससे महाराजको अपने दामादके लिये बड़ी फिक्र हुई; उनको भय हुआ कि मेरी प्यारसे पली हुई लड़की विधवा न हो जाय। उन्होंने पथ-प्रदर्शकोंको बुला कर सिखा दिया कि जब तुम केसरी सिंहको शिकार खेलानेके लिये ले जाना तो कोई छोटा मोटा मामूली सिंह दिखा देना और उसको ऐसे घेरावमें डालकर मारनेके लिये कुमारसे कहना कि जिसमें शेर बहुत तूफान न मचाने पावे। ऐसा करोगे तो मैं तुमको बहुत इनाम दूंगा और अगर मेरे दामादका कोई बाल बांका होगा तो फिर मैं तुम्हारी पूरी खबर लूंगा। इस तरह सिरोहीके महाराजने पथप्रदर्शकोंको पहलेसे ही चेता दिया।

इसके बाद जब पथप्रदर्शक सिंहको खोजनेके लिये जङ्गलको चले तो कुमारीने उनको बुलाकर कहा कि अगर तुम उनको बड़ेसे बड़ा सिंह दिखाओगे तो मैं तुम्हें बहुत इनाम दूंगी। यह लो इनामके तौर पर मोहरोंकी एक थैली अभी ले लो। बड़ेसे बड़ा शेर दिखा दोगे तो मैं अपना

राजकुमारीसे उसकी सखीकी बातचीत ।

उन लोगोंके चले जाने पर राजकुमारीसे उसकी एक मुंह-लगी सहेलीने कहा—बहन ! तुम यह क्या कर रही हो ? मुझे तो डर लगता है कि तुम्हारा सुहाग जाता न रहे । ऐसे हठसे क्या फायदा ? अपने पतिको जहां तक बने जोखोंसे बचाना चाहिये कि और जोखोंमें डालना चाहिये ? यह तुम्हारा प्रेम किस तरहका है ? अभी तुमने पतिका सुख भी नहीं भोगा कि इतनेमें पतिको ऐसे भयङ्कर जोखोंमें डालनेकी युक्ति रच डाली ! इसका क्या मतलब है ? सखी ! ऐसी उलटी चाल तो मैंने कहीं नहीं देखी ।

यह सुनकर मिरीहोकी राजकुमारीने कहा कि बहन! वह मर जायंगे, यही न? या और कुछ? वह मर जायंगे तो इसमें कौन बड़ी बात है? मैं उनके साथ सती हो जाऊंगी और दूसरे जन्ममें हम दोनों इससे अधिक सुख भोगेंगे। पर मेरी सयानी सखी! शायद तुमको मालूम नहीं है कि मैं अपने पतिको बहादुरसे बहादुर देखना चाहती हूं। और मुझे ऐसा पति पसन्द है जो लाखों आदमियोंमें एक हो और दूसरा कोई उसकी बराबरी न कर सकता हो। इसीसे मैंने अपने प्यारेको कीर्त्ति दिलानेके लिये यह काम किया है। उनकी सच्ची बहादुरी देखकर मेरा प्रेम उनके ऊपर खूब दृढ़ हो जाय इसके लिये मैंने ऐसा किया है। बहन! याद रखना कि जोखों उठाये विना कोई बड़ा काम नहीं होता और न बहुत नाम होता है। दुर्बल वरसे व्याह करनेसे क्या सुख है? इससे क्वांरी रहना क्या बुरा है? जिसको हम वर कहती हैं वह वर यानी श्रेष्ठ ही होना चाहिये। तभी उस पर हमारा पूरा पूरा प्रेम हो सकता है। अगर हम यह समझें कि यह आदमी कमजोर है इससे कुछ नहीं हो सकता तब उस पर प्रेम कैसे हो सकता है? दूसरोंको-निर्बलोंको वर होनेका अधिकार नहीं है; क्योंकि वर माने पति, वर माने धनी, वर माने स्वामी, वर माने प्राण, वर माने प्यारा, वर माने सिरछत्र, वर माने माथेका मुकुट और वर माने स्त्रीका

सौभाग्य है। तब यह तो सोचो कि वर कैसा होना चाहिये। बहन! मैं अपना हृदय किसको दूं? अपना प्रेम किसको दूं? जो आदमी मेरे मनमान न हो उसको? नहीं नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता। क्योंकि हृदय और प्रेम जहां तहां फेंक देनेकी चीजें नहीं हैं और ये चीजें फेंकनेसे कहीं नहीं जातीं, इसलिये मैं अपने वरको कसौटी पर परखना चाहती हूँ। वह कसौटी पर पास हो जाय और खरा सोना निकले तभी मैं उसको अपने हृदयका हार बनाना चाहती हूँ। नहीं तो इससे विधवापन ही मेरे लिये अच्छा है। बहन! उनका पराक्रम सुनकर ही मैं उन पर आसक्त हुई और उनसे व्याह किया। जब व्याह करके उनकी अर्धाङ्गिनी बन गयी तब क्या उनका पराक्रम देखनेका मुझे हक नहीं है? और अपने सहवाससे मुझे उनमें पुरुषार्थ और बहादुरी नहीं बढ़ानी चाहिये? अगर यह न बढ़े तो मेरा उनसे व्याह होनेका फल क्या हुआ? दुनियाका मामूली विषयसुख तो कुत्ते बिल्ली भी भोगते हैं। वैसा विषयसुख भोगनेके लिये ही व्याह नहीं है। स्त्रियोंका व्याह इसलिये होता है कि वे अपने प्रेमके बलसे पुरुषोंमें पुरुषार्थ बढ़ा सकें, अपने आकर्षणसे पुरुषोंको ठीक रास्तेसे खींच सकें, अपनी अधीनताके बलसे पुरुषोंको स्नेहकी डोरीमें बांध सकें, अपनी सेवाके बलसे पुरुषोंको इस संसारमें ही स्वर्गका सुख दे सकें और अपने सगद्गुणोंके भयसे पुरुषोंकी अन्तरात्माको जगा सकें। इसी तरह पुरुष इसलिये

स्त्रियोंसे व्याह करते हैं कि वे अपनी स्त्रीकी इच्छा पूरी कर सकें, स्त्रीको अपने ही अन्दर परमात्माका दर्शन करा सकें, ऐसा समझ सकें कि स्त्री हमारा आधा अङ्ग है और स्त्रीको स्वर्गमें उड़नेके पंख दे सकें। पर यह सब कब होता है? जब पुरुषोंमें पतिपन हो, वरपन हो और स्त्रियोंमें स्त्रीपन हो, अर्द्धाङ्गिनीपन हो तभी ऐसा होता है। यह सब परस्परके स्नेहसे होता है और प्रथम स्नेह एक दूसरेके गुणसे प्रगट होता है। इसलिये एक दूसरेका गुण जैसे बने वैसे साफ साफ तौर पर जानना चाहिये। गुण जाने बिना भी स्नेह हो सकता है पर वह स्नेह तो कुछ और ही चीज है। सबके भाग्यमें वैसा स्नेह नहीं होता। वैसा स्नेह तो बड़े भाग्यवानोंमें ही होता है और ऐसे भाग्यवान विरले ही होते हैं। इसलिये हम लोगोंको तो गुणमेंसे उपजनेवाले स्नेह पर ही मुख्य भरोसा रखना चाहिये। और इसके लिये पति पत्नीको एक दूसरे के गुणकी कदर करना सीखना चाहिये। सो बहन! याद रखना कि मैंने अपने पतिको हैरान करने या मरवा डालनेके लिये सिंगोड़ीके भयानक वनमें केसरी सिंहका शिकार करने को नहीं भेजा है, बल्कि उनका यह पराक्रम देखकर मैं अपने मनमें जन्म भर खुश हुआ करूं और देश देशमें उनके पराक्रमकी कीर्त्ति फैले जिसे सुन सुनकर मुझे मानसिक सन्तोष मिले इसलिये तथा उनका प्रेम मुझ पर कितना है, वह मेरी कितनी खातिर कर सकते हैं और मैं उनका पराक्रम विकसित करनेमें

कुछ काम आ सकती हूं कि नहीं, यह जाननेके लिये मैंने प्रियतमको ऐसे भयङ्कर जोखोंके काममें डाला है। बहन! मैं कुछ पागल नहीं हूँ, मगर मेरे मनमें जो ऊंची अभिलाषाएं हैं वे मुझे ऐसा साहस करनेको उकसाती हैं और मुझे विश्वास दिलाती हैं कि ऐसे बड़े काममें मेरे प्रियतम अवश्य सफलता प्राप्त करेंगे। इसलिये इस विषयमें मुझे जरा भी फिक्र नहीं है और ईश्वर न करे उसमें कुछ खता नागा हो तो भी मैं उसको दैवकी इच्छा समझकर सह लेनेको तय्यार हूं। क्या सती क्षत्रियाणियोंका अपने पतिके साथ जल मरना कोई बड़ी बात है? नहीं बहन! नहीं, इसमें मुझे जरा भी कठिनाई नहीं पड़ेगी। इसलिये तुम मेरी कुछ भी फिक्र मत करना। बताओ और कुछ तुम्हें कहना है?

केसरीसिंहका केसरीका शिकार।

इधर राजकुमारी अपनी सखीसे बातचीत कर रही थी और उधर केसरीसिंह मार्गप्रदर्शकों सहित जङ्गलको रवाना हो चुका था। सिरोहीका जङ्गल बड़ा भयंकर था। उसमें गाड़ी या घोड़ा जानेका रास्ता नहीं था; बल्कि सिर झुकाकर, टेढ़े मेढ़े होकर, कपड़े बचा बचाकर, सिकुड़ सिकुड़ कर और ऊंचे नीचे होकर, सम्हल सम्हल कर चलना पड़ता था। वहां ऐसे सघन पेड़ लगे हुए थे कि कहीं कहीं तो सूर्यकी किरण भी नहीं पहुंच सकती थी; इससे कितनी ही जगह अन्धकार छाया रहता था और ठीक

ठीक यह भी नहीं मालूम होता था कि दिन है या रात। ऐसी बीहड़ झाड़ियोंमें पदपदर्गोंके साथ केसरीसिंह जाने लगा। वहां आजकलकी तरह मोटर दौड़ाते दौड़ाते जाने लायक रास्ता नहीं था। वह जङ्गल कैसा भयंकर था इसका ठीक ठीक अन्दाज भी आजकल हमलोग नहीं कर सकते; क्योंकि वैसा विकट जङ्गल आजकल हिन्दुस्थान भरमें कहीं नहीं है। इससे हम नहीं समझ सकते कि केसरीसिंहके समयमें सिरोहीका जङ्गल कैसा भयानक था। सिर्फ आर्योंके काव्यसे थोड़ा बहुत समझ सकें तो समझ सकें, नहीं तो उसको ठीक ठीक समझनेका प्रत्यक्ष साधन अब हमारे यहां नहीं है। ऐसे विकट जङ्गलमें तीन दिनतक पैदल चलकर तथा पेड़ोंपर रात बिताकर और बासी रोटी खाकर केसरीसिंह अन्तमें एक बड़े भारी तालाबके पास पहुंचा। उस तालाबमें पानी पीनेके लिये सब जानवर आते थे। वहीं एक बटके विशाल वृक्षपर केसरीसिंह चढ़ गया। जब वहां असल केसरी सिंह पानी पीने आया तब केसरीसिंहने उसको एक तीर मारा। सिंहने छलांग मारकर उस वृक्षको उखाड़ डाला। इस बीचमें केसरीसिंहने उसके सिरपर दूसरा तीर मारा और आप पेड़के साथ तालाबमें जा गिरा। फिर वहांसे निकलकर घायल झूमते हुए और मृत्युके पास पहुंचे हुए शेरके निकट जाकर भालेसे उसे बेध दिया। पहला तीर लगनेपर उस केसरीने जो भयंकर गर्जना की थी उससे सारा वन और उसके अन्दरके सब जन्तु दहल गये थे।

उस सिंहको मारनेमें केसरीसिंहको कितनी बड़ी कठिनाई पड़ी थी और उसके लिये उसने कितना बड़ा जोखों उठाया था इसका ठीक ठीक अनुमान हमलोग आजकल नहीं कर सकते। आजकल भी शेर बाघका शिकार होता है पर इसमें ध्यान रखने योग्य बात यह है कि एक तो पहलेके से भयंकर केसरी शेर ही आजकल हमारे देशमें नहीं हैं। इसका कारण यह है कि अब उनके रहने लायक जङ्गल नहीं है। दूसरे आजकलकी तरह ऊंचे दर्जेकी बलवती और एक मिनटमें कितनी ही बार फैर करनेवाली बन्दूकें उस समय नहीं थीं; सिर्फ तीरकमान और भालेसे ही उस समयवालोंको काम लेना पड़ता था और उसमें शारीरिक बलकी बहुत अधिक जरूरत थी। इसके सिवा आजकल बड़े आदमी लोग जो शेर इत्यादिका शिकार करते हैं वह एक तरहकी दिल्लगी है; क्योंकि इसके लिये उन्हें इतना सुबीता कर दिया जाता है कि चाहे तो एक बालक भी आसानीसे शेरको मार सकता है। इससे आजकलका शिकार शिकार नहीं, बल्कि पहले समयके क्षत्रियोंके लेखे तो बच्चोंका खेल सा लगता है। आज कलके शिकारमें शारीरिक बल और सच्ची बहादुरीकी कुछ बहुत जरूरत नहीं पड़ती; सिर्फ ऊपरी सामाग्रियोंकी सहायतासे ही और उसमें भी बड़ी ही आसानीसे शिकार हो सकता है, उसमें किसी तरहके भयानक जोखोंका खटका भी नहीं है। इसलिये आज कलके शिकारको देखकर हम केसरीसिंहकी बहादुरीको नहीं माप

सकते। ऐसा कहनेका कारण यह है कि शायद कोई कह बैठे कि एक शेर मारा तो केसरीसिंहने कौन बड़ी बहादुरी की। इस भ्रमको दूर करनेके लिये इतना लिख दिया है।

उस सिंहको उठाकर केसरीसिंह सिरोहीमें ले आया और जहां उतरा था उस रङ्गमहलके पास उसको डाल दिया। उस सिंहकी डरानेवाली बड़ी बड़ी गोल आंखें, उसकी मूछोंके लम्बे लम्बे सूई जैसे मोटे और कड़े बाल और बड़े बड़े हाथियोंको डरानेवाले उसके चेहरेको भयंकरता, पञ्जे के थपेड़से बड़े बड़े वृक्ष उखाड़ फेंकनेवाला और पंजेके झपटेसे जगतके किसी प्राणीको न छोड़नेवाला उसका बल देखकर राजकन्याको ऐसा भ्रम हुआ कि यह नरसिंहका अवतार तो नहीं है! उस सिंहका चेहरा विकराल नरसिंहके चेहरे जैसा भयङ्कर था और उस महाकाल समान सिरोहीके जङ्गलके राजा तथा जगतके सब जन्तुओंके राजाको उसकी पतिने बड़ी बहादुरीसे मारा और सो भी सिर्फ उसके कहनेसे। यह सोचकर राजकन्या गद्‌गद हो गयी और अपने प्यारे पतिके चरणोंमें लिपट गयी। उस समय उस दम्पतीका सुख अलौकिक था। परन्तु इसमें कुछ आश्चर्यकी बात नहीं थी; क्योंकि उस समय दोनोंकी मनकामनाएं पूरी हुई थीं। दोनों सुन्दर और चढ़ती जवानीवाले तथा उत्साही थे। दोनों इन्द्रिय निग्रह कर सकनेवाले तथा कर्त्तव्य समझकर पालने वाले थे और जीवनका उच्च उद्देश्य पूरा करनेके लिये जरूरत पड़ने पर अपने प्राणोंको न्योछावर कर सकनेवाले थे।

इतना ही नहीं, दोनों एक दूसरेको बहुत चाहते थे और एक दूसरेके सद्गुणकी कीमत समझते थे। इससे वे ऐसे महान् प्रसङ्गपर अलौकिक सुख भोगें और सारी जिन्दगी निश्चिन्त मनसे एक दूसरे पर विश्वास कर, एक दूसरेके गुणका आदर करते हुए इस संसारमें और इसी जीवनमें स्वर्गका सुख भोगें तथा ईश्वरको हृदयमें रखकर उसके नियमानुसार जीवनकी सार्थकता करें तो कुछ बड़ी बात नहीं है। ऐसे ही दम्पती ऐसा कर सकते है।

पुरुषोंका पुरुषार्थ स्त्रियोंके प्रेमके खेलनेके लिये एक सुन्दर खिलौना है।

बहनो! केसरीसिंहकी बात कहकर मैं तुमको यह समझाना चाहती हूं कि अगर हम चाहें तो पुरुषोंका पुरुषार्थ बढ़ा सकती हैं और उनसे कितने ही बड़े बड़े काम करा सकती हैं। हम ऐसी हैं। क्योंकि पुरुषोंका पुरुषार्थ स्त्रियोंके प्रेमके लिये खेलनेका एक सुन्दर खिलौना है और खिलौनेके साथ जैसे चाहें वैसे खेल सकती हैं। इसलिये अगर हममें हिम्मत हो, हममें बहादुरी हो, हममें उच्च श्रेणीकी चाह हो और हममें जिन्दगीको सार्थक करनेका जोश हो तो हम साधारण पुरुषोंसे भी बड़े बड़े काम करा सकती हैं, इसमें कुछ सन्देह नहीं। पर अफसोस यही है कि अब हमारी बहनोंमें हिम्मत नहीं है। इससे वे आप कोई अच्छा काम नहीं कर सकतीं

और अपने भाई, पुत्र, पति या पितासे भी कोई अच्छा काम नहीं करा सकतीं। अजी! उत्साह सहित दूसरोंसे काम कराना तो दूर रहा वे लोग जो अपनी इच्छासे कुछ अच्छे काम करते हैं उनको भी कितनी ही बहनें रोकती हैं।

स्त्रियां हिम्मतकी कमीके कारण पुरुषोंको आगे बढ़नेसे कैसे रोकती हैं ?

जैसे-किसी जवान विद्यार्थीको अपनी विद्या बढ़ानेके लिये युरोप, अमेरिका या जापान जाना है पर उसकी मा, बहन तथा पत्नी आदि प्रिय परिजन और उनमें भी खासकर स्त्री जरूर बाधा डालती है। इतना ही नहीं, स्त्रियां ऐसा अनुचित हठ करती हैं कि कितने ही लायक आदमियोंको विना कारण सिर्फ स्त्रियोंकी मूर्खतासे ऐसा मौका छोड़ देना पड़ता है। दूसरे, कितने ही लड़के बहुत अच्छी तरहसे अध्ययन कर सकनेवाले होते हैं और वे उसमें लगे रहें तो आगे जाकर नाम पैदा कर सकते हैं और देशकी सेवा कर सकते हैं पर संकीर्ण विचारोंके कारण उनकी माताएं तथा जगतके विषय सुखको ही बड़ा माननेवाली उनकी सासें और जवान बहुएं उनके अध्ययनमें विघ्न डालती हैं और अन्तमें उनका अध्ययन बन्द कराके उनको छोटी मोटी नौकरियों में फंसा देती हैं। ऐसा होनेसे आशा भरे बहादुर जवान ढीले ढाले, सुस्त और बड़ी अकल विना तथा बड़े तजरबेसे कोरे रह जाते हैं। यह क्यों? सिर्फ स्त्रियोंकी हिम्मतकी कमीके

कारण। अगर उनमें जरा ज्यादा हिम्मत हो तो उनके घरोंरे लड़के सुन्दर गुलाब और मोगरेकी कली की तरह खूब खिल सकते हैं, क्योंकि वे इस तरह खिलने योग्य हैं। पर खिलनेसे पहले ही मुरझा जाते हैं और इसमें दूसरा कोई कारण नहीं। सिर्फ स्त्रियोंकी मानसिक कमजोरीके कारण, थोड़ी हिम्मतकी कमीके कारण, थोड़े ज्ञानकी कमीके कारण और थोड़े समझकी कमीके कारण ऐसा होता है। स्त्रियां जैसे अध्ययन तथा विदेश गमनके बारेमें रुकावट डालती हैं वैसे ही समाज सुधारके विषयमें भी बहुत बाधा डालती हैं और इसीसे कितने ही तरहके सुधार हमारे देशमें जल्द नहीं हो सकते। जैसे कि कोई उत्साही जवान बालविवाहका विरोधी है, सारे संसारके साथ भ्रातृभाव रखनेकी इच्छावाला कोई जवान जातिबन्धनका विरोधी है और कोई दयालु मनुष्य विधवाविवाहके पक्षमें है और वह वैसा काम कर रहा है, उसके लिये लेख लिखता है, व्याख्यान देता है, चर्चा चलाता है और मण्डली बनाता है; पर जब घरमें आता है तब स्त्रियोंके सामने उसकी कुछ नहीं चलती; स्त्रियां इन सब अच्छी अच्छी तय्यारियोंको अपने हठके जोरसे हवामें उड़ा देती हैं। यह क्या कम दुःख है? इसी तरह स्वदेशी वस्तु व्यवहार करनेमें तथा राजनीतिक विषयोंमें कानूनसे इसे शामिल होनेमें भी स्त्रियां बहुत विघ्न डालती हैं। जैसे-कोई गृहस्थ यह निश्चय कर चुका है कि हम परदेशी चीज नहीं लेंगे। इसके अनुसार वह अपने लिये काम कर सकता

है पर स्त्रीके लिये नहीं कर सकता, क्योंकि देहातोंमें स्वदेशी शक्कर या खांड नहीं मिलती और स्त्रीको गुड़ खाना पसन्द नहीं है इससे विदेशी चीनी लेनी पड़ती है। मर्द अपने लिये स्वदेशी कपड़ा लेता है पर स्त्रीको स्वदेशी कपड़ा पसन्द नहीं और लड़कोंके लिये नयी नयी पोशाक सिलवानेको जैसा नफीस कपड़ा चाहिये वैसा कपड़ा भी स्वदेशी नहीं मिलता, इससे वे मुंह बिचकाकर और ऊधम मचाकर परदेशी कपड़ा लेती हैं। इस तरह हर एक बातमें स्त्रियां अड़ङ्गा लगाती हैं। इससे हमलोग उन्नति नहीं कर सकते और इसका कारण स्त्रियोंकी अज्ञानता तथा हिम्मत की कमाई है। अगर उनमें जरा अधिक हिम्मत हो तो वे कितने ही तुच्छ रिवाजोंका सामना कर सकती हैं। जैसे-मरनेके बाद महीनों मातम पुरसी करनेकी रीति। ऐसी छोटी छोटी बातोंमें भी लोकलाजके डरके कारण, स्त्रियां कुछ सुधार नहीं कर सकतीं। इसका कारण हिम्मतकी कमाई है। इसलिये अगर हमको अपना, अपने बालकोंका और अपने देशका कल्याण करना है तो हिम्मत बढ़ानेका उपाय करना चाहिये। सिरोहीकी राजकुमारीके समान अपने पतिसे भारी साहस कराना बिलफेल न बनसके तो फिकर नहीं, हम अपने पति, पुत्र तथा भाईको ऊंचे उद्देश्योंमें और उनके शुभ अनुष्ठानोंमें रुकावट न डालने की हिम्मत रखें तो यह भी बहुत समझा जायगा। क्योंकि कुछ न होनेसे कुछ भी होना अच्छा ही है। किन्तु

सच्ची बात तो यह है कि जब पुरुषोंमें मौजूद महान पुरुषार्थ को स्त्रियां बढ़ा सकें तभी उनके स्त्रीत्व को सार्थकता है। और मैं प्रार्थना करती हूँ कि भगवान ऐसा अवसर हमारी बहनों को जल्द दे। यह कह सुन्दरबालाने अपना व्याख्यान पुरा किया।

स्त्रियां कितना बड़ा काम कर सकतीं हैं यह उनको जानना चाहिये।

इसके बाद सभानेत्रीने कहा कि आजका व्याख्यान और उसका दृष्टान्त बहुत ऊंचे दरजेका है। बहुतेरी बहनें यही सोचती हैं कि हमसे और क्या हो सकता है? स्त्रियां और क्या कर सकती हैं? चौका बर्तन करें, रसोई बनावें और लड़के पालें, बस। इससे ज्यादा और क्या होगा? और कितनी ही बेचारी तो यह भी कहती हैं कि स्त्रियोंका जन्म भी कोई जन्म है? हम तो घरकी छछूंदर कहलाती हैं। हमसे और क्या होगा? जरा कुछ बोलने जाती हैं तो मर्द ओठ मल देते हैं और तमाचा लगा देते हैं, इससे चुप बैठी रोया करती हैं। हमारा और जोर ही क्या है! रोना ही हमारा जोर है। और दूसरा हमसे क्या बनेगा? कितनी ही स्त्रियों-को ऐसी समझ है। इसके विरुद्ध सुन्दरबाला हमसे यह कहती हैं कि पुरुषोंका पुरुषार्थ तो स्त्रियोंके प्रेमका एक खिलौना मात्र है। इसलिये स्त्रियां अपने प्रेमके बलसे पुरुषों को चाहे जैसे खेला सकती हैं और अपनी हथेली पर नचा-सकती हैं; इतना ही नहीं बल्कि पुरुषोंसे स्त्रियां महान

कुछ आश्चर्य नहीं है। गत सात वर्षोंमें मधुरी मैया ने परमार्थ के जो जो काम किये हैं उनकी एक छोटी सी और अधूरी सूची आप लोगोंसे कहनेकी बड़ी इच्छा होती है और मैं इस स्वाभाविक उमङ्गको रोक नहीं सकती। आपलोगोंने कितनी ही वार मधुरी मैयाकी कितनी ही बातें सुनी होंगी तो भी मुझे कहने दीजिये। इन्होंने अपने मनोरंजक प्रेमभरे भाषणोंसे लोगोंको जगाकर तथा अपना जोर लगाकर अलग अलग आठ शहरोंमें वालविधवाओंके पढ़ने तथा शिल्पकला सीखनेके आश्रम खोले हैं। जुदे जुदे पांच गांवोंमें इनकी मिहनत और मददसे स्त्रियोंको सीना पिरोना, गाना वजाना तथा पढ़ना सिखाने के लिये और धर्मका उपदेश देनेके लिये पांच दुपहरिया स्कूल खुले हैं। निराधार अनाथ बालकोंके लिये जुदे जुदे स्थानोंपर मधुरी मैयाकी तरफसे तीन अनाथ आश्रम जारी हैं। इसके सिवा लूली लंगड़ी, बहरी गूंगी, अंधी वगैरह अपंग बालिकाओंका एक स्कूल इन्होंने हालमें खोला है। इतना ही नहीं, स्त्रियोंके उपयोगी एक मासिक पत्र इनकी तरफसे दो वर्षसे निकलता है जो स्त्रियों के द्वारा ही चलता है। इसके सिवा हर साल सैकड़ों लाचार दुखिया, निराधार तथा सहायता पाने योग्य रोगियोंको यह धर्मार्थ अस्पतालोंमें भेजती हैं; कितने ही भिखारियों को भीख मागनेसे हटाकर रोजगार धंधेमें लगा देती हैं; सैकड़ों मा वापोंको उत्साह देकर उनके बालकोंको विद्यालय भिजवाती हैं और कितने ही विद्यार्थियोंको आगे पढ़नेके लिये

ज़रूरतके समय स्वास्थ्यप्रद दिलाती हैं मधुरी मैयामें कुछ ऐसा मोहनी मंत्र है कि यह जहां जाती हैं वहांका भगड़ा मिट जाता है और भ्रातृभाव आजाता है। जैसे— इनके सत्संग और उपदेशसे कितनी ही सास बहुओंका, पति पत्नीका, बाप बेटोंका, भाई भाईका, गुरु चेलोंका और मालिक नौकरका भगड़ा मिट जाता है और आश्चर्य यह है कि इतने बड़े बड़े मामले न जाने इनके पास कहांसे आजाते हैं। ऐसी एक देवी आज हमारी सभामें आयी हैं, हमारा धन्यभाग्य है और मुझे विश्वास है कि हमसब भी इनके इस उन्नत जीवनके प्रत्यक्ष दृष्टान्तसे कितनी ही नयी नयी बातें सीख सकेंगी और अपनी जिन्दगी सुधार सकेंगी। इसलिये अब मैं देवी मधुरी मैया से अपना जीवनचरित्र कह सुनाने की विनती करती हूं।

अपने सब भाई बहनोंकी मददसे ही काम किया जासकता है।

इसके बाद देवी मधुरी मैयाने कहा कि प्यारी बहनो! प्रमुख महिला महाशयाने मेरे विषयमें जो जो बातें आप लोगोंसे कही है उनके विषयमें मुझे सिर्फ इतना ही कहना है कि इस में मेरी कुछ भी बहादुरी नहीं है। मैं तो सिर्फ दो जुदी जुदी जंजीरोंको जोड़ देनेका काम करती हूं; इससे बढ़कर मैं कुछ भी नहीं कर सकती। प्रमुख देवीने कहा है कि कौन जाने इतने बड़े बड़े मामले इनके पास कहांसे आते हैं, इसका इन्हें आश्चर्य है; इसके जवाबमें मुझे बता देना चाहिये कि

मैं रातदिन परोपकारके ही विचार किया करती हूँ क्योंकि ईश्वरकी कृपासे अब मुझे अपने लिये कुछ विचार नहीं करना पड़ता। मनुष्यको धन चाहिये, इन्द्रियसुख चाहिये और मान चाहिये तथा कुटुम्ब परिवारका सुख चाहिये; पर परमात्माकी कृपासे अब मुझे कुटुम्बके सुखकी इच्छा नहीं है क्योंकि मेरा छोटा मोटा कुटुम्ब नष्ट होगया और उसके बदले सारा देश मेरा कुटुम्ब होगया है। अब मुझे इन्द्रियोंके सुखकी लालसा नहीं है; क्योंकि इस विषयमें भी सुख दुःखकी कितनी ही घटनाएं मेरे ऊपर बीत चुकी हैं, यह वृत्ति भी मुझ पर जोर नहीं कर सकती इससे अब मुझको वैसे विचार भी नहीं करने पड़ते। धन तथा मान मुझे जितना चाहिये उससे अधिक मिलता है। मैं जहां जाती हूं वहां सब लोग मेरा आदरमान करते हैं और जो अच्छे से अच्छे आदमी हैं वे मुझसे मिलनेकी इच्छा रखते हैं। इससे इस किस्मकी इच्छा भी अब मेरे मनमें नहीं रही। इस कारण धन और मानके ओछे विचारोंमें मुझे वक्त खोना नहीं पड़ता। अब तो मेरा एक ही विचार बाकी रह गया है और वह यह कि मेरा कर्त्तव्य क्या है; परमकृपालु परमात्माने मुझे किस लिये यह जिन्दगी दी है; उत्तम मनुष्यजन्म और उसमें भी पवित्र प्रेममय स्त्रीका जीवन मुझे किस लिये दिया गया है। इस प्रश्नका विचार करना ही अब मेरा मुख्य काम है और जब मैं इस पर विचार करती हूं तब ईश्वरके बालकोंकी सेवा करनेके बड़े कामके सिवा दूसरा

कोई काम मुझे नहीं सूझता और सेवाके आनन्दके सामने जगतके मोहका या जगतके वैभवका कुछ भी आनन्द मुझे किसी गिनतीमें नहीं लगता। इससे मैं रातदिन परमार्थके ही विचार किया करती हूं और इसी ख्यालमें तथा ऐसे काम करनेमें ही रची पची रहती हूं कि मेरी जिन्दगीका बड़ेसे बड़ा भाग भाई बहनोंकी सेवामें कैसे लगे और उनकी अधिकाधिक भलाई कैसे हो। इस वास्ते मैं जहां जाती हूं और जिनसे मिलती हूं उनसे इसी प्रकारकी बातें होती है। इसमे दया करने लायक और काम करने लायक मामले मुझे मिलजाते हैं। इस प्रकार मेरा अपना किसी तरहका भीतरी स्वार्थ न होने से तथा परमार्थमें जिन्दगी अर्पण करदेने से देश परदेशके सब भाई बहनोंमें कुछ मेरे मित्र, कुछ मेरे सुरब्बी, कुछ मेरे स्नेही और कुछ मेरे बालक बन गये हैं। इससे मेरे आस पास मेरी मदद करने और मेरे विचारोंको फैलाने वाला बहुत बड़ा मंडल तय्यार हो गया है। उस मंडलकी मददसे मैं कितने ही काम कर सकती हूं। इसमें मेरी खास अपनी कुछ बलिहारी नहीं है बल्कि सब भाई बहनोंकी मददसे ही मैं कुछ कुछ कर सकती हूं। यथा—

अपना धर्म बदले हुए भाइयोंको फिरसे शुद्ध करना चाहिये।

एक सप्ताहसे मैं यहां आयी हूं। जिस दिन आयी उसी दिन

आर्य्यसमाजका वार्षिक सम्मेलन था, उसमें मैं गयी थी। वहां मुझे बोलनेके लिये कहा गया। मैंने दूसरे धर्ममें जाते हुए अपने भाई बहनोंको फिरसे शुद्ध करके अपनेमें लेनेके बारेमें भाषण किया और दैव इच्छासे एक क्रस्तान बने ब्राह्मण विद्यार्थीके जीमें यह बात चुभ गयी। वह दूसरे दिन मेरे डेरे पर आया और बोला कि अगर तुम मुझे पवित्र करो तो मैं प्रायश्चित्त करनेको तय्यार हूं। मैंने यह बात आर्य्यसमाजके मंत्रीसे कही। उन्होंने वहांके लोगोंसे इसका प्रबन्ध किया और उस रविवारको आर्य्यसमाजमें उसको शुद्ध करनेकी क्रिया की गयी। उस समय वहां भारी सभा जुटी थी और भिन्न भिन्न

उस समय गृहस्थ भी वहां उपस्थित थे। उन्होंने अच्छी रकम दीं। उसी समय साढ़े तीन हजारका चन्दा हो गया और उससे दो उपदेशक रखनेकी सलाह ठहरी। उपदेशक पसन्द करनेका भार मुझ पर डाला गया। मैंने विश्वास योग्य बहुत ही लायक और दृढ़ विचारके गरीब विद्वानोंको यह काम सौंपा। अब देखिये कि इसमें मेरा क्या है। सच पूछिये तो मेरा कुछ नहीं है। यहां तो सिर्फ "हलवाईकी दुकान और साईं बाबाका फातहा" जैसा मामला है, क्योंकि इसके लिये मैंने खास अपनी मिहनतसे कुछ बन्दोबस्त नहीं किया, अपने घरसे पैसा नहीं दिया-मेरे पास पैसा है ही कहां? मैं आप सरीखे कुछ सज्जनों पर पेटका भार झोंककर अपना गुजारा करती हूं और इसमें मुझे कुछ विशेष बुद्धि भी लगानी नहीं पड़ी। तो भी यह किशा हुआ विद्यार्थी मेरा उपकार माना करता है; उसके संगी साथी तथा अखबार वाले कहते हैं कि यह फंड मेरे कारणसे हुआ। और ये दोनों उपदेशक पण्डित भी यह न सोच कर कि उनको अपनी योग्यता और अनुकूल संयोगके कारण नौकरी मिली—मेरा उपकार माना करते हैं और मेरा बखान किया करते हैं। पर बहनो! आप जरा विचार करके देखें कि इसमें मेरी क्या करतूत है। मेरी कुछ भी बहादुरी नहीं है। सिर्फ इर्दगिर्दके अच्छे संयोग और अच्छे मित्र ही सारा काम करते हैं और अगुओंके लिये उनके दिलमें जो इज्जत है, उनके ऊपर जो सद्भाव है, उनमें नम्रता से झुक पड़ने और दूसरों को इज्जत करनेकी जो स्वाभाविक

रुचि है तथा प्रशंसित प्रसिद्ध और सच्चे दिलसे काम लेनेवाले अगुओंके लिये उनमें जो एक प्रकारका मोह होता है उसके कारण बड़ोंके तेजमें प्रकाशित होकर तथा उनके पीछे चल कर वे अपना प्रेम दिखाते हैं और अगुओंके सिर यशकी पगड़ी बांधते हैं पर असलमें काम करनेवाले वे स्वयं होते हैं और ऐसे अच्छे अच्छे मण्डलोंकी मददसे ही अगुए लोग कुछ शुभ काम कर सकते हैं। इस बातको अगर खूब अच्छी तरह बिचारें तो अगुओंका बहुत कुछ अभिमान घट जाय ; इसमें जरा भी शक नहीं। अब मैं अपने अनुभवमें आयी हुई और इसी सप्ताहमें बीती हुई कुछ घटनाएं आप लोगोंसे कहूंगी।

विद्यार्थियोंको इनाम देकर उत्साहित करनेकी जरूरत।

गत रविवारको थियासोफिकल सोसाइटीमें हिन्दू धर्मकी परीक्षामें पास हुए विद्यार्थियोंको इनाम बांटनेका जलसा था। उसमें सभापतिके निमन्त्रणसे मैं गयी थी और इनाम बांटनेके लिये जो महाशय वहां पधारनेवाले थे वह बहुत जरूरी काम पड़ जानेसे नहीं आसके, इससे इनाम देनेका काम मुझे सौंपा गया। उस वक्त मैंने मौकेका भाषण किया और इनाम लेनेवाले विद्यार्थियोंको कुछ नेक सलाह दी थी। उस सलाहको बात वहां बैठे हुए एक गृहस्थको बहुत पसन्द आयी, उसने मेरा वह भाषण पुस्तकाकार लिखवा कर उसकी पांच हजार प्रतियां छपवायीं और चार दिनके अन्दर हजारों विद्यार्थियोंको बांटीं। इसके सिवा इनाम देनेसे विद्यार्थी

कितनी उन्नति करते है इस विषयको मैंने अच्छी तरह आलोचना की थी। एक सेठके मगजमें यह बात धस गयी। उसने खुश होकर धर्मशिक्षाके लिये इनाम बांटनेके फण्डमें पांच सौ रुपये चन्दा लिखा। इस पर थियासोफीकी तरफसे धर्मशिक्षा देनेवाली कमेटीके नेता मेरा उपकार मानने लगे, विद्यार्थियोंको उपयोगी मुफ्त पुस्तक मिलीं इससे वे भी मेरा उपकार मानने लगे और जिस आदमीने पुस्तक छपवानेमें तथा फण्डमें रुपया लगाया उसको भी बहुत कीर्त्ति मिली और उसके रुपयेका सदुपयोग हुआ इससे वह भी मेरा एहसान मानने लगा। पर बहनो! आप विचार करें कि इसमें मेरा क्या है? "पकायी रोटी तोड़ियाना" या और कुछ?

शराव पीनेकी बुराईसे रोकनेके लिये क्या उपाय करना चाहिये?

इसके बाद गत शनिवारको नशा निषेधक मण्डलकी सभा थी, वहां मैं गयी। वहां भी ईश्वरकी कृपासे बड़ा अच्छा काम हुआ। शराव न पीनेके लिये विलायतमें जो बड़ा आन्दोलन हो रहा है उसका खुलासा विवरण एक अंगरेज सज्जनने कह सुनाया। यह हाल जानने योग्य था खास कर शराबसे होने वाली खराबियां लोगोंको प्रत्यक्ष दिखानेके लिये चित्र तथा बायस्कोप आदिसे जो फायदा उठाया जाता है और उसका जो सचोट असर होता है वह मेरे मनमें बैठ गया। इस पर मैंने खास जोर देकर विवेचन किया तथा अपनी जान पहचानकी कई गृहस्थोंको यह बात खास तौर पर समझायी जिससे एक सज्जन

पर उसका बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा। उसने अपने देशके गरीबोंमें बढ़ता हुआ दारूका प्रचार रोकनेके लिये विलायती डाक्टरोंकी राय बतानेवाली पुस्तकें मुफ्त बांटनेको पांच वर्ष तक हर साल तीनसौ रुपये देना स्वीकार किया। एक पुस्तक छप रही है जो दो चार दिनमें प्रकाशित होगी। दारूसे कलेजे पर होने वाला बुरा असर दिखानेवाले आयस्कोपके चित्र तथा शराबियोंकी पहली हालत, शराब पीनेके बादकी हालत और वर्षोंके नशेबाजकी हालतके चित्रोंकी पोथी छपवाने के लिये एक गृहस्थने दो हजार रुपये देना किया है। इससे इस विभागका काम जारी करनेकी तय्यारी भी हो गयी है और उसमें कई चुने हुए आदमी लगा दिये गये हैं। तीन चार नये चितेरोंको उत्साह देनेके लिये इस विभागमें चित्र बनानेका काम सौंपा गया है। इन चित्रोंका विषय समझाने लायक और उस पर आवश्यकतानुसार देहाती लोगोंमें व्याख्यान देनेके तीन आदमियोंको चुनकर उपदेशकका काम दियागया है। एक अच्छे लेखकको इस विषयकी अंगरेजी पुस्तकोंका सरल देश भाषामें अनुवाद करनेका काम सौंपा गया है। यह सब काम देखकर अखबार वाले तथा नयी रुचिके कितने ही स्त्री पुरुष मेरा बखान करते हैं, नशा निषेधक मंडलवाले मेरा एहसान मानते हैं और जिन जिन आदमियोंको इस विषयका काम मिला है वे सभी खासकर मेरी ही ओर देखते हैं। पर बहनो! मैं आपलोगोंसे पूछती हूं कि इसमें मेरा क्या है? और मैंने कौन बड़ी बात की है?

विधवा विवाहके लिये क्या उपाय करना चाहिये ?

बहनो! इसी तरह गत गुरुवारको विधवा विवाह-भवनमें एक बालविधवा युवती ब्राह्मणीका पुनर्विवाह एक शिक्षित गृहस्थसे हुआ। उस जलसेमें मैं गयी थी और वहां विधवा विवाहकी आवश्यकता पर मैंने एक समयोचित छोटा सा व्याख्यान दिया। उसमें मैं कुछ शब्द ऐसी करुणाजनक और असरकारक रीतिसे कह गयी कि सुनकर वहां बैठे हुए कितने ही स्त्री पुरुषोंकी आंखोंमें आंसू आगये और विधवाओं के प्रति उनका चित्त करुणार्द्र हो आया। एक युवती विधवा सेठानीने मुझसे एकान्तमें पूछा कि हमलोगोंमें विधवा विवाह फैलानेका कोई उपाय है? इसकी अब खास जरूरत है, क्योंकि अभीतक जोर शोरसे विधवा विवाह नहीं होता। कभी कभी दो चार महीनोंमें एकाध विधवा विवाह हो जाता है, इससे विधवाओंका दुःख दूर नहीं होनेका। इसलिये इस कामको जोर शोरसे जारी करनेके लिये कुछ उपायोंकी जरूरत है और इसका कोई प्रभावशाली सुगम रास्ता बताओ तो मैं इसके लिये दस पांच हजार रुपये खर्चनेको तयार हूं। यह सुनकर मैंने कहा कि मैं बड़ी खुशीसे उपाय बताऊंगी। इसका उपाय बहुत सहज है और वह यह है कि विधवा विवाह न करनेसे जो जो भयानक खराबियां होती हैं उनका सचा हाल हर एक आदमीके कानोंतक पहुंचाना चाहिये। विधवा विवाह न करनेसे कितनी जवान स्त्रियां बिना कारण बिलख बिलख कर दिन काटती हैं और उनकी जिन्दगी

किस तरह व्यर्थ जाती है यह बात अच्छी तरह लोगोंको समझाना चाहिये। हमारे देशमें ऊंचे वर्णकी कितनी अधिक विधवाएं हैं और उनमें आठ, दस, बारह, पन्द्रह और बीस वर्षकी उमरकी बेवाएं कितनी ज्यादा हैं, उनकी संख्या मनुष्यगणनाके हिसाबसे लोगोंको बताना चाहिये और ऐसा प्रयत्न सिर्फ विधवा विवाह भवनके अन्दर ही नहीं होना चाहिये और थोड़ेसे आदमियों को सुनाकर ही बस नहीं कर देना चाहिये। जो विद्वान इस विषयका लाभ अलाभ समझते हैं सिर्फ उन्हींको सभामें ऐसे व्याख्यान देते रहनेसे कुछ विशेष फायदा नहीं है; देशकी सारी खलकतको इस गूढ़ प्रश्नका यथार्थ भयङ्कर स्वरूप दिखाना चाहिये, तभी कुछ अच्छा फल हो सकता है। इतना ही नहीं बल्कि हर एक विधवाके कानमें यह बात डाल देना चाहिये कि अगर तू चाहे तो अपनी राजी खुशीसे दुबारा ब्याह कर सकती है, इसमें कोई हितकुटुम्ब तुझे नहीं रोक सकता, कानून तेरी मददमें है। ऐसा उपाय करना चाहिये कि यह बात हर एक बालविधवाके कानोंमें पड़े। इसके साथ साथ दस दस बीस बीस कोसपर बड़े बड़े शहरोंमें विधवा विवाह सोसाइटी की तरफसे ऐसी मंडलियां बनानी चाहियें जो विधवाविवाह करनेकी इच्छा रखनेवाले स्त्री पुरुषोंकी उचित सहायता दें और उन्हें अपने पास रखकर अपने मकान पर सार्वजनिक उत्सव करके उनका दुबारा ब्याह कर दे। अगर दुबारा ब्याह करनेकी इच्छा रखने वाली किसी बाल विधवाको अच्छा बर न मिलता हो तो विज्ञापन आदिसे ढूंढ़

टे और किसी पुरुषको दुबारा व्याह करनेके लिये योग्य विधवा न मिलती हो तो उसे मिला दे,इस प्रकारकी मण्डलियां स्थापित करनी चाहिये। यह सब हो तो थोड़े वर्षों के अन्दर हजारों स्त्री पुरुष सुखी हो सकते हैं। जो बहनें रोने विलखने तथा लम्बी सांसें लेने में ही मकानकी अंधेरी कोठरीमें जिन्दगी गंवाया करती हैं और लम्बी जिन्दगीको जान बूझकर छोटी बना डालती हैं वे हजारों बहनें और हजारों भाई सुखी हों और अंधेरे में पड़े रहने तथा निठल्ला बैठनेके बदले प्रकाशमें आवें तथा उद्योगी हों। इस प्रकार समझाने से उस सेठानीने इस काम के लिये दस हजार रुपये देना किया है। यह रकम किस तरह खर्च की जाय और इसके लिये क्या बन्दोबस्त किया जाय इसपर विचार करने के लिये विधवाविवाह के अगुओंकी एक बड़ी सभा अगले सप्ताह होने वाली है।

एक समय ऐसा भी था जब विधवा विवाह का नाम लेने वालेको भी प्रायश्चित्त करना पड़ता था।

इसके बाद मैं जिस गृहस्थ के घर उतरी थी वहां रातके आठ बजे गयी। इससे पहले उस घरके मालिक मालकिन दोनों मेरे उस दिनके व्याख्यान की बात किसी और आदमी की जबानी सुन चुके थे। वे मुझ से चिढ़ गये क्योंकि वे दोनों विधवाविवाह के बड़े विरोधी थे। उन्होंने मुझसे कहा कि यह तुमने क्या किया? तुम ऐसी समझदार, ऐसी चतुर होकर, ऐसी पवित्र और ज्ञानी

विधवाविवाह की बात करती हो, यह क्या तुम्हारे मुंह से शोभा देती है? आश्चर्य! आश्चर्य!! हम तो तुम्हारे लिये न जानें क्या क्या सोचते थे पर यह बात सुनकर तो उलटे हमारा जी दुखी हो गया। तुम्हें यह क्या सूझा? तुम्हारी मति ऐसी क्यों फिर गयी? तुम्हारी खातिर लाचारी है नहीं तो और कोई आदमी ऐसे ख्यालका होता तो हम उसको अपने घरमें पैर नहीं रखने देते।

बहनो! यह तुमलोगोंको बहुत अपमान सा लगेगा और तुमलोग सोचोगी कि मधुरी मैया जैसे आदमीको ऐसा कह दिया। पर उस संकीर्ण विचारवाले बूढ़े बेदर्दी सेठका मुझे ऐसा कह देना कोई आश्चर्य की बात नहीं है वह तो उलटे इसमें अपनी बहादुरी समझता है। और मुझे ऐसा ऐसी बातें सह लेनेकी टेव पड़ गयी है। कोई भारी काम करनेमें ऐसा ऐसा कितना ही अपमान सहना पड़ता है। इसमें कोई नयी बात नहीं है, इसको मैं खूब समझती हूँ। सारी दुनिया हमारे विचारसे थोड़े मिलेगी? मतभेद तो होता ही है और जहां मतभेद होता है वहां किसीका न किसीका चित्त दुखता ही है और जिसका चित्त दुखता है वह कडुआ वचन भी कह देता है। इसमें कोई नयी बात नहीं है। यह सब सहनेका अभ्यास मैंने पहलेसे ही कर लिया है। इसलिये इसका मुझे कुछ बुरा नहीं लगा। मैंने सेठ मेटानी से कहा कि विधवाविवाह के बारेमें आपका जैसा विचार है और इससे आपको जैसी घृणा है उससे भी अधिक घृणा पहले के महान पवित्र ऋषियोंको थी। उनके

सामने जो कोई भुल चूकसे भी विधवाविवाहका बात करता उससे वे बिगड़ जाते और कहते—विधवाविवाह! अरे विधवा विवाह! यह शब्द क्यों कहा? यह शब्द कहनेके लिये प्रायश्चित्त करना चाहिये। जहां देवविवाह है, जहां विवाहका यज्ञ होता है वहां फिर दुबारा व्याह कैसा? उनको विधवा विवाह का ख्याल भी नहीं हो सकता था, क्योंकि उनकी उत्तम भावनाओंसे और उनके सृष्टि के नियमानुसार तथा उनके प्रभुपरायण जीवनमें इस किस्मके विचारोंके लिये अवसर ही नहीं था, इससे उस समय जब कोई "विधवा विवाह" शब्द सिर्फ मुंहसे कह देता था तब भी वे बहुत बड़ा अपमान मानते थे और कहनेवालेको नीचसे नीच समझते थे; इतना ही नहीं बल्कि इस बड़ोसे बड़ी गालीके लिए, इस भारीसे भारी अपमानके लिये जरूरत पड़नेपर अपना प्राण देनेके लिये भी तय्यार हो जाते थे। वे विवाहको यज्ञ समझते थे, इससे यज्ञ करते समय यज्ञकुण्ड को भ्रष्ट करनेवाले राक्षसोंको मारडालनेमें उन्हें जैसे दया नहीं आती थी वैसे ही व्याहका यज्ञ भंग करनेवाले, व्याह का यज्ञ अपवित्र करनेवाले पापियोंके प्राण लेने या उन्हें शाप देनेमें भी कुछ दया नहीं आती थी। वे सोचते थे कि भगवान के लिये जो सुन्दर मन्दिर बना है उसमें कसाईखाना होना किस कामका? इससे तो यही बेहतर है कि यह मन्दिर जड़से खोद डाला जाय। ऐसे विचारों के कारण ही ये पवित्र स्त्रियोंको सती होनेकी अनुमति देते थे पर [illegible] ख्याल उनके दिलमें घुसने नहीं देते थे।

व्याहका यज्ञ भंग करके भ्रष्ट जीवन बिताने और अनन्त कालका नर्कवास [illegible] देनेकी अपेक्षा पवित्र रह-कर, उत्तम भावनायें रखकर, धर्मपरायण जीवन बिताते हुए मर जानेमें वे अधिक कल्याण समझते थे। इसीसे यज्ञकी रक्षाके लिये विश्वामित्र ऋषि श्रीरामको बुलाने गये थे और श्रीरामने अपने गुरु वशिष्ट महाराजकी आज्ञासे यज्ञको अपवित्र करनेवाले—यज्ञ भंग करनेवाले राक्षसोंको ढूंढ ढूंढ कर मारा था। क्या राममें, विश्वामित्रमें या वशिष्ट ऋषिमें इन लोगोंसे कुछ कम दया थी? नहीं वे दयाके अवतार होते थे; पर उन्होंने देखा कि यज्ञ भंग करनेसे दुनिया में जितना बड़ा नुकसान होता है उतना नुकसान कुछ थोड़ेसे अधम वृत्तिके राक्षसोंको मारडालनेसे नहीं होता, इसीसे यज्ञकी रक्षाके लिये उन महात्माओंने राक्षसोंको मरवाया था। क्योंकि उदार मनसे और ऊंची भावनासे भगवानके निमित्त जो महान यज्ञ होता है उसका असर सारे देश पर तथा समस्त प्रजापर पड़ता है। ऐसे महायज्ञमें जो कोई जान बूझकर विघ्न डालता है उसका नाश होता है और ऐसा होना ही चाहिये।

सेठ जी! देवयज्ञको अपवित्र करनेके लिये जैसे रामजीने राक्षसोंको मारा वैसे ही व्याहके यज्ञमें अपवित्रता लानेवाले, अर्थात् विधवाविवाहकी बात कहनेवाले महा-राज वेणुको पवित्र ब्राह्मणोंने जान बूझकर मार डाला था। ब्राह्मणोंका यह काम उस समय अनुचित नहीं समझा ; उलटे सराहा गया। श्रीमद्भागवतमें वेणराजाकी

उतारें। मालाजी! अभी नहीं [illegible] [illegible] तो न करो? इसमें कुछ [illegible] करेगा। तुम्हारा जैसा [illegible] भी विधवाविवाह की बात करे तो फिर भी [illegible]।

आजकलके जमानेमें विधवा विवाह एक प्रकारका आशीर्वाद है।

यह सुनकर मैंने कहा—सेठ जी! यह तो सिर्फ एकतरफकी बात हुई, देखिये अब दूसरी तरफकी बात तो देखिये! आप एक ही तरफ देखकर विचार बांधते हैं और दूसरी तरफ देखनेकी परवा नहीं करते पर हम से ऐसा नहीं हो सकता। हमें तो प्रजाके हितके हर एक मुख्य प्रश्नको दोनों बगल देखना चाहिये और उनको अलग अलग पलड़ेमें रखकर तौलना चाहिये। जो पलड़ा भारी हो उसी के पक्षमें हमको रहना चाहिये। क्योंकि बिना विचारे जो मत बांध लिया गया है उसके हम गुलाम नहीं हैं, हम किसी रिवाज के गुलाम नहीं हैं, किसीसे जो कुछ सुन लिया उसके हम गुलाम नहीं हैं और न हम ऐसे हैं कि सच्ची बातमें भी हठ करके इनकार करें और उसीमें चतुराई समझें; बल्कि हम तो सत्यको चाहनेवाले हैं! इसलिये साफ तौर पर अफसोस हुए करते कहना चाहिये कि सेठ जी! अब जमाना बदल गया है। अधिक क्या कहूं? भगवान कुशल करे नहीं तो हमलोगोंकी हालत आजकल ऐसी बिगड़ गयी है कि कुछ कहने लायक नहीं। इसलिये जिस मुंहसे पहले पान खाया है उस मुंहसे अब कोयला खाना पड़ेगा

और कहना पड़ेगा कि जैसे पहले समयमें विधवाविवाह बहुत खराब शब्द समझा जाता था और यह शब्द बोलने वालेको प्रायश्चित्त करना पड़ता था वैसे आजके जमानेमें विधवाविवाह दयाका शब्द गिना जाता है और विधवा विवाह करना उचित नहीं ऐसा कहनेवालोंको प्रायश्चित्त करना चाहिये। पहले समयमें 'विधवाविवाह' एक बड़ी भारी गाली के बराबर था पर अब तो इस कलियुगमें, इस भरकोके जमानेमें, एक आशीर्वाद तुल्य हो गया है। आज कलके जमानेमें प्रेमका व्याह नहीं होता, स्वयंवरका व्याह नहीं होता, बलकि स्वार्थका व्याह होता है, अपना कर्त्तव्य समझ कर और वरकन्याकी रुचि देखकर व्याह नहीं किया जाता; बलकि पुतले पुतलीका व्याह किया जाता है। इतना ही नहीं जैसे गाय भैंस का और घोड़े गधेका बदला बदला होता है, वैसे लड़कियोंका बदला बदला होता है। वहन देकर जोरू लोजाती है, कितनी ही जातियोंमें लड़कियोंकी बिक्री होती है, कितनी ही जातियों में पुरुषोंकी बिक्री होती है, कितनी ही जातियोंमें सिर्फ ऊंचा कुल देखा जाता है और ऊंचे कुलके कारण हो एकसे अधिक स्त्रियां व्याही जाती हैं। ऐसे ऐसे कारणोंसे, छोटे छोटे समुदायके कारण, शिक्षाकी कचाईके कारण, जाति पांतिके रिवाज के कारण और ऐसे ही दूसरे कई कारणोंसे हर जगह बेमेल व्याह होता है। जैसे—कहीं रूपका बेमेल होता है, कहीं गुण का बेमेल होता है, कहीं अवस्थाका बेमेल होता है, कहीं तन्दुरुस्तीकी गड़बड़ होती है और कहीं धर्मकी गड़बड़

उतारें। माताजी! जहां तहां ऐसे ही उपदेश क्यों न करो? इससे कुछ धर्म रहेगा। तुम्हारी जैसी स्त्री भी विधवाविवाह की बात करे तो फिर हो चुका!

आजकलके जमानेमें विधवा विवाह एक प्रकारका आशीर्वाद है।

यह सुनकर मैंने कहा—सेठ जी! यह तो सिर्फ एकतरफकी बात हुई, देखिये अब दूसरी तरफकी बात तो देखिये! आप एक ही तरफ देखकर विचार बांधते हैं और दूसरी तरफ देखनेकी परवा नहीं करते पर हम से ऐसा नहीं हो सकता। हमें तो प्रत्नोंके हितके हर एक मुख्य प्रश्नकी दोनों बगल देखना चाहिये और उनको अलग अलग पलड़ेमें रखकर तौलना चाहिये। जो पलड़ा भारी हो उसी के पक्षमें हमको रहना चाहिये। क्योंकि बिना विचारे जो मत बांध लिया गया है उससे हम गुलाम नहीं हैं, हम

और कहना पड़ेगा कि जैसे पहले समयमें विधवाविवाह बहुत खराब शब्द समझा जाता था और यह शब्द बोलने वालेको प्रायश्चित्त करना पड़ता था वैसे आजके जमानेमें विधवाविवाह दयाका शब्द गिना जाता है और विधवा विवाह करना उचित नहीं ऐसा कहनेवालोंको प्रायश्चित्त करना चाहिये । पहले समयमें 'विधवाविवाह' एक बड़ी भारी गाली के बराबर था पर अब तो इस कलियुगमें, इस सरकारके जमानेमें, एक आशीर्वाद तुल्य हो गया है। आज कलके जमानेमें प्रेमका व्याह नहीं होता. स्वयंवरका व्याह नहीं होता, बल्कि स्वार्थका व्याह होता है, अपना कर्त्तव्य समझ कर और वरकन्याकी रुचि देखकर व्याह नहीं किया जाता; बल्कि पुतले पुतलीका व्याह किया जाता है। इतना ही नहीं जैसे गाय भैंस का और घोड़े गधेका अदला बदला होता है, वैसे लड़कियोंका अदला बदला होता है। बहन देकर जोरू लेजाते हैं, कितनी ही जातियोंमें लड़कियोंकी बिक्री होती है, कितनी ही जातियों में पुरुषोंकी बिक्री होती है, कितनी ही जातियोंमें सिर्फ ऊंचा कुल देखा जाता है और ऊंचे कुलके कारण ही एकसे अधिक स्त्रियां व्याही जाती हैं। ऐसे ऐसे कारणोंसे, छोटे छोटे समुदायके कारण, शिक्षाकी कचाईके कारण, जाति पांतिके रिवाज के कारण और ऐसे ही दूसरे कई कारणोंसे हर जगह बेमेल व्याह होता है। जैसे—कहीं रूपका बेमेल होता है, कहीं गुण का बेमेल होता है, कहीं अवस्थाका बेमेल होता है,
[illegible] होता है और कहीं धर्मकी

होती है। तिसपर भी हम व्याहके यज्ञ की बात करते हैं। पर यह तो जरा सोचिये कि यह कैसे हो सकता है? सेठ जी! मैं विधवाविवाहको कुछ बढ़िया नहीं समझती पर उसको सिर्फ लाचारीका एक उपाय समझती हूं और उस उपायकी आजकल विशेष आवश्यकता है, ऐसा मेरे शुद्ध अन्तः करणको मालूम होता है। क्योंकि पन्द्रह वर्षको उमरके भीतर की उच्चवर्ण की चौदह लाख बालविधवाएं हमारे देशमें हैं। व्याहके माने क्या है, वरके माने क्या है, इसको भी जिन्हें खबर नहीं है वे खिलौनों के साथ खेलनेवाली चौदह लाख दुधमुंही लड़कियां रांड़ होकर बैठी हैं यह क्या दया उपजाने लायक बात नहीं है? आप कहेंगे यह कर्मका दोष है, इसमें हम क्या करें। पर ऐसा कह देनेसे हमारी जिम्मेवारी घट नहीं जाती। उनके पापमें हम हिस्सेदार हैं और उनके दुःखके हम कारण रूप हैं! अजी आपको मालूम है कि हमारे देशमें छःस्त्रियों में एक स्त्री दुबारा विवाह करने योग्य विधवा है और वे सब बेचारी विना कारण अफसोस करनेमें, रोने धोनेमें तथा लम्बी सासें खींचनेमें ही अपनी जिन्दगी पूरी करती हैं? वे क्या दयाके योग्य नहीं है?

पुराने ढङ्गका वैधव्य आजकल नहीं पाला जा सकता।

और क्या आजकलके जमानेमें पुराने ढङ्गका वैधव्य हम, हमारी बहनें, लड़कियां और लड़कोंकी बहुएं पाल सकती हैं? कहिये कि नहीं। अगर हम ऐसा संन्यासी के ढङ्गका कठोर वैधव्य पालनेका हठ करें तो क्या हमारा कहना

आज कलकी विधवाएं मानेंगी ? कहिये कि नहीं। हमलोग अपनी खुशीसे आश्रयमें पड़ी हुई और घरमें मौजूद विधवाओंसे पुराने ढङ्गका कठिन वैधव्य पलवाने के बदले उनके मौज शौकको सामग्री जुटा देते है; उन्हें बढ़िया बढ़िया कपड़ा पहनाते हैं, चित्तवृत्तियोंको उकसाने वाला ममालेदार बहुत स्वादिष्ट भोजन खिलाते हैं; विषय वासना भरे नाटक दिखानेको ले जाते हैं; शृङ्गार रसकी पुस्तकें और छोटे दरजेके उपन्यास पढ़नेको देते हैं, सोने बैठनेमें, घूमने फिरनेमें, बोलने चालनेमें और रीति रिवाजोंमें उनको पहलेके समयसे कहीं अधिक स्वतंत्रता देते है। जमाने का प्रवाह ऐसा है और युरोपियनोंका संसर्ग ऐसा है कि कुदरती तौर पर स्त्रियोंमें एक नये ढङ्ग का जोश आरहा है और वह जोश ऐसा है कि उसको हम अब किसी तरह नहीं रोक सकते। इतनी बड़ी खराबियां होने पर भी मानो कुछ कसर समझकर हम अपनी कन्याओंको धर्मकी शिक्षासे वंचित रखते है। फिर भी विधवाओंसे वैधव्य पालनेकी आशा रखना क्या एक प्रकारकी मूर्खता नहीं है? किस आधार-पर वे वैधव्य पाल सकती है? यह तो जरा कहिये। इसके सिवा और एक अड़चल हममें आती जाती है। वह यह कि हममें कुटुम्बस्नेह घटता जाता है। इसमें पहले समय में हमारे बाप दादा विधवाओंका जैसा मान रखते थे और उनके दुःखसे दुखी होते थे वैसा अब नहीं होता; बल्कि अब तो विधवाओंको असगुन समझ कर उनके साथ

ऐसे गंभीर प्रश्न पर सिर्फ रिवाजका भरोसा रखना ठीक नहीं है और न अपनी पड़ी टेवके अनुसार उटकर लेस विचार करना उचित है; बल्कि हृदय चीर कर भीतर देखना चाहिये, तभी अन्दर से सत्य प्रगट होगा।

पुराने ख्यालके सेठने भी कबूल किया कि विधवा विवाहकी जरूरत है।

यह सुन कर उस सेठने कहा माजी! तुम सचमुच देवी हो! क्योंकि तुम जो बात कहती हो और जो विचार बताती हो वह ऐसा नहीं है जैसा कि हम जो मुंहमें आता है कह देते हैं या जैसी टेव पड़ गयी है या जैसा सुना है वैसा बक जाते हैं। तुम बहुत विचार कर और सत्यको समझ कर ही कहती हो; इससे तुम्हारे बोलनेसे जादूका सा असर होता है। तुम्हारे विचारने मेरी मति भी फेर दी है। क्योंकि मैं जो कुछ सोचता और जो कुछ बोलता था वह सब तुम्हारी तरह विचार करके नहीं, बल्कि जैसा सुनता था और पहलेसे जैसा संस्कार हो गया था उसीके अनुसार बोलता था और ऐसी सच्ची बात दूसरा कोई कहता तो सुनता ही न था; पर तुममें न जाने क्या है कि ये सब बातें सुननी पड़ीं और उलटे मैं ही बदल गया। इससे तुम्हारी तरह अब मुझे भी ऐसा मालूम होता है कि तुम्हारी बात सच है और इस दृष्टिसे देखने पर विधवाविवाह की ही जरूरत है, इसमें कुछ भी शक नहीं। तो भी माता मुझे कहने दो कि न जाने क्यों विधवाविवाहकी

बात मुझे नहीं रुचती और मन यही कहता है कि विधवा विवाह न हो तभी अच्छा। इसके लिये मैं कोई प्रबल कारण नहीं बता सकता और न इसपर वाद विवाद करके तुमको जीत सकता हूं। मैं अब यह भी नहीं मानता कि विधवाविवाह करनेकी जरूरत नहीं है बल्कि तुम्हारी ये सब बातें सुनकर तो मेरा पक्का विचार हो गया है कि विधवा विवाह होना ही चाहिये। तिसपर भी मेरा अंतःकरण यही कहता है कि विधवाविवाह न हो तो अच्छा। इसका कुछ उपाय तुम बताओ तो इसके लिये मैं एक लाख रुपये खर्चनेको तय्यार हूं।

विधवा विवाह लाचारी टलनेका उपाय है।

यह सुनकर मैंने कहा कि सेठ जी। जैसे विधवाविवाह की जरूरत समझने पर भी आपको विधवाविवाह नहीं रुचता वैसे ही मुझे भी विधवाविवाह नहीं रुचता; क्योंकि विधवा विवाह कुछ खुशहाली का काम नहीं है बल्कि यह तो आर्यत्वके ऊपर एक प्रकार का कलंक है। विधवाविवाह ब्याहके यज्ञका प्रकाश ग्रस लेनेवाला राहु है। विधवा विवाह पवित्र प्रेमकी महिमा घटा देनेवाली एक किस्मकी बला है। विधवाविवाह आर्यगृह रूपी सरोवर में हुडदंग मचाने वाला मगरमच्छ है। विधवाविवाह हलकी वृत्ति वाले मनुष्योंकी हलकी वृत्तियोंको उकसाने वाला एक साधन है; इतना ही नहीं बल्कि इसके पेटमें और कई तरह की खराबियां भरी हुई हैं। इसलिये विधवाविवाह कुछ

हृदयसे चाहने योग्य बात नहीं है यह मैं अच्छी तरह समझती हूं। फिर भी मुझे ऐसा मालूम होता है कि विधवाविवाह लाचारी दरजेका एक उपाय है और जहां बहुत बड़ा छेद हो गया हो और वह और किसी तरहसे न ठीक हो सकता हो वहां पर विधवाविवाह "एक पैवन्द है"। इसीसे इस लाचारीके उपायको भी आजकल खास जरूरत है। आजके जमाने का प्रवाह इस किस्मका है, लोगोंके मनकी हालत इस किस्मकी है, राज्यके कानून इस ढङ्गके हैं, लोकाचार इस किस्मका है और बाल विधवाओं का दुःख ऐसा है कि अब विधवाविवाहका आगे बढ़ता हुआ प्रवाह आप जैसे विचारके दो एक आदमियोंसे तो क्या लाखों आदमियों से भी नहीं रुक सकता। इसलिये अब इस बाढ़को आने से रोकना नहीं बन सकता। हम अब इतना ही कर सकते हैं कि जिससे इस बाढ़ से सब चीजोंको खराबी न हो। यह कह कर मैं आपको यही समझाना चाहती हूं कि किसी से विधवाविवाह बिलकुल बन्द नहीं हो सकता वह तो छूटे छटके हुआ ही करेगा और दिन दिन यह प्रवाह बढ़ता ही जायगा। ऐसा होना कुछ बुरा भी नहीं है; क्योंकि जिसका इस किस्मका विचार है और जिसका सुख इसी में समाया हुआ है उसे रोकने के लिये मिहनत करना व्यर्थ है और कभी दो चार जगह रोक भी दें तो इससे विशेष लाभ नहीं होने का, बल्कि उलटे नुकसान ही है।

प्रकृतिका बल; कमजोर मनकी स्त्रियां अपनी प्रकृतिका वेग नहीं रोक सकतीं।

इसके लिए श्रीकृष्णभगवान ने अर्जुनसे भी कहा है कि—

सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि।
प्रकृतिं यांति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति॥

भगवद्गीता, अ० ३ श्लो० ३३।

प्राणीमात्र अपनी अपनी प्रकृतिके अनुसार चलते हैं यहां तक कि ज्ञानी भी अपनी प्रकृतिके अनुसार ही बर्तते हैं। तब तू प्रकृतिको कैसे रोक सकेगा? मतलब यह कि तुझे अपनी प्रकृतिके अनुसार बर्तना ही पड़ेगा। वहां निग्रह कुछ नहीं कर सकेगा।

इतना समझाने पर भी अर्जुन नहीं मानता और प्रकृतिका बल नहीं समझता। इससे आगे बढ़कर बहुत साफ शब्दोंमें भगवान उससे कहते हैं कि—

यदहंकारमाश्रित्य न योत्स्य इति मन्यसे।
मिथ्यैष व्यवसायस्ते प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति॥

अ० १८ श्लो० ५८।

अहंकारके कारण अगर तू यह सोचता हो कि मैं युद्ध नहीं करूंगा तो तेरा यह सोचना मिथ्या ही है; क्योंकि तेरा स्वभाव तुझे युद्धमें भिड़ावेगा।

इतना कहने पर भी अर्जुनके मनमें कुछ कसर थी उसे निकाल डालनेके लिये और प्रकृतिका बल समझकर उसके अधीन होनेके लिये और उस रास्ते उन्नतिके

है? क्या विधवा होनेमें ही उनमें ऐसा बल आ जाता है कि वे विना प्रेमको और विना किसी सुख या सुबोतेको जिन्दगी बिता सकें? स्वर्गके देवता शिव, ब्रह्मा, इन्द्र, नारद इत्यादि तथा मत्युर्गके तपस्वी ऋषि जंगलमें रहकर भी पत्ते तथा घास खाकर भी और सारी जिन्दगी आत्मज्ञानका विचार करते रहने पर भी जिस कठिन ब्रह्मचर्यको नहीं पाल सके वह महान ब्रह्मचर्य क्या आज-कल की, स्वतंत्रताके समयकी और मौज शौकके समयकी जवान बालविधवाएं पाल सकेंगी? कहिये कि नहीं। तब हमको समझना चाहिये कि सिर्फ विधवा होनेसे ही सब स्त्रियोंमें एकदम वैराग्य नहीं आजाता, उनमेंसे कितनी ही स्त्रियोंके मनमें संसारका सुख भोगनेकी अभिलाषा होती है और यह अभिलाषा ऐसी हार्दिक है कि खास प्रकृतिकी जड़तक पहुंची हुई होती है। ऐसी प्रकृतिवाली, ऐसी स्वभाववाली और ऐसी इच्छावाली भी लाखों विधवाएं हैं, उन सबको प्रकृति हम एकदम नहीं बदल सकते, इसलिये वे अपनी प्रकृतिके अनुसार न्यायके रास्ते चलें और फिर विवाह करें तो उसमें हमको विघ्न नहीं डालना चाहिये, बल्कि और उनको उत्साहित करना चाहिये। यह काम उनकी प्रकृतिसे मिलता जुलता है, इसलिये अगर इसको न होनेदें तो आगे जाकर इसमें बड़ी खराबी होती है। क्योंकि वे प्रकृतिके वेगको रोक नहीं सकतीं, प्रकृतिके नियमको फेर नहीं सकतीं और प्रकृतिके बन्धनको तोड़ नहीं सकतीं। इसका

यह होता है कि जब मौका मिलता है तब वे अधर्मके मार्गमें चली जाती हैं। ऐसा करनेका और उस रास्ते जानेका मौका मिलने देनेसे पहले ही उनको न्यायका रास्ता दे दें तो इसमें कुछ बुराई नहीं है; बल्कि आगे जाकर उनका कल्याण ही है। प्रकृति भी हमेशा एक तरहकी, ज्योंकी त्यों नहीं रहती बल्कि क्षण ही क्षण जरा जरा बदलती जाती है और समय बीतने पर बहुत बदल जाती है। ज्यों ज्यों वह बदलती है त्यों त्यों मनुष्यका आचार विचार भी बदलता जाता है। पर यह सब धीरे धीरे होता है, इसलिये जोशीली प्रकृतिको शुरूमें प्रसन्न रखना और उसके अधीन होना भी उन्नतिका एक सोपान है। इसीसे श्रीमद्भगवद्गीतामें बारह प्रकारके जो मुख्य यज्ञ गिनाये हैं उनमें इन्द्रियोंको शास्त्रोक्त विधिके अनुसार विषयसुख भोगने देने अर्थात् गृहस्थाश्रमका सुख भोगनेको भी एक तरहका महायज्ञ माना है। इसलिये ऐसी प्रकृतिवाली बालविधवाएं फिर विवाह करें और न्यायकी रीतिसे गृहस्थाश्रम सुख भोगें तो इसमें कुछ बुराई नहीं है, बल्कि यह उनके कल्याणका उपाय है। इसके बीचमें हमलोगोंको नहीं पड़ना चाहिये, बल्कि उनको उनकी आत्माकी उन्नतिके लिये यथाशक्ति मदद देना चाहिये। पर सेठ जी! याद रखना कि विधवा होनेके बाद इस किस्मकी वासनावाली और ऐसी प्रकृतिवाली बहुत थोड़ी स्त्रियां होती हैं। बहुत तो सैकड़े पचीस ऐसी विधवाएं होती हैं। बाकी सैकड़े पचहत्तर

ऐसी विधवाएं होती हैं जो दुबारा व्याह कभी पसन्द नहीं करतीं। उनमें कुछ शुभ कार्य करनेके लिये आप जैसे विधवाविवाहके विरोधियोंको बहुत बड़ी गुंजाइश है।

अगर काम लेना आवे तो रुपयेकी कमी नहीं है।

यह सुनकर उस सेठने कहा—तो मा जी! इन पचहत्तर पवित्र स्त्रियोंकी ही बात क्यों नहीं करतीं हो? गेहूंमें कंकड़के बराबर जो सौमें पचीस स्त्रियां बिगड़ दिलकी हैं उन्हींकी बात क्यों करती हो? हमको उनसे कुछ काम नहीं है। हमें तो जो पचहत्तर स्त्रियां विधवाविवाह पसन्द नहीं करतीं उन्हींसे काम है। इसलिये मुझे यह बताओ कि मैं उनकी मदद कैसे कर सकता हूं।

मैंने कहा—सेठ जी। ऐसी दुखी विधवाओंकी मदद करनेके तो सैकड़ों रास्ते हैं पर मदद करता कौन है? आज आपके मुंहसे यह बात सुनी; नहीं तो मैंने ऐसा कोई माईका लाल नहीं देखा जो ऐसा सच्चा पुण्य लेनेको तय्यार हो। आप धन्य हैं! और आपका धन धन्य है जो गरीब अनाथ विधवाओंके आंसू पोंछनेके काम आवेगा।

यह सुनकर वह भोला, पर अभिमानी और बखानसे खुश हो जानेवाला तथा बड़ाईकी खातिर हजारों रुपयेकी परवा न करनेवाला सेठ बोला कि लोग विधवा विवाह, विधवाविवाह चिल्लाया करते हैं पर तुम्हारी तरह साफ साफ बात समझानेवाला हमें कोई नहीं मिलता तो हम क्या करें? अगर हमारे पसन्द लायक

रास्ता बताओ तो रुपयेको कुछ कमी नहीं है। मैं अपने घरसे एक लाख रुपये निकालूं तो उसको देखा देखी दूसरा कोई दो लाख रुपये दे और दो लाख मैं अपने मित्रोंसे लिखवा लूँ तो पांच लाखका चन्दा बातको बातमें हो जाय। यह कोई बड़ी बात नहीं है। रुपया तो जितना ढूंढ़ें उतना है पर ऐसा रास्ता बतानेवाले और ऐसा काम करनेवाले आदमी कहां हैं कि जिनसे रुपया सार्थक हो? अगर तुम अच्छा रास्ता बतानेवाले और दिल लगाकर काम करनेवाले सच्चे आदमी संग्रह करने का भार लो तो इसके लिये रुपये जुटानेका जिम्मा मैं अपने सिर लेता हूं। पर इसमें शर्त इतनी ही है कि पहले मुझे पूरा पूरा विश्वास होजाना चाहिये कि तुम जो काम कहते हो वह काम सोलहो आने पार पड़ने लायक है। अगर ऐसा हो तो रुपया जमा करनेकी जिम्मेवारी मेरे सिर। बताओ, अब मेरा कुछ दोष है? तुम बहुत कहा करते हो कि सेठ लोग कुछ नहीं करते, कुछ नहीं करते, पर विश्वास जमे बिना हम क्या करें? इसलिये पहले कामका विश्वास जमा दो और पीछे रुपये लेजाओ। कहो इसमें कुछ रुकावट है?

यह सुनकर मैंने कहा—सेठ जी! ईश्वरकी कृपासे जैसे आप रुपया देनेके लिये तय्यार हैं वैसे दूसरी तरफ अच्छा प्रबन्ध करनेवाले विद्वान भी तय्यार हैं और तीसरी तरफ स्वार्थत्याग कर परमार्थ के काम करनेवाले आदमी भी अब हमारे देशमें बहुतसे तय्यार हैं और

आगे चल कर ऐसे आदमी और बहुत निकलेंगे।
इसमें कुछ शक नहीं, क्योंकि परमात्माकी ऐसी इच्छा है
कि हमारे देशका और हमलोगोंका भला हो।
इससे थोड़े समयमें सब उपाय निकल आवेंगे। ऐसा
होने पर भी पहले शुरूमें कुछ मुशकिल पड़ती है और
इसीमें आजकल जहां धन पड़ा हुआ है वहां अच्छा बन्दो-
बस्त और अच्छा काम करनेवाले आदमी नहीं हैं और
जहां ऐसे आदमी हैं तथा बुद्धिबल है वहां धन नहीं
है और कितनी ही जगह इन तीनोंमेंसे दो चीजें होती हैं
या एक नहीं होती, इससे काम नहीं होता। इस
प्रकार मूल वस्तुओंकी कमी नहीं है पर वे चीजें अलग
अलग पड़ी हैं इससे जैसा चाहिये वैसा काम नहीं
होता। इसलिये अब हमें जो मुख्य काम करना है वह
यही कि इन तीन अलग अलग कड़ियोंको एक सांकलमें
जोड़ दें। ईश्वरकी कृपासे ऐसी सांकल बनानेवाले
महात्मा तथा दयाकी देवियां अब हमारे देशमें तय्यार होती
जाती हैं, इसलिये थोड़े दिनमें हम सब साथ मिलकर
बहुत कुछ काम कर सकेंगे और विधवाविवाह रोकनेके
विषयमें भी बहुत कुछ कर सकेंगे। इसमें मुशकिल यह
है कि विधवाविवाह न होना चाहिये ऐसा कहनेवाले
लाखों आदमी हैं पर विधवाविवाह न हो इसका उपाय
करनेवाला और उसके लिये खूब खर्च करनेवाला आपके
जैसा और कोई नहीं है, इससे वे कुछ कर नहीं सकते।
क्योंकि जेबमें हाथ डाले बिना कुछ काम नहीं हो सकता।

अब आपने इतनी बड़ी हिम्मत की है और इतना ज्यादा रुपये खर्चनेको तय्यार हैं तब इसका फल कैसा अच्छा होता है यह आप थोड़े दिनमें देखेंगे। इसके लिये अधिक स्पष्ट स्कीम मैं थोड़े दिनमें तय्यार कर डालूंगी। इस समय इस विषयकी थोड़ी सी मुख्य बातें आपको बताती हूं। उसे सुननेकी कृपा कीजिये। उसमें आपको कितने ही विचार सूझ पड़ेंगे।

विधवाविवाह रोकनेका उपाय।

विधवाविवाह रोकनेके लिये और विधवाओंकी भीतरी वृत्तियोंको अधिक उच्च बनानेके लिये पहला वह काम होना चाहिये कि जिससे वे इज्जतके साथ गुजारा कर सकें। उसमें इस बातका ध्यान रखना चाहिये कि ऐसा काम करना उचित नहीं है कि सिर्फ दूसरे परोपकारी धनवानोंकी दया पर ही, उनकी दी हुई वृत्ति आदि पर ही उनका निर्वाह हो और पींजरापोलमें पड़े हुए अपाहिज पशुओंकी तरह उनका गुजारा हुआ करे। ऐसा करनेसे इज्जतदार विधवाओंके लिये बड़े शरमकी बात हो जाती है। फिर समूचे देशकी लाखों विधवाओंको बैठे बैठे खिलानेका प्रण भी हमारे गरीब देशसे नहीं निबह सकता। इसलिये उनके निमित्त इस किस्मका बन्दोबस्त कर देना चाहिये कि जिससे वे किसीके सिर का बोझ न बनें, बल्कि अपने परिश्रमसे अपनी रोटी कमा सकें। ऐसा करना कुछ बहुत मुश्किल नहीं है; क्योंकि आर्य स्त्रियोंमें स्वाभाविक तौर पर ही बहुत कुछ सहिष्णुता है; बहुत किफायतसे

उनको गुजारा करना आता है, अपनी जीविका योग्य परिश्रम भी वे कर सकती है और फिर उनमें स्वाभाविक तौर पर नकल करनेकी शक्ति बहुत अच्छी होती हैं, इससे वे कितनी ही तरहकी कोमल कारीगरीके काम बहुत आसानीसे और बहुत सफलतासे कर सकती हैं। अगर हम उनको ऐसे काम सौंपें तो उनकी जिन्दगीको अधिक कामकाजी बना सकते हैं, उनको दरिद्रताके दुःखसे छुड़ा सकते हैं और देशकी शिल्पकलाको भी बहुत कुछ फायदा हो सकता है। इसके सिवा वे इस तरहके कामोंमें लगी रहें और उद्योगी जीवन बिताना सीखें तो उनके मनमें दुःख तथा पापके विचार बहुत न आसकें जिससे कितने ही तरहके अपराध होने से बचें। सेठ जी! याद रखना कि यह छोटा काम नहीं है, बल्कि बहुत बड़ा, बहुत जरूरी, बहुत उपयोगी और ईश्वरका बड़ा प्यारा काम है। हमारे देशमें सौ दो सौ या हजार दो हजार विधवाएं नहीं है, बल्कि लाखों दुखी विधवाएं हैं और धीरे धीरे उनका जीवन सुधारनेके लिये यह आयोजन है। इसलिये धीरे धीरे इसका अच्छा असर सारे देशमें और सारी प्रजा पर हो सकता है। इसमें कुछ सन्देह नहीं। अब सवाल यह उठता है कि ऐसा होने से फायदा तो बेशक है पर इसके अनुसार काम करनेके लिये जो सामग्री चाहिये वह हमारे देशमें तय्यार है या नहीं? और. ऐसी संस्थामें फायदा उठानेके लिये कुलीन विधवायें तय्यार है या नहीं? ये दो मुख्य प्रश्न हैं। पर इनका जवाब

सहज है और वह यह कि ऐसे आश्रम जारी करने और उन्हें चला लेजाने का सुबीता आजकल हमारे देशमें है और वह बढ़ता जाता है तथा अभी और बढ़ता ही जायगा। दुखियों की मदद करना और परमार्थके काम करने में ही जिन्दगी काटना इस जमानेका मुख्य धर्म है और ऐसा करनेमें ही जिन्दगीकी सार्थकता है, यह विचार बहुत तेजीसे लोगोंमें फैलरहा है। इससे थोड़े दिनमें इस किस्मके आश्रमोंको बहुत बड़ी मदद मिलने लगेगी। दूसरे ऐसे आश्रम कुछ एकदम सब जगह खोलना नहीं है और न एक ही आदमीके या एक ही जगह एक ही संस्थामें काम करनेसे होगा; बल्कि जब जिसका जहां मौका मिले वहां उसको मौकेके मुताबिक इर्दगिर्द का संयोग देखकर और लोकमतको अपने पक्षमें लेकर काम करना है। इस तरह काम हो तो बहुत थोड़े समयमें सारे देशमें उसका असर फैल जाना कुछ आश्चर्यकी बात नहीं है। दूसरा सवाल यह है कि इस विभागमें काम करने के लिये जवान विधवाएं तय्यार होंगी कि नहीं? इसके जवाबमें जानना चाहिये कि आजके जमानेमें कितनी ही दुखी विधवाएं ऐसे विभागोंमें काम सीखनेके लिये खुशीसे तय्यार होंगी; क्योंकि दिन पर दिन व्यर्थ लाजके भूलभरे विचार लोगोंमेंसे घटते जाते हैं और स्त्रीशिक्षा बढ़ती जाती है, इससे भी स्त्रियां समझती जाती हैं कि हमारा अधिक कल्याण किसमें है। तीसरे

बादशाही जमाने में स्त्रियों को खुल्लमखुल्ला फिरने देनेमें जैसा जोखों या वैसा जोखों अब नहीं रहा। इस के सिवा विश्वास करने लायक महात्मा तथा देवियां भी प्रगट होती जाती हैं। फिर इस जमानेका प्रवाह ऐसा है तथा लोगोंकी गरीबी इतनी अधिक बढ़ गयी है कि ऐसे आश्रमसे फायदा न उठाना एक प्रकारकी मूर्खता है। यह सार्वजनिक मत होता जाता है कि उनसे फायदा उठाना सुखी होने का उपाय है। इस मतकी चिरेसे कोई विधवा छटक नहीं मकती। इसलिये ऐसे विभागसे लाभ उठाने लायक जवान विधवाएं भी काफी तौरसे निकल आवेंगी, इसमें कुछ शक नहीं है। तो भी शुरूमें हमारी धारणानुसार विधवा स्त्रियोंका न मिलना सम्भव है; लेकिन इससे निराश होनेका कुछ काम नहीं है। ज्यों ज्यों शिक्षा बढ़ती जायगी और लोगोंमें स्वतंत्रताके विचार बढ़ते जायंगे तथा स्वावलम्बकी कीमत समझमें आती जायगी त्यों त्यों, दिन पर दिन ऐसे विभागसे अधिक अधिक लाभ उठाया जायगा। इसमें जरा भी सन्देह नहीं है। इसलिये सेठ जी! अगर आपको अपने धनकी सार्थकता करना हो और विधवाविवाहका प्रचार रोकना हो तो पहले इस किस्मके विभाग खोलिये और दुखी विधवाओंकी मददके लिये तय्यार हो जाइये। इससे ज्ञानमें बढ़ता हुआ विधवा विवाहका विचार स्वाभाविक रीतिसे अंकुश में आ जायगा। अभी हमारे देशमें लाखों विधवाओंको विधवा विवाह पसन्द नहीं है। लेकिन इस अगर...

जिन्दगीको अधिक उपयोगी न बनावेंगे और उनको अच्छे कामोंमें न लगावेंगे तथा उनके गुजारेको सामग्री पूरी पूरी नहीं जुटा देंगे तो अभी जो विधवाएं दुबारा व्याहका विचार भी नहीं करतीं वे ही विधवाएं और भविष्यकी विधवाएं भी विवश हो दुबारा व्याह करनेको लाचार होंगी। अगर आप चाहते हैं कि ऐसा न हो तो आपको यह रोग होनेके शुरूमें ही इस किस्मका उपाय कर देना चाहिये; पीछेसे उपाय करनेकी अपेक्षा पहलेसे रोकना अधिक अच्छा है।

उच्च वृत्तिवाली विधवाओंको दयाकी देवी बनानेकी व्यवस्था।

सेठ जी! यह तो हमारे देशकी साधारण विधवाओंके सुधारनेकी बात हुई; इसके सिवा और एक महत्वका काम हमें करना है। जो उच्च वृत्तिकी निःस्वार्थी, पवित्र, कुलीन विधवाएं हों और जो अपना जीवन परमार्थमें देशकी सेवामें और अपने भाई बहनोंकी सेवामें बिताना चाहती हों तथा दुखियोंके आंसू पोंछ कर उन्हें दिलासा देनेमें, गिरे हुओंको उठानेमें, भूलेहुओंको रास्ता दिखानेमें, बीमारोंकी शुश्रूषा करनेमें और ईश्वरकी इच्छानुसार उसके कदम बकदम चल कर महात्माओंके जीवनमें हो जीनेकी जिन भली विधवाओं की इच्छा हो उनके लिये सेवासदन जैसे एक अलग ही विभागकी व्यवस्था करना है। यह भी बड़े महत्वका काम है। इस दुनियामें अपने स्वार्थके लिये तो सब कोई तड़फड़ाया करते हैं

लेकिन परमार्थके लिये ही जीना, उस विचारोंमें ही जीना और जगतकी सेवा करते करते प्रभुके आनन्दमें ही जीना सौभाग्यकी बात है। ऐसा उत्तम जीवन भोगना कुछ सब के भाग्यमें नहीं बदा होता; क्योंकि सब मनुष्योंमें इतना अधिक पुरुषार्थ नहीं होता, सब मनुष्योंमें इतना अधिक ज्ञान नहीं होता, सब मनुष्योंमें इतना बड़ा वैराग्य नहीं होता, सब मनुष्योंमें इतना बड़ा ईश्वरी स्नेह नहीं होता और सब मनुष्य ऐसी उच्चकोटिमें रहकर निर्लोभता से इतना बड़ा काम नहीं कर सकते। जो महाभाग्यशाली होते हैं, ईश्वरके कृपापात्र होते हैं जिनकी आत्मा अन्दरमें जगी हुई है और जिनको जिन्दगी सार्थक होने वाली है उन्हीं नेक भाई बहनोंको परमार्थमें जीना सूझता है और रुचता है। इसलिये जो बालविधवाएं तथा बड़ी उमरकी विधवाएं ऐसे परमार्थके विभागमें शामिल होनेको तय्यार हों उनको धन्यभाग्य समझना चाहिये। और ऐसी दयाकी देवियोंको हम जितनी मदद दें थोड़ी है। उनकी जो मदद की जाती है उसका असर सारे देशपर पहुंचता है यहां तक कि परमात्मा तक पहुंचता है। इसलिये हमें ऐसी उत्तम वृत्तिवाली अनाथ विधवा स्त्रियोंकी खास मदद करनी चाहिये। यह हमारा सबसे पहला और प्रधान कर्त्तव्य है और ईश्वरका सबसे अधिक प्यारा काम है। ऐसी दयाकी देवियोंकी मार्फत इस जगतमें ईश्वरी स्नेह फैलाया जा सकता है और इस स्नेहके प्रतापसे अनेक प्रकारके दुःख संसारमें कम किये जासकते हैं, इसलिये कोमल

वृत्तियोंको विकसित करनेमें, निःस्वार्थ भाव बढ़ानेमें, प्रेमका कमल प्रफुल्लित करनेमें, ज्ञान प्रकाशको बढ़ने देनेमें, दयाका सोता बहानेमें, नाजुक भाव खिलने देनेमें, उच्च श्रेणीकी हृदयकी स्फूर्त्तियोंको प्रगट करने देनेमें और आत्माकी स्वाभाविक आनन्द लेने देनेके महान काममें हमसे बने जितनी मदद करनी चाहिये। और मैं समझती हूं कि इसमें हमलोग जितनी अधिक मदद करें उतना ही अधिक हमारी आत्माका कल्याण हो सकता है। इसलिये सेठ जी! आपसे जितनी बने ऐसी संस्थाओंकी मदद कीजिये। इससे विधवाविवाह रुकेगा और हमारी बहनें देवताओंका सा जीवन बिताना सीखेंगी। याद रखना कि यह पुण्य ऐसा वैसा नहीं है। इस विभागकी सविस्तर व्यवस्था मैं आपको पीछेसे निरालेमें समझाऊंगी पर इतनेसे आपके ध्यानमें यह बात आ गयी होगी कि अगर सबसे जरूरी कोई काम है तो वह बाल विधवाओंकी वृत्तियोंको उच्च बनाना और उनको परमार्थके काममें लगाना तथा अन्तमें उन्हें दयाकी देवियां बनाना है। इसलिये इस विभागको तन मन धनसे यथाशक्ति सहायता कीजिये। यही मेरी प्रार्थना है। यह कहकर मैं चुप हो रही।

तब सेठने कहा कि तुम्हारी बात मुझे बहुत पसन्द आयी है और मुझे आशा है कि चार छः महीनेमें इस कामके लिये मैं तुमको दो चार लाख रुपये संग्रह कर दूँगा।

कुछ अमीरोंके स्वभावका नमूना।

बहनो! इस प्रकार उस समय उस सेठने भरी दिया था ... —मके आदमी जब अपने मनलायक बात

सुनते हैं तब उनको सहरमें भाकर बड़ी डींग मार देते हैं और कितने ही वादे कर बैठते हैं; इसमें कुछ नयापन नहीं है, यह उनकी भादतकी बात है। पर पीछेसे वे ढीले पड़ जाते हैं और वादा पूरा नहीं कर सकते। ऐसे बहुतसे भमीर होते हैं। उन्हींमें एक यह भी था, इसलिये मैंने उससे पूरी भाशा नहीं की। कल ही वह मुझसे मिला था और इसकी चर्चा चलते ही उसने इशारा किया कि भाजकल मिलोंकी दशा बहुत खराब है और व्यापारियोंका हाथ तंग है इससे हमारा विचार पूरा होनेमें कुछ समय लगेगा। ऐसा ही करते करते यह बात ढीली पड़ जायगी और अन्तमें पांच लाखमें पांच हजार पर बात भाजाय तो भी कुछ भाश्चर्य नहीं है। तो भी इतना विश्वास रखना कि इससे कुछ न कुछ छोटा बड़ा काम होगा ही। इसमें कुछ सन्देह नहीं। और अभी अगर कोई छोटा ही काम हो तो हमारा क्या नुकसान है? हमें तो लाभ ही है क्योंकि कुछ न होनेसे थोडा होना भी अच्छा है।

अब विचार करो कि इसमें मेरी क्या बहादुरी है। ऐसी बातें करनेमें क्या मुझे शेर मारना पड़ता है? तिसपर भी तुम सब मेरा बखान करती हो और झूठ मूठ मुझे मान देती हो। पर बहनो! विश्वास रखना कि इसमें मेरा किया कुछ भी नहीं है! मैं तो सिर्फ जीभ चलाती हूं और काम तुम सबकी मददसे होता है। और सो भी ईश्वर की दयासे।

हमलोग बहुत छोटे वृत्तमें काम करते हैं इससे आगे नहीं बढ़ सकते ।

बहनो ! इस सप्ताहके मुख्य कामोंमें मेरा पांचवां काम यह है कि गत गुरुवारको मैं जैनोंकी जीव दयावाली सभामें गयी थी और वहां भी ईश्वरकी कृपासे कुछ काम बना। उस मण्डलीका सेक्रेटरी बड़ा उत्साही जवान है और उस मण्डलीकी आर्थिक अवस्था भी बहुत अच्छी है; क्योंकि जैन लोग पैसेवाले हैं और जीव दया उनके धर्मका मुख्य सिद्धान्त है, इससे वे लोग जीव दयाके कामके लिये हजारों रुपये निकाल देते हैं। यह मण्डली बहुत कुछ काम करने योग्य है। तिसपर भी हम लोगोंकी रीति अभीतक ऐसी है कि वे बहुत ही छोटे दायरेमें काम करते हैं और हर विषयमें छोटी छोटी बातोंमे ही पड़े रहते हैं; जातिबन्धन के कारण, पहलेके राजाओंके जुल्मके कारण, लोगोंकी अज्ञानताके कारण, साझीदार होकर काम करनेकी आदत न होनेके कारण तथा ऐसे ही दूसरे कई कारणोंसे हमलोग बहुत छोटे छोटे कामोंमें ही रह जाते हैं और समझते हैं कि उसीमें सारी दुनिया आ गयी। इस कारण खाने पीनेमें ब्याह शादीमें, देश परदेश जानेमें, बड़ी बड़ी कम्पनियां खोल कर साझेसे रोजगार धंधा करनेमें, धर्मसम्बन्धी उदार विचार रखनेमें और इस तरहके दूसरे विषयोंमें बहुत संकीर्णतासे काम लेने की पीढ़ी दरपीढ़ीसे लोगोंकी टेव पड़ गयी है। और अलग अलग सम्प्रदायोंकी सभाओंमें भी इसी तरह बहुत

संकीर्ण सीमा में काम होता है। वैसे ही जैन मंडलकी "जीव दया" सभामें भी बहुत संकीर्ण सीमामें काम किया जाता था अर्थात् उस में सौ दो सौ जैन लोग ही आते थे और वे आपसमें ही जीवदयाकी बातें किया करते थे। पर सारे जगतमें यह उत्तम बात फैलानी चाहिये और इसके लिये भगीरथ प्रयत्न करना चाहिये। ऐसा कामवह सभा नहीं करती थी और न इतनी दूर तक इस कामको फैलानेका ख्याल उक्त सभा स्थापन करनेवालोंका था। यद्यपि कोई कोई जैन भाई इस किस्मके काम बहुत विस्तारमें कर रहे हैं और उनको कोई कोई सभाएं आश्रय भी देती हैं पर अपने समूचे देशमें सब कौमोंमें और सब विषयोंमें जितनी विशालतासे काम लेना चाहिये उतनी विशालतासे काम लेना अभी हमलोगों को नहीं आता। इसीसे हम बहुत थोड़ी हदमें ही काम किया करते है। इससे जीवदयाकी यह संस्था भी थोड़े से जैनोंके सामने महीनेमें एक बार जीवदया के व्याख्यान दिला देनेको ही समझती थी कि हमने बहुत किया। मैंने प्रसंगवश बोलनेका मौका मिलने पर उनसे कहा—

अभक्ष्य खानेवाले लोगोंके बालकोंके मनमें जीवदयाका विचार घुसाना चाहिये।

बन्धुओ! अगर आपको सचमुच लोगोंको जीवदया धर्म सिखाना है और जीवदयाके कामको बहुत विस्तारसे चलाना

है तो जो लोग जीवदयाके लिये जरा भी परवा नहीं करते और खाने पीनेमें गड़बड़ाध्याय चलाते हैं उन लोगोंकी स्त्रियोंमें और उनकी नन्ही नन्ही बालिकाओंमें जीव दयाकी वृत्ति जगाना चाहिये। अगर ऐसा कर सकें तो आपकी सभासे बहुत बड़ा काम हो। स्वादकी चाह स्त्रियोंमें विशेष कर होती है और रसोई बनानेका काम भी हमारे देशमें और हमलोगोंमें खासकर स्त्रियां ही करती हैं; इसलिये अगर उनमें दया पैठ जाय, वे अगर अभक्ष्य पदार्थसे होनेवाले नुकसानको समझें और गूंगे प्राणियोंके वकील बनकर सच्चे दिलसे लग जायं तो जीव दयाके सम्बन्धमें बहुत बड़ा काम हो धीरे धीरे इसका बहुत गहरा असर हो, इसमें कुछ सन्देह नहीं। क्योंकि जो सचमुच स्त्री हैं और जिनमें पूरा पूरा स्त्रीत्व है उन स्त्रियोंके लिये तो पुरुष खिलौनेके समान हैं। इन खिलौनोंको वे जैसे चाहें वैसे नचा सकती हैं। इतना बड़ा बल स्त्रियोंके हृदयमें है, स्त्रियोंके स्नेहमें है और स्त्रियोंके स्त्रीपनमें है। इसलिये अगर अभक्ष्य पदार्थ खानेवाली स्त्रियों के हृदयमें जीव दया की रुचि पैदा हो जाय तो धीरे धीरे अपवित्र वस्तु खानेका रिवाज बहुत घटजाय और हजारों लाखों जीव बच सकें। जो लोग खानेमें गड़बड़ सड़बड़ रखनेवाले हैं उन लोगोंकी लड़कियोंके मनमें जीव दयाका बीज रोपनेका महान काम हमें करना चाहिये। ऐसा करना आजकलके जमानेमें कुछ बहुत मुश्किल नहीं है; क्योंकि आजकल जगह जगह कन्याशालाएं हैं और उनमें सब वर्णोंकी लड़कियां विद्याभ्यास करती हैं।

अगर हम उनको इनामका लालच देकर, जीवदया की पुस्तकें पढावें और उनमें जो पास हों,उनको इनाम दें तथा वैसे लोगोंकी लड़कियोंमें जीवदयाकी पुस्तकें उनकी भाषामें छपवा कर मुफत बांटें तो धीरे धीरे उसका कुछ अच्छा असर हुए विना नहीं रहेगा। और इतना काम करना कुछ कठिन नहीं है, क्योंकि आजकल इस किस्म की जीवदया सम्बन्धी और मांसाहारकी खराबी बतानेवाली सैकड़ों पुस्तकें हैं और उनमें जरूरतके मुताबिक अनुवाद करलेने लायक विद्वान भी आपकी जातिमें और हमारे देशमें बहुतेरे हैं, सिर्फ पैसेकी जरूरत है और उसके लिये भी ईश्वरकी कृपासे आपकी सभाके पास बहुत अच्छा फंड है। इसलिये अगर आप चाहें तो इस प्रकार बहुत काम कर सकते हैं। पर उसमें सम्हाल यह रखना है कि धर्मके सिद्धान्तके तौर पर यह काम नहीं उठाना चाहिये; बल्कि वैद्यकके नियमानुसार, अर्थशास्त्रके नियमानुसार और परोपकार वृत्तिके नियामानुसार इस कामको शुरू करना चाहिये। ऐसी पुस्तकोंमें ऐसे अधूरे अधूरे धर्मके विचार नहीं लेना चाहिये जिनको सिर्फ सम्प्रादाय विशेषके थोड़े लोग ही मान सके; बल्कि ऐसा सार्वजनिक सिद्धान्त लेना चाहिये जिसे सारे जगतके बड़े लोग मान सकें। ऐसा करनेसे, ऐसी पुस्तकें लड़कियोंमें प्रचार करनेसे किसी कौमके आदमी रोक छेंक नहीं कर सकेंगे और इससे कुछ दिन में बहुत काम हो जायगा। शुरूमें कदाचित कुछ काम न हो

तो भी मांसाहारी बालकोंके कोमल मगजमें जीवदयाके विचार घुसना और उसका बीज उग जाना तथा ऐसे संस्कार उनके हृदयमें जमना भी कोई छोटी बात नहीं है। इसलिये अगर आपलोगोंको सचमुच जीवदया करना है तो मांसाहारी हिन्दू, पारसी, मुसलमान तथा युरोपियन और बौद्ध इत्यादि लोगोंकी कन्याओंके मनमें ऐसे विचार घुसानेकी कोशिश कीजिये। जब आप ऐसा करेंगे तभी समझा जायगा कि आपने कोई बड़ा काम किया। नहीं तो सिर्फ जीवदया माननेवाले थोड़े से जैनोंके सामने बार बार यह बात कहनेसे मैं विशेष कुछ लाभ नहीं समझती। अगर आपको ठीक तौरसे काम करना है तो ऐसे तथा इससे मिलते जुलते और कितने ही रास्ते हैं; उनके अनुसार जमाना देखकर ज्यादा खुले दिलसे काम करना सीखेंगी तो हजारों आदमियोंमें तथा परदेशोंमें और परधर्मी लोगोंमें भी जीवदयाकी रुचि पैदा कर सकेंगी और धीरे धीरे उस रुचि को उन लोगोंमें बहुत अच्छी तरह फैला सकेंगी। वैसा करनेके लिये मैं आपलोगोंसे विनती करती हूं।

अगर उत्तम व्यवस्था बतायी जाय तो उसे करने को लोग तय्यार हैं।

उस सभामें बैठे हुए एक गृहस्थको यह बात बहुत पसन्द । उसने कहा कि परधर्मी छोकरियोंमें जीव दयाके फैलानेके लिये मैं एक हजार रुपये इस सभाको तय्यार हूं। यह रकम एक वर्षमें खर्च की जाय और

जो काम हो तथा उसका जो फल हो उसकी रिपोर्ट इस सभामें पेश की जाय। दूसरे गृहस्थने कहा कि आजकल कितनी ही कन्याशालाओंमें आचरणकी शिक्षा दी जाती है; ऐसी शालाओंमें अगर जानेकी इजाजत मुझे मिले तो मैं वहां जाकर सप्ताहमें एक बार दयाका उपदेश करनेका काम अपने जिम्मे लेता हूं। परीक्षाके तौर पर मैं तीन वर्ष तक इस सभाका स्वेच्छा सेवक बनकर काम करनेको तय्यार हूं। एक और गृहस्थने कहा कि मांसाहारके विरुद्ध युरोप और अमेरिकामें जो बड़े बड़े प्रयत्न होते हैं और वहां मांसाहारसे होनेवाली खराबियोंके लिये डाक्टरों की जो राय तथा कसाईखानों का जो दयाजनक हाल है उसको अंगरेजीसे अनुवाद करनेका काम मैं करनेको तय्यार हूं। एक नेक स्त्रीने कहा कि मैं इस कामके लिये धनी औरतोंके पाससे एक अच्छी रकम संग्रह करके इस सभाको दूंगी। इसके बाद सभापतिने कहा कि इस सभाके पास भी बहुत अच्छा फंड है। मैं उसमेंसे भी अच्छी रकम इस कामके लिये दूंगा पर ठीक रकम अभी नहीं बता सकता। अन्तरंग कमेटीमें विचार करके ठीक रकम निश्चित की जायगी। मैं अन्तरंग सभाकी बैठक अगले सप्ताह करूंगा और तब अपनी सभाकी ओरसे रकमकी संख्या प्रगट करूंगा।

बहनो! इस प्रकार दो घंटेके अन्दर इस सभामें बहुत कुछ काम हो गया और सबलोग मेरा एहसान मानने लगे और मेरी बड़ाई करने लगे। लेकिन तुम देखो कि इसने ...

बड़ाई है। बहनो! इस तरह जरा समझसे काम लेने पर अच्छी रुचि रखने पर और अपने मनका स्वार्थ छोड़ देने पर संसारमें कितने ही अच्छे काम हो जाते हैं। इस-लिये मैं चाहती हूं कि तुमलोग भी इस तरहके कुछ शुभ काम करना सीखो।

गिरी हुई श्रेणीकी गरीबी और उसमें मददकी जरूरत।

इसके बाद इस सप्ताहका जानने योग्य मेरा एक काम यह है कि गत रविवारकी रातके आठबजे ब्रह्मसमाजके प्रीति भोजनके जलसेमें शामिल होनेके लिये मैं गयी थी। वहां भी कुछ उपयोगी काम हुआ था। उस समय वहां आये हुए जुदे जुदे देशके और जुदे जुदे धर्मके बहुत आदमी एक पंगतमें बैठकर जीमते थे। उनका मुख्य सिद्धान्त यह था कि पीछे पड़े हुए शूद्रों और अति शूद्र या अन्त्यज समझे जानेवाले लोगोंको सुधा-रना और उनकी रीतिनीति तथा जिन्दगी सुधारकर उन्हें आगे बढ़ाना और भिन्न भिन्न मत मतान्तरों तथा संप्रदायोंके बेड़ेसे निकलकर उन्हें एक ईश्वरका माननेवाला बनाना चाहिये। बहनो! यह काम भी इस समय हमारे देशकी उन्नतिके लिये बहुत जरूरी है। क्योंकि जिनको छूनेसे हम अपवित्र हो जाते हैं उन आदमियोंकी संख्या हमारे देशमें साढ़े चार करोड़ है और वे सब बेचारे बड़ी

दुखी हालतमें, गुलामीकी दशामें और पशुवृत्तियोंमें अपनी जिन्दगी पूरी करते हैं। न उनके घरका ठिकाना है, न उनके धर्मका ठिकाना है, न उनके आधरणका ठिकाना है, न उनके धंधेका ठिकाना है, न उनके खाने-पीनेका ठिकाना है और न उनकी जिन्दगीकी कुछ कीमत है॥ ऐसी अधम स्थितिमें हमारे देशके साढे चार करोड़ आदमी दिन काटते हैं और वे देशको कुछ मदद नहीं पहुंचा सकते। ऐसी दशामें उनको रहने देना और अपनी मददमेंसे बिना कारण उनको निकाल देना हमारे ऊपर भगवानका बड़ेसे बड़ा शाप है। बहनो! यह कहनेसे मेरा मतलब यह नहीं है कि तुम अभी उनके साथ मिल जाओ और एक रूप हो जाओ। यह सब तो अन्तमें होगा ही। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है; पर वह समय अभी बहुत दूर है। उससे पहले, इस समय हमें यह करना है कि हम इन लोगोंकी तरफ दयाकी दृष्टिसे तथा जरा सी हककी दृष्टिसे देखना सीखें और हममें इस समय आसपासके संयोगके अनुसार जहांतक होसके उनकी मदद करें। उनमें शिक्षा बढ़ानेका उपाय करें। ऐसी संस्थाकी खबर लिया करें। जैसे और और मौकोंपर दान करते हैं वैसे ऐसी संस्थामें भी कुछ मदद करें। आदमी होकर भी जो पशुकी सी जिन्दगी बिता रहे हैं, जो बड़ी मलिन हालतमें रहते हैं, जो बड़ी गन्दगीमें रहते हैं, जो बहुत बुरी खुराक खाते हैं और जो बहुत छोटा काम करते

हैं उन लोगोंको सुधारना, उन लोगोंमें आदमीयत लाना और उन लोगोंको ऊपर उठाना कोई छोटा काम नहीं है। यह लापरवाही दिखाने योग्य काम नहीं है। मुंह बिचकाने योग्य काम नहीं है, और मनमें ग्लानि करने योग्य या बाहरसे नफरत करने योग्य काम नहीं है; बल्कि यह ईश्वरका बड़ा प्यारा काम है। अज्ञानियोंको ज्ञान देना, मूर्खोंको चतुर बनाना, पशुवृत्तिमें जीवन बितानेवालों को आदमी बनाना, गिरे हुओंको ऊपर उठाना, भूले हुओंको रास्ता बताना, कंगालोंको गृहस्थ बनाना, रोजगार बिना मारे मारे फिरते हुओंको रोजगारमें लगाना, तथा जो करोड़ों आदमी ईश्वरको नहीं पहचानते उनको ईश्वरकी पहचान कराना और उनके अन्दर ईश्वरज्ञान तथा ईश्वरस्नेह जगाना क्या छोटा काम है? नहीं बहनो! याद रखना कि यह बहुत बड़ा काम है और ईश्वरका बड़ा प्यारा काम है। तुम अपनेमें मुद्दतसे जमे हुए संस्कारोंके कारण, इर्द गिर्दके कमजोर संयोगके कारण, धर्मके सिद्धान्तका गूढ़ रहस्य न समझनेके कारण, प्रकृतिके नियम तथा जगतका इतिहास न जानने के कारण और हमारे देशकी भलाई के क्या क्या उपाय हैं यह ठीक ठीक न जाननेके कारण अगर पिछड़ी हुई श्रेणीके लोगों पर हालमें जितना स्नेह रखना चाहिये उतना न रखो तो यह दूसरी बात है; पर बहनो! जहां तक बने उनसे घृणा करनेका महापाप मत करना। यह मेरी तुमसे प्रार्थना है।

प्रीति भोजनके जलसेमें एक प्रसिद्ध सज्जन से मेरी मुलाकात हुई। वह बहुत धनी और पतित श्रेणीकी भलाई का बड़ा ख्याल रखनेवाला था पर उसके जीमें कई प्रश्न उठे हुए थे जिनका ठीक ठीक जवाब न पानेके कारण वह अपने ख्यालमें जरा ढीला रहता था और पूरे बलसे तथा सच्चे उत्साहसे इसमें काम नहीं कर सकता था, पर मुझसे एक घंटा बात चीत होने पर उसका सारा सन्देह दूर होगया और उसके जीमें उठेहुए बड़े बड़े प्रश्नोंका उत्तर मिलगया। अब वह हर साल हजारों रुपये पतित श्रेणीके सुधारमें खर्च करेगा और इस काममें जिन्दगी अर्पण कर देनेकी प्रतिज्ञा उसने की है। इससे मुझे भरोसा है कि बहुत थोड़े दिनमें वह कोई बड़ा काम कर सकेगा।

कितने ही विचार बिलकुल सच हैं और बहुत ऊंचे हैं तोभी हमें नहीं रुचते; इससे नुकसान होता है।

बहनो! उस गृहस्थसे मेरी क्या बात चीत हुई और कैसे उसके मनका समाधान हुआ तथा उसके क्या प्रश्न थे ये सब बातें इस विषयसे सहानुभूति रखनेवाले लोगोंके जानने योग्य है; पर इस सभामें जो कानाफूसी हो रही है उससे मुझे सन्देह होता है कि पतित जातियोंकी मदद और उनको ऊपर उठानेकी बातें सुनकर हमारी कितनी ही बहनें मुंह बिचकाती हैं और नाक भौं चढ़ाती है, इसलिये अब मैं

पर इसे बन्द करती हूं। मैं किसीका दिल दुखाना नहीं चाहती। मेरी बातें सुनकर मुंह बिगाड़ने तथा अपने आसरे पड़े हुए लाचार कंगाल लोगोंसे नफरत करनेसे ईश्वर नाराज हो और उससे हमारी किसी बहनको पाप लगजाय और उससे कुछ खराबी होजाय यह देखना मैं नहीं चाहती। इसलिये हमारी कुछ बहनोंको अभीतक जो बात नहीं रुचती उसको मैं यहीं समाप्त करती हूं और आशा रखती हूं कि जब हम दयालु हिन्दू पशु पक्षी, जीव जन्तु तथा पेड़ पत्ते पर भी दया करनेमें बड़ा पुण्य समझते हैं और वैसा करते हैं तब अपने भाई बहन मनुष्य जाति पर दया करनेमें बहन मण्डली की बहनें पिछड़ी नहीं रहेंगी।

भक्तमण्डलमें कामकरनेके नियम।

परसों एकादशीकी रातको मैं यहांके एक भक्तमण्डल में गयी थी। वहां भी मैंने बहुत अच्छा काम होते देखा था। वहांवाले अच्छी अच्छी पुस्तकें जैसे गीता, उपनिषद आदिका रहस्य समझाते थे और राम नाम रटाते थे तथा प्रभुके नामका जप कराते थे और भजन गाते थे। यह मण्डल भी बहुत ध्यान देने योग्य तथा लाभ पहुँचाने योग्य है। पर हम लोगोंकी और हमारे मण्डलोंकी खासियत ऐसी है कि हम बहुत छोटी सीमामें ही रमा करते हैं। उसी तरह इस मण्डलके अगुआ भी अपना मण्डल अच्छी तरह चलानेमें और उसमें बहुत आदमी आवें इतनेसे ही खुश हो जानेवाले थे; पर प्रसङ्गवश मैंने उन्हें

बताया कि इतनी ही सीमामें तुम क्यों भटक जाते हो। तुम्हें अपना काम खूब फैलाना चाहिये और इसके लिये आजकल बहुत कुछ सामग्री तय्यार है। पर पहली मुख्य बात यह है कि "भक्ति" शब्दका बहुत व्यापक अर्थ तुम्हें लेना चाहिये और लोगोंको अच्छी तरह यह समझाना चाहिये कि सिर्फ घड़ी भर "राम राम" रटने या कुछ भजन गाने, मिनट दो मिनट दर्शन कर लेने या दो चार वर्ष पर किसी तीर्थमें नहा आनेसे भक्तिकी समाप्ति नहीं हो जाती; अपनी जिन्दगीके हर रोजके हर एक काममें हर घड़ी भक्ति हाजिर रहे तभी वह सच्ची भक्ति कहलाती है और जब ऐसी भक्ति होती है तभी जीवनकी सार्थकता होती है। नहीं तो किसी खास मौके पर की हुई भक्ति अधूरी भक्ति है। ऐसी अधूरी भक्ति से आत्माका कल्याण नहीं हो सकता। इसलिये हमें उच्चसे उच्च श्रेणीकी भक्ति करना सीखना चाहिये और हृदयसे अनुभव करना चाहिये कि हमारी जिन्दगीकी हर एक सांस प्रभुके लिये ही है। अपनी जिन्दगीका हर एक छोटा या बड़ा काम प्रभु के लिये ही करना चाहिये और हर एक काम करते समय समझना चाहिये कि हम ईश्वर की सेवा करते है। जब ऐसा होता है तभी भक्ति की पूर्ण सिद्धि होती है। जब तक ऐसा न हो तब तक भक्ति अधूरी ही कहलाती है। इसलिये हमको चणभरका भक्त होना नहीं चाहिये, सिर्फ मन्दिरोंमें भक्त बनना नहीं चाहिये, पर

त्योहार पर ही भक्ति करना नहीं चाहिये और पिताके श्राद्धके दिन, ग्रहणके दिन, संक्रान्तिके दिन या तीर्थोंमें ही भक्ति नहीं करना चाहिये; बल्कि जिन्दगीके छोटेसे छोटे, बड़ेसे बड़े, सहजसे सहज और मुश्किलसे मुश्किल काममें भी भक्ति अवश्य होना चाहिये। ऐसा सिद्धान्त आजकलके जवानोंके मनमें बिठा देना आवश्यक है। भक्तिके मद्दे सीखनेकी दूसरी मुख्य बात यह है कि मनुष्य भाइयोंके साथ हमें प्रेमभावसे बर्ताव करना चाहिये और जैसे बने वैसे प्रकृतिका भेद समझनेके लिये अधिक अधिक ज्ञान प्राप्त करनेकी चेष्टा करना चाहिये। इसीका नाम सच्ची भक्ति है, क्योंकि ईश्वर प्रेमका और ज्ञानका स्वरूप है, इसलिये इस जगतमें प्रेम फैलाना और ज्ञान फैलाना हर एक भक्तका मुख्य काम है। प्रभुके स्वयं प्रेमस्वरूप तथा ज्ञान स्वरूप होनेके कारण प्रेम और ज्ञानमेंसे जिस उत्तमतासे उसका दर्शन हो सकता है वैसा उत्तम दर्शन और किसी रीतिसे नहीं हो सकता। जगतके जीव पर अपना प्रेम बढ़ाना और प्रकृतिका भेद समझना और इससे प्रभुकी महिमा जाननेका ज्ञान प्राप्त करना हर एक आदमीका मुख्य कर्त्तव्य है। इसलिये जैसे तुम राम नाम जपनेका, शास्त्र पढ़नेका तथा भजन गानेका उपदेश करते हो वैसे ही ज्ञान पानेका, ज्ञान फैलानेका तथा सब पर प्रेम रखनेका और प्रेम बढ़ानेका भी उपदेश करो; इससे तुम्हारा मण्डल इस समयसे कहीं बढ़कर प्रभावशाली हो जायगा।

भक्ति बढ़ानेका उपाय; जवान विद्यार्थियोंमें भक्ति प्रविष्ट करना चाहिये।

दूसरे यह बात भी भक्त मण्डलके अगुवोंको ध्यानमें रखना चाहिये कि जो आदमी अपनी खुशीसे आकर भजन मण्डलमें बैठते हैं और भजन सुनकर चले जाते हैं पर कुछ विशेष काम कर नहीं सकते या विशेष नियम नहीं पाल सकते सिर्फ वैसे लोगों के बहुत आनेसे ही सन्तुष्ट नहीं हो जाना चाहिये; बल्कि जो लोग काम कर सकते हैं और जिनके अन्दर गूढ़ संस्कार बैठ सकते हैं उन लोगोंको ऐसे मण्डलमें लानेकी कोशिश करना चाहिये। इसके लिये युवक विद्यार्थी-दल सबसे अधिक योग्य है। इसलिये उनके हाई स्कूलों और कालेजोंके मास्टरोंसे मिलकर ऐसा बन्दोबस्त किया जाय कि धर्मोपदेश सुननेके लिये आगे बढ़े हुए विद्यार्थी आवें। इस समय जमानेका रंग ऐसा है और धर्मकी शिक्षाके लिये लोगोंकी रुचि ऐसी जाग्रत है कि इसमें कितने ही अंशतक हम बहुत आसानीसे सफलता पा सकते हैं। पर इसमें सम्हाल इतनी ही रखना है कि भक्तमण्डलके अगुवों-को किसी खास सम्प्रदायकी खाड़ीमें नहीं पड़ना चाहिये और प्रचलित वहम या कुछ असर न कर सकनेवाले पुराने ख्याल या बूढ़े बनेहुए विचार इनलोगोंको नहीं बताना चाहिये; पर जो विचार सार्वजनिक हों, नया जीवन लाने वाले हों, सचमुच चमकीले हों और सबसे आसानीसे होने योग्य हों तथा जातिपांति या धर्मका भेद रखे।

सकने लायक हों उन उत्तम और उदार विचारोंको रोचक और सरल भाषामें कहना चाहिये। ऐसा किया जाय तो कुछ वर्षमें लोग सत्यधर्म पालनेवाले बन सकें और ऐसे भक्त मण्डल हमारे देशके लिये आशीर्वाद रूप हो जायं। इसलिये ऐसा करना चाहिये कि जिससे हमारे जवानोंमें अच्छे संस्कार बैठें। भिन्न भिन्न स्कूल कालेजोंके मुखियोंसे मिलकर उन्हें अपना उद्देश्य समभावें तो इस समय ऐसे कुछ आदमी निकल आवेंगे जो अपने विद्यार्थियोंको तथा उनके मा बापको समझाकर उन्हें तथा उनके लड़कोंको भक्त मण्डलमें भेजनेके लिये सलाह दें। ऐसी सलाहका असर भी अच्छा हो सकता है इसमें शक नहीं। धीरे धीरे ऐसा काम शुरू हो तथा उसका कुछ शुभ फल दीख पड़े तो उसे देखकर दूसरे स्कूल कालेजवाले भी अपने विद्यार्थियोंको सप्ताहमें एकाध वार ऐसे भक्त मण्डलमें भेजना कर्त्तव्य समभ सकते हैं। इससे बहुत बड़ा काम होगा और उसका प्रभाव भी बहुत अच्छा पड़ेगा। इसलिये परम कृपालु परमात्मासे मैं प्रार्थना करती हूँ कि हे प्रभु! तू हरिजनोंके हृदयमें ऐसी प्रेरणा कर कि हमारे देशके भक्तमण्डल ऐसी निस्पृहता और उदारता और उच्च विचारसे कामलें।

यह सुनकर उस मण्डलमें बैठे हुए एक प्राइवेट स्कूलके हेडमास्टरने कहा कि तुम जैसा कहती हो उसके अनुसार एक भी भक्त-मण्डल चलता हो तो वहां सप्ताहमें एक

बार मैं अपने स्कूलके विद्यार्थियोंका भेजना खुशीसे कबूल करता हूं।

यह सुनकर भक्तमण्डलके एक मुखियाने कहा कि बहुत करके हमारे मण्डलमें उदार और सार्वजनिक विचारोंके उपदेश ही दिये जाते हैं पर कभी कभी किसी खास सम्प्रदाय के मनुष्य अधिक संख्यामें रहते हैं तब उनको सम्प्रदायके सम्बन्धकी कुछ बातें कहनी पड़ती हैं। लेकिन अगर सब जातियोंके विद्यार्थी मण्डलसे लाभ उठाना चाहें तो हम मधुरी मैया के उपदेशानुसार चलनेको तय्यार हैं; क्योंकि हमारे मनमें किसी सम्प्रदायका पक्षपात नहीं है। सिर्फ मण्डलमें जिस जातिके आदमी अधिक आते हैं तो उनको खुश करने के लिये कभी कभी हम उनकी सम्प्रदायकी बातें कहते हैं। अगर उत्साही जवान विद्यार्थी भाई अधिक संख्यामें मण्डलमें आवें तो हम अपनी पालिसी बदलनेको तय्यार हैं। हम ऐसे आदमी चाहते हैं जो हमारा कहना सुनें और उसमेंसे कुछ समझें तथा कुछ करें। उनमें अगर ऐसे आदमी हों जो प्रभुका प्रेम पालन कर सकें तथा प्रभुका ज्ञान फैला सकें तो हम और खुश ही होंगे। हमें किसी खास जातिके या किसी खास सम्प्रदायके मनुष्योंको जरूरत नहीं है; बल्कि जिनके हृदयमें प्रभुका प्रेम जाग सके और वह प्रेम टिक सके वैसे आदमियोंकी जरूरत है। इसलिये अगर आपके हाई स्कूलके विद्यार्थी यहां आवेंगे तो हम खुशीसे उनका [illegible] करेंगे और उदार सार्वजनिक विचारोंका उपदेश देंगे।

मनमें अभिमान न आनेदेनेका ध्यान दिलानेवाले विचार।

बहनो! इस एक सप्ताहमें जो ऐसे सात बड़े काम हो गये उनमें मेरी कुछ खूबी नहीं है। इसलिये मुझे आस पासके संयोगोंका तथा अच्छी रुचिवाले स्त्रियोंका ही उपकार मानना उचित है। कुछ हर घड़ी इतने बड़े काम नहीं बनते पर इस समय ऐसा बड़ा मौका मिल गया है और तिसपर भी इस बड़े शहरकी बात ही अलग है। यहांकी बस्तीके लेखे, यहांकी शिक्षाके लेखे, यहांकी सम्पत्तिके लेखे और देशके कल्याणके लिये हालमें जो लोग जागे हुए हैं उनके लेखे थोड़े समयमें ऐसे कई कामोंका होजाना कुछ आश्चर्यकी बात नहीं है। पर ऐसा हमेशा नहीं होता और जब मैं छोटे शहरमें या देहातमें रहती हूं तो वहां ऐसे बड़े बड़े काम नहीं होते। वहां तो उसके हिसाबसे ही काम हो सकता है।

ये सब काम देखकर तुम मेरा बखान करती हो और इनका यश मुझे देती हो पर मैं अपने मनमें खूब समझती हूं कि इसमें मेरी कुछ बहादुरी नहीं है, मैं तो एक निमित्त मात्र हूं; पर कभी कभी जब प्रभुकी इच्छा होती है तब कोल भील जैसे जंगली मनुष्य भी अर्जुन जैसे महारथी को लूट लेते हैं। इसी प्रकार उसकी इच्छासे अब मैं अंधी बुढ़िया, निराधार, अपंग स्त्री तुम पर कुछ असर डाल सकती हूं। इसमें करतारका ही साथ है, मैं निमित्त मात्र हूं। अगर तुम्हें जानना हो कि यह कैसे होता है तो सुनो।

सकनी। इसमें कुछ भी निरालापन या आश्चर्यकी बात नहीं दिखाई देती पर उलटे ऐसा जान पड़ता है कि ऐसे परमार्थके काम जितना करना चाहिये उतना अब भी मुझसे नहीं होता। अब भी मुझे भूख रोकती है, नींद रोकती है और शान्ति भोजनके विचार तथा आराम करनेका अभिमानोंका आपत्र मुझे बहुत बाधा डालता है; इससे जितना चाहिये उतना काम मैं नहीं कर सकती। इस का मुझे अफसोस है। अकसर मैं सोचती हूं कि मुझे भूख और नींद न होती तो क्या ही अच्छा होता। भूख और नींदके कारण मेरा बहुत समय व्यर्थ नष्ट होता है जिससे अच्छे कामोंमें मैं बहुत थोड़ा समय लगा सकती हूं।

इसके सिवा मैं जो कुछ करती हूं वह अपनी सत्तासे नहीं, अपने बलसे नहीं और अपने धनसे नहीं, बल्कि यह सब दूसरे सज्जनोंकी मददसे ही होता है। तो भी बीचमें पड़ने वाले और जरा आगे बढ़कर काम करने वालेको कीर्त्ति मिल जाती है। यह सब देखकर मुझे तो ऐसा लगता है कि भगवद्गीतामें श्रीकृष्ण भगवानने जैसा कहा है वैसा ही है—

हमको यश देनेके लिये ईश्वरने सब तय्यारियां कर रखी हैं; हमें जरा स्वार्थ त्यागकर समझसे काम लेना आना चाहिये।

कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः।
ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः॥

अध्याय ११ श्लोक

लोगों का नाश करनेवाला बहुत वृद्धि पाया हुआ मैं काल हूं और लोगोंका संहार करने के लिये तय्यार हुआ हूं; इस लिये इस सेनामें सजेहुए योधाओं को तू नहीं मारेगा तो भी वे जी नहीं सकेंगे।

द्रोणं च भीष्मं च जयद्रथं च कर्णं तथा न्यानपि योध वीरान्।
मया हतांस्त्वं जहि मा व्यथिष्ठा युद्ध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान्॥

अध्याय ११ श्लोक ३४

द्रोण, भीष्म, जयद्रथ और कर्ण तथा दूसरे सब योधाओं को मैंने मार रखा हैं, इसलिये तू उनको मार और दुःख मत पा। युद्धकर। इस लड़ाई में शत्रुओंको तू ही जीतेगा।

तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व जित्वा शत्रून्भुंक्ष्व राज्यं समृद्धम्।
मयैवैते निहता: पूर्वमेव निमित्त मात्रं भव सव्य साचिन्॥

अध्याय ११ श्लोक ३३

इसलिये तू उठ, यश ले और शत्रुओंको जीतकर समृद्धिवाला राज्य भोग कर; क्योंकि तेरे शत्रुओंको मैंने पहले-से ही मार रखा है; तू बायें हाथसे बाण फेंकेगा तो भी काम सध जायगा। हे अर्जुन! तू निमित्त मात्र हो।

बहनो! इस प्रकार महाभारत के युद्ध के समय जैसे भगवानने सब योधाओं को मार डाला था और फिर भी अर्जुन को निमित्त बनाया था वैसे ही मुझे ऐसा लगता है कि अब हमारे देशका और हमारे भाई बहनोंका कल्याण करनेकी प्रभुकी इच्छा है, इसीसे वह हमारे जैसे असमर्थ गरीब दुखियोंको निमित्त मात्र बनाता है और मुफ्तमें यश देता है। इसलिये मेरे हाथसे जो कुछ शुभ काम होता

है और मेरा जो खयाल होता है उसमें मेरी कुछ अधि-कारी नहीं है; बल्कि देशको भलाईके लिये उसने पहले से ही ऐसा सरस प्रबन्ध कर रखा है कि जिसमें बहुत आसानीसे हमारे जैसे मामूली भाई बहनोंको भी बड़ा काम करनेका और बड़ी कीर्ति पानेका मौका मिल जाता है। प्रभुको यह इच्छा नहीं है कि यह किसी एकको ही मिले, बल्कि इस समय तो हमारे समूचे देशको जगाना है और हर एक तरहके मार्गमें अनेकानेक काम करना है और यह सब किसी एक आदमीसे या सिर्फ थोड़ेसे सुखियोंसे नहीं हो सकता; इसमें और, और हजारों भाई बहनोंकी मददकी जरूरत है। इसलिये जो भाई बहन अपना थोड़ा सा स्वार्थ त्याग सकेंगे और जरा सादी समझसे काम लेंगे उनका भी नाम रह जायगा और उनका भी काम हो जायगा। यह समय ऐसा है। इसलिये बहनो! इस अनमोल अवसरका, जहांतक बने लाभ लेनेके लिये मैं तुमसे बार बार बिनती करती हूं।

इसके बाद समय हो जानेपर मधुरी मैया के जीवन चरित्रको जानने योग्य बातें दूसरे दिन के लिये मुलतवी रहीं और अनेक प्रकार के नये नये विचार करते करते बहन मण्डलीकी सभा विसर्जित हुई।

दूसरे दिन मधुरी मैयाके भाषणमें उसके जीवन चरित्रका जानने योग्य हाल था इससे उस दिन सभा का स्थान बहनोंसे ठसाठस भर गया था। उस समय सभानेत्रीकी प्रार्थना पर मधुरी-मैयाने कहा—

बहनो! आज मैं अपनी जिन्दगीकी कुछ मुख्य २ बातें तुमसे कहना चाहती हूँ। मगर कुछ अपने बखानके लिये नहीं और न कोई आश्चर्यकी बात बताने के लिये; बल्कि यह दिखानेके लिये मैं कुछ अपनी बीती कहती हूं कि सादी जिन्दगीमें और अनेक प्रकार के सांसारिक दुःखोंमें भी अगर हमलोग चाहें तो कितनी बड़ी भलाई करसकती है। यह कहनेका उद्देश्य यही है कि मेरे समान किसी दूसरी बहनको उससे उत्तेजन मिले। अगर ऐसा हो तो मैं अपनी मिहनतको सफल मानंगी। यह प्रस्तावना करने के बाद वह कहने लगी-

मधुरी मैयाका बचपन।

बहनो! मेरा जन्म एक छोटे से गांवमें हुआ था और मेरे मा बाप बहुत गरीब थे। वे दोनों मेरी छोटी उमरमें ही स्वर्गवासी हो गये थे इससे मैं अपने काकाके घर पली। मेरी काकीका स्वभाव बहुत खराब था और उसका ख्याल ओछा था इससे वह मुझे बहुत दुःख देती थी। मेरी मासे उसकी नहीं पटती थी; उसका वैर वह मुझसे साधती थी। मेरा नाम मधुरी था पर वह जब बुलाती तब यह कहकर कि "रांड़ महुरी कहां मर गई?" वह बहुधा मुझे भरपेट खानेको भी नहीं देती थी, बात बातमें मारती और गाली देनेका तो कुछ हिसाब ही नहीं था। मेरी जैसी सात आठ वर्षकी निर्दोष टूअर लड़की पर इतना गुस्सा करनेको उसका कलेजा कैसे गवाही देता था यह सोचकर मुझे आश्चर्य होता

है और अपनी चाचीके विषय ऐसी बात कहते हुए बड़ा अफसोस होता है परन्तु मैं यह सब अप्रिय बातें तुम लोगोंको सिर्फ इसलिये बताती हूं कि तुम मेरी अपनी हालत समझ सको और सोच सको कि मैं कितने बड़े दुःखमें थी तथा अज्ञानता के कारण किसी किसी स्त्रीमें कितनी बड़ी नीचता होती है। मैं जब नौ वर्षकी हुई तो उसने मेरा ब्याह कर दिया। मेरे काका जब मुझे बुलाने की चर्चा करते तो काकी उनसे बहुत लड़ाई झगड़ा करती। इससे मेरे काका मुझपर बहुत स्नेह रखते हुए भी मुझे अपने घर नहीं बुलाने पाते थे! इतना ही नहीं काकी काकासे इस बातके लिए भी लड़ती थी कि तुम उसपर स्नेह रखते हो, उसका हाल चाल पूछते हो और उसका पक्ष करते हो! तो भी मेरे काका मुझे बहुत मानते थे।

ऐसी गरीबी और दुःखकी हालतमें भी मेरे ऊपर ईश्वर की एक दया थी और वह यह कि मेरा स्वास्थ्य अच्छा था। मेरा शरीर गांवकी दूसरी लड़कियोंसे बहुत सुन्दर था, इससे बम्बईमें रहनेवाले एक सेठके लड़केसे मेरी सगाई हुई। यह सगाई कुछ मेरे गुणके कारण, विद्याभ्यासके कारण, कुलके कारण, या प्रमाणके कारण नहीं हुई बल्कि सिर्फ सुन्दरताईके कारण और बिरादरीमें कन्याओंकी कमीके कारण उसी धनीके यहां मेरा सम्बन्ध हुआ।

कुछ अमीरोंकी भीतरी दशा।

मेरे ससुर बड़े विलासी आदमी थे और ठाट बड़ा जबरदस्त था। नौकर चाकर, गा

बहनो ! आज मैं अपनी जिन्दगीकी कुछ मु
बातें तुमसे कहना चाहती हूँ। मगर कुछ अपने
बडे लिये नहीं और न कोई आश्चर्यकी बात
के लिये ; बल्कि यह दिखानेके लिये मैं कुछ अपनी
कहती हूं कि सादी जिन्दगीमें और अनेक प्रकार के
रिक दुःखोंमें भी अगर हमलोग चाहें तो कितनी बड़ी
करसकते हैं। यह कहनेका उद्देश्य यही है कि
समाज किसी दूसरी बहनको उससे उत्तेजन
अगर ऐसा हो तो मैं अपनी मिहनतको सफल म
यह प्रस्तावना करने के बाद वह कहने लगी—

मधुरी मैयाका बचपन।

बहनो ! मेरा जन्म एक छोटे से गांवमें हुआ था
मा बाप बहुत गरीब थे। वे दोनों मेरी छोटी उ
स्वर्गवासी हो गये थे इससे मैं अपने काकाके घर
काकीका स्वभाव बहुत खराब था और उस
जोका था इससे वह मुझे बहुत दुःख देती थी
उसकी नहीं पटती थी ; उसका बैर वह मुझसे
मेरा नाम मधुरी था पर वह जब बुलाती तब य
"रांड़ महुरी कहां मर गई ?" वह बहुधा मुझे
भी नहीं देती थी, बात बातमें मारती थी
तो कुछ हिसाब ही नहीं था। मेरी जैसी
की निर्दोष टूपर लड़की पर इतना गुस्स
कलेजा कैसे गवाही देता था यह सोचकर

तथा निरुपद्रवी स्वभावसे मेरी नेक सास मुझसे बहुत प्रसन्न रहती थीं; मुझे बड़े प्रेमसे पुकारतीं और लड़कीको तरह मानती थीं।

दैव इच्छासे तीन वर्ष बाद मेरे ससुरकी जान पहचान वाला और उनके उपकारसे दबा हुआ वह पारसी मर गया। इससे उसके साझीदारोंने मेरे पतिको विदा कर दिया और उनकी जगह अपने सालेको रखा। जिस समय मेरे पति की नौकरी गई उसी समय मेरी सासके बाई धरा गयो और उनको खाट सेवन करना पड़ा। उस समय मैंने यथा शक्ति उनकी सेवाटहल और घरू दवादारू की। डाक्टर का खर्च उठाने लायक हैसियत हमारी नहीं थी। उस समय मेरी सासके पास जो कुछ मालमता था वह तथा मेरे बड़े बड़े गहने भी घरखर्चके लिए बिक गये थे। इसके बाद पचीस रुपये मासिकपर मेरे पतिको किसी बनियेके यहां एक नौकरी मिली। वह अमीरके लड़के थे इससे उनकी कुछ लम्बी दौड़ नहीं थे। ऐसे लोग जब तक गद्दीतकिये पर बैठे रहते हैं और चलती बनती है तब तक तो बड़ी बड़ी बातें करते हैं पर जब तकिया मसनद छूटता है और किसी बड़ी आफतमें आ पड़ते हैं तब ठिक नहीं सकते। इसी तरह मेरे पति भी जब लड़के थे तब बड़े चतुर गिने जाते और अपने पिताके सामने अच्छे दिनोंमें बड़ी बड़ी आशा भरी बातें करते थे। पर जब सब उड़ गया और कर्जदार हो गये तब उनकी बुद्धि कहीं दौड़ नहीं लगा सकी। उन्हें पैसा कमानेका कोई अच्छा उपाय नहीं सूझा। इससे

आदि अमीरी ठाटका बहुत कुछ सामान था। परन्तु भीतर पोल थी और यह सारा ठाट दूसरेके पैसेसे चलता था। मेरे व्याहके पांच वर्ष बाद जब वह गुजर गए तब उनका पर्दा खुला। सब सामान कर्जमें बिक गया; हमलोग बहुत गरीब और कर्जदार होगये। इससे गुजारेकी मुश्किल पड़ने लगी। उस समय मेरे पतिको एक पारसी सज्जन ने साठ रुपये महीने पर अपने आफिसमें रख लिया। पतिसे मेरी बहुत बनती थी और व्यवहारकी दृष्टिसे हम दोनोंका स्नेह बहुत अच्छा था। यद्यपि ज्ञानदृष्टिसे, हृदयकी दृष्टिसे, कविकी दृष्टिसे और प्रेमके असली स्वरूपको देखते हुए हमारा यह स्नेह अधूरा लगता था, ढीला लगता था और ऐसा लगना कुछ आश्चर्यकी बात नहीं है पर दुनियाकी नजरसे देखनेमें अधिकतर परिवारोंमें जैसा अच्छा स्नेह होता है वैसा ही अच्छा स्नेह हमलोगोंमें भी था। मेरे पति चांदीके झुनझुनासे खेलते हुए पले थे इससे उनकी बोलचालमें कुछ कड़क उनकी रीति भांतिमें कुछ हुक्माना भाव और कुछ रुखापन था; कभी कभी जब वह क्रोधमें आते तब यह सब प्रत्यक्ष दिखाई देता था और जब शान्तिमें रहते तब उन स्वभाव समझनेवाले प्रवीण लोग लख लेते थे। किन्तु मुझे किसी दिन उनकी ओरसे असन्तोष नहीं हुआ। मुझे तो इतनेसे भी सन्तोष था। काकीकी डांटडपट तथा प्यारसे मेरे पतिकी कभी कभीकी कड़ाईमें भी मुझे तो ... ही दिखाई देती थी। मेरी ऐसी चालसे और गरीबी

तथा निरुपद्रवी स्वभावकी मेरी नेक सास मुझसे बहुत प्रसन्न रहती थीं; मुझे बड़े प्रेमसे पुकारतीं और लड़कीकी तरह मानती थीं।

दैव इच्छासे तीन वर्ष बाद मेरे ससुरको जान पहचाने वाला और उनके उपकारसे दबा हुआ वह पारसी मर गया। इससे उसके साझीदारोंने मेरे पतिको विदा कर दिया और उनकी जगह अपने सालेको रखा। जिस समय मेरे पति की नौकरी गई उसी समय मेरी सासके बाई धरा गयी और उनको खाट सेवन करना पड़ा। उस समय मैंने यथा शक्ति उनकी सेवाटहल और धरू दवादारू की। डाक्टर का खर्च उठाने लायक हैसियत हमारी नहीं थी। उस समय मेरी सासके पास जो कुछ मालमता था वह तथा मेरे बड़े बड़े गहने भी घरखर्चके लिए बिक गये थे। इसके बाद पचीस रुपये मासिकपर मेरे पतिको किसी बनियेके यहां एक नौकरी मिली। वह अमीरके लड़के थे इससे उनकी कुछ लम्बी दौड़ नहीं थे। ऐसे लोग जब तक गद्दीतकिये पर बैठे रहते हैं और चलती बनती है तब तक तो बड़ी बड़ी बातें करते हैं पर जब 'तकिया मसनद छूटता है और किसी बड़ी आफतमें आ पड़ते हैं तब टिक नहीं सकते। इसी तरह मेरे पति भी जब लड़के थे तब बड़े चतुर गिने जाते और अपने पिताके सामने अच्छे दिनोंमें बड़ी बड़ी आशा भरी बातें करते थे। पर जब सब उड़ गया और कर्जदार हो गये तब उनकी बुद्धि कहीं दौड़ नहीं लगा सकी। उन्हें पैसा कमानेका कोई अच्छा उपाय नहीं सूझा। इससे

अन्तमें पचीस रुपयेकी तलब पर रहना पड़ा। वह अंगरेजी अच्छी तरह नहीं जानते थे, मातृभाषामें लिखना पढ़ना भी थोड़ा ही आता था और शरीर भी बीमार सा रहता इससे वह कोई बहुत जोरका काम भी करने लायक नहीं थे। दूसरे सजाधुर स्वभावके थे इससे अच्छी मित्र मण्डलीमें भी गुजर नहीं थी। तीसरे पिताकी जिन्दगीमें नाबालिग होनेके कारण किसीके यहां उनकी पैठ भी नहीं थी इससे कहींसे कुछ मदद भी नहीं मिल सकती थी। लाचार होकर पचीस रुपयेमें बड़ी बड़ी मुश्किलोंसे खर्च चलाते थे। इतनेमें मेरी सास चल बसीं और उसी समय, थोड़े ही दिनोंमें मेरे तीसरा लड़का हुआ। खर्च बहुत बढ़ने लगा और आमदनीकी कुछ सूरत नहीं थी। इससे मेरे बहुत ढारस देनेपरभी मेरे पति रात दिन इसी फिकरमें रहते थे और यह अवस्था मुझसे उनको अधिक अखरती थी क्योंकि मुझे तो बचपनसे गरीबीमें रहनेकी आदत थी, इससे उस स्थितिमें भी उनके कुशल और बच्चोंके खेलकूदमें मैं अपना दिन सन्तोषसे बिता देती थी; पर उन्होंने कभी गरीबी नहीं देखी थी; उनको ऐसी तंगदस्तीमें रहना बड़ा कष्ट मालूम होता था। जो अमीर बात करते करते सौ दो सौ रुपये खर्च कर डालते हैं, जो मेला देखने जाते हैं तो दस बीस रुपयेके खिलौने खरीद लाते हैं, जिनके घर कोई चन्दा मांगने आता है तो हंसते हंसते दस बीस रुपये दे देते हैं और जो पन्द्रह पन्द्रह रुपयेका पहनते हैं वैसे आदमीको पचीस रुपये मासिक तलब

पर रहने और उसीमें सारे कुटुम्बका खर्च चलाना कितना बुरा मालूम होगा यह समझना कुछ कठिन नहीं है। इसीसे मैं बहु समझाती बुझाती धीरज धराती तो भी उनका मन नहीं सम्हलता और वह सदा उदास रहते थे। इतना होने पर भी मेरे ऊपरके प्रेममें कमी नहीं दिखाते थे बल्कि दिनदिन मेरे ऊपर अधिक कृपा करते और मेरी कीमत समझते थे।

अधुरी मैयाके दुःख।

इसके बाद मुझे चौथी बार गर्भ रहा। प्रसव के थोड़े दिन बाकी थे कि इतनेमें सताइस वर्षकी उमरमें मेरे पतिको अचानक हैजा हुआ और पांच घंटे में वह मुझे रोती कलपती छोड़ चल बसे! उस समय मेरी उमर बाइस वर्षकी थी। मेरे दुःखका पार नहीं रहा। मेरे काका भी गुजर गये थे और ससुरालमें कोई न था। इधर मेरे पास एक पैसा न था, रहनेका घर भी न था और जेवर भी बिक गये थे। इससे लखपतिके लड़केकी पत्नीकी प्रसूत खैराती अस्पताल में हुई!! मेरे दिल पर बड़ी भारी चोट लगी। अबमैं क्या करूं, चार चार लड़कोंका पालन कैसे करूं इस चिन्तामें मैं आधी पागल हो गयी। एक ओर वैधव्यका दुःख, दूसरी ओर गरीबीका दुःख, तीसरी ओर चार लड़कोंके पालनेपोसनेकी चिन्ता, चौथी ओर खैराती अस्पतालमें गरीब भिखमंगोंके बीच पड़ा हुआ मेरा बद- और पांचवीं ओर प्रसूतसे शरीर तथा मनकी इन सबके कारण मेरी दशा बहुत कुढंगी हो

मैं बड़े गहरे शोकमें डूब गयी। ऐसे भारी शोकके कारण मेरे शरीरका लहू जलगया और मेरा दूध जहरीला होगया। इससे मेरा चौथा दुधमुंहा बच्चा दस दिनका होकर मेरी ही भूलके कारण—मेरे जहरीले बनेहुए दूध के कारण गुजर गया। बिजलीपर धक्का इसीका नाम है। उस समय मेरे मनकी क्या दशा थी यह सोचने का भार तुम्हीं लोगों पर छोड़ती हूं।

मैं इसके बाद चक्की पीसकर, किसीकी रसोई बनाकर और सिलाई करके बड़ी मुसीबतसे गुजारा करने लगी। लड़के पढ़ने लायक थे तो भी उनके पढ़ानेका कोई अच्छा उपाय न था, इससे वे मेरे साथ जिसके तिसके घर धक्के खाया करते और कभी २ पाठशाला जाते। मुझे एक बार एक भलेमानसने कहा था कि तुम अपने दोनों बड़े लड़कों को किसी अनाथालय या बोर्डिंगहाउसमें रख दो तो अच्छा है। पर मेरी जातिका कोई अनाथालय या बोर्डिंगहाउस न था और दूसरी जातिवालोंके यहां रखनेसे उनके बिगड़ जानेका और जातिवालोंके कुजात कर देनेका डर था। इससे मैं लड़कोंको कहीं भेजती नहीं थी! उनकी पढ़नेकी उमर थी और उनमें जेहन भी थी पर सुबीता न होनेसे वे मारे मारे फिरते थे।

दो वर्ष बाद बम्बईमें पहले पहल प्लेग आया। सब लोग भागने लगे। पर मैं गरीबिन भाग कर कहां जाती? मेरे जानेका कहीं ठौर ठिकाना न था, इससे मैं डरतीर और रोती रोती लाचारीके कारण जहांकी तहां पड़ी रही।

पर पत्थर हमेशा नंगे सिर पर गिरता है और अकाल मरको आदि बड़ी बड़ी आफतोंमें सबसे पहले गरीब ही अधिक मरते हैं। प्रकृतिका यही नियम है। इससे भूगने मेरे दोनों बड़े लड़कोंको धर दबाया और चार दिनके भीतर दोनों चल बसे। हरि! हरि! दुःखमें ही दुःख मिलता है, यह बात भूठ नहीं है। यही जीवकी सच्ची कसौटी है और इसीमें कितने ही हरिजनों को चैतन्य हो जाता है। इसी तरह मुझे मालूम होता है कि मुझे जगानेके लिये ही ये आफतें आयीं।

इसके बाद दो वर्ष बीत गये। अब मैं एक सेठके यहां रसोई बनाती थी। वह सेठ बड़ा अच्छा था इससे मेरे तीसरे लड़के को—अब तो यही एक आंखका तारा बेचारा रह गया था—कुछ कुछ दिया करता। यह छोटे मनकी सेठानीसे देखा नहीं जाता था। इससे वह नहीं चाहती थी कि मेरा लड़का उसके घरमें आवे। और लड़के तो नटखट होते ही हैं। इससे सेठानी मेरे लड़केके ऊधम मचानेसे और भी चिढ़ती। एक बार मेरे लड़केसे खेलते खेलते दो पैसे की कांचकी डिबिया फूट गयी। इस पर सेठानी आग-बबूला होगयी और मेरे लड़केको ऐसी ऐसी गालियां सुनाने लगी जो मुंह पर लाने लायक नहीं। यह देख कर मैं अपने लड़केको उसके घर आने ही नहीं देती थी। लेकिन मुझे उसके घर बहुत देर तक रहना पड़ता था इससे मैं अपने लड़केकी पूरी पूरी सम्हाल नहीं रख सकती थी। वह अधमी लड़कोंके साथ खेलनेके लिये चाहे जहां जाता और घूमता फिरता। रात रातको घर

ऐसा होते होते एक दिन वह खो गया। तबसे उसका आज तक पता नहीं मिला। कोई कहता कि उसे बाघ उठा ले गया। कोई कहता कि वह पानीमें डूब गया होगा। कोई कहता कि किसीके साथ परदेश चला गया होगा। कोई कहता कि उसको जात मारनेके लिये दूसरे धर्मवाले फुसला ले गये होंगे। इस तरह जितने मुंह उतनी बातें होतीं। इससमें क्या हुआ यह तो ईश्वर ही जाने। लेकिन आज तक उस लड़केका कहीं पता नहीं चला।

अपनी भूलसे अपने प्यारे लड़के मर जाते हैं!

उस समय मेरे दुःखका पारावार नहीं था क्योंकि भगवानने मुझे अनमोल रत्न जैसे देवताओंके तरसने योग्य चार लड़के दिये थे और वे सब मेरी ही भूलके कारण—मेरे पास उनकी रक्षाका उपाय न होने के कारण चले गये। यह घाव मेरे लिये ऐसा वैसा नहीं था। चार चार लड़के जाते रहे। मैंने बहुत अफसोस किया जिससे मेरा लहू गर्म हो गया। इससे मेरा दूध जहरीला बन गया। इसके कारण एक लड़का सौरीमें मर गया। अगर उस वक्त मैं मनको स्थिर रखती तो मेरा दुधमुंहा बच्चा न मरता। पीछे दो लड़के जो प्लेगसे मरे वह भी मेरी ही भूलके कारण और मेरी ही नासमझीके कारण। अगर मैंने उन लड़कोंको किसी अनाथालय या बोर्डिंग हाउसमें रख दिया होता तो प्लेगसे उनका काम तमाम न होता। या मुझे कोई अड़चन न होती या मदद मिली होती और मैं कहीं और जगह चली

गयी होती तो प्रेगमें मेरे दो लड़के न मारे जाते। इसके बाद मेरा चौथा लड़का मेरी ही भूलसे खो गया। उस समय मुझे लड़केसे ऐसा प्यारा लगा इससे लड़का आवारा बनता फिरा। मैंने तलबका सुख देखा इससे लड़का खो गया। अगर उस वक्त मनको ऐसा मजबूत बनाया होता कि पहले मेरा लड़का और पीछे मेरी नौकरी और उस अनदेखनी मैठानीको भी छोड़ दिया होता तथा किसी और जगह नौकरी ढूंढ़ ली होती तो मेरा लड़का मेरे साथ रहता और खोने न पाता। पर अफसोस ! मौके पर कुछ नहीं सूझता, मामला बिगड़ जानेपर सबको अकल आती है। अगर पहले यह सब सूझता तो ऐसी दुर्मति क्यों होती ?

राते रोते अंधी हुई।

इस तरह मेरी भूलसे मेरे चार लड़के जाते रहे, यह चिन्ता आनेसे मेरे दुःखका समुद्र उमड़ आया। उस समय मेरी जिन्दगी दूभर मालूम होने लगी और मौत अच्छी लगने लगी। मैं भगवानसे मौत मिलने के लिये प्रार्थना करने लगी। पर मांगनेसे कहीं मौत मिलती है? कैसे मिलती ? अभी तो बहुत कुछ भोगना था, बहुत कुछ सहना था तब मौत बेचारी क्यों कर आती ? सो मौत नहीं आयी। मेरा अफसोस बढ़ता गया और मैं बहुत रोने कलपने तथा छाती पीटने लगी। बहुत रोने बिलखने और अफसोस मेरा मजबूत मगज भी खाली होगया; इससे सिर-

लगा और आंखें दर्द करने लगीं। इस तरह एक वर्ष बीता। इस बीचमें आंखों में बहुत दवाएं डालीं पर एक तरफ दवा और दूसरी तरफ आंखोंसे बहती हुई आसुओंकी धार; इस हालतमें दवाएं बेचारी क्या कर सकतीं? इसका फल यह हुआ कि मैं अंधी हो गयी। मानो मेरा पहलेका दुःख कम समझकर तीस वर्षकी उमरमें अंधापा मेरे सामने आ खड़ा हुआ! अब मैं क्या करूं? मेरा कोई हित कुटुम्ब नहीं, पासमें पैसा नहीं, मेरा शरीर बीमार और तिसपर आधी जिन्दगी काटनेको बाक़ी रहते रहते मैं दोनों आंखों से चौपट होगयी। अब मेरा निर्वाह कौन करे? मेरे समान दुखिया और अनाथ आदमीको अपने घर पर रख कर उसका निर्वाह करदेने का महान सच्चा परमार्थ करना क्या आपलोगों ने सीखा है? कहीं ठौर ठिकाना न होनेसे अन्तमें मेरी दुर्दशाकी बातें सुनकर ईश्वरके कृपापात्र हरिदास महाराजने मुझे अपने राम मन्दिरमें लेजा कर रखा और खानेपीनेको देने लगे। इसके बाद धीरे धीरे मुझे ढारस बंधता गया और मेरी तन्दुरुस्ती सुधरती गयी। अब मैं मन्दिरमें झाड़ू बहारू करती, बर्तन मांजती और वहां की गायों का मूत गोबर साफ करती। दोपहरको तथा संध्याको वहां जब रामायण होती तो मैं बड़े ध्यानसे सुनती तथा नये नये ईश्वरके भजन सीखती। ईश्वरकी कृपासे मेरा गला अच्छा था और स्मरणशक्ति भी तेज थी इससे बहुतसे भजन मुझे याद हो गये। रामायणके कितने ही [illegible] गूढ़ रहस्य मैं समझ लेती थी क्योंकि अब मेरा और

किसी बातमें ध्यान नहीं था। अब यही विचार पक्का हो गया था कि धर्ममें उन्नति करके अपनी जिन्दगी सफल करूं। इससे ईश्वरी ज्ञान सम्बन्धी मुख्य मुख्य बातें मैं बहुत जल्द समझ लेती थी और उसके सांचेमें अपनी जिन्दगीको ढालती थी। मन्दिरमें रहनेके बाद हरिदास महाराजकी कृपासे मेरा जीवन सुधरने लगा। पर अफसोस ! यह हालत बहुत दिन नहीं रहने पायी। शायद इसमें भी कोई ईश्वरी संकेत हो। मैं उस मन्दिरमें सिर्फ दो वर्ष सुखसे रह सकी।

मन्दिरोंमें रहने वाले बदमाश साधु।

इसके बाद वहां रहनेवाला एक साधु मुझसे छेड़ छाड़ करने लगा। वह बदचलन था, पर उस घड़ी और कोई अच्छा आदमी न मिलने और इस साधुको सेवासामग्री जुटाने तथा कामकाज में चतुर होनेके कारण हरिदास महाराज उसको निबाह ले जाते थे। लेकिन वह साधु उनकी आंख बचाकर मुझे खाने पीनेमें और काम काज में हैरान किया करता था। जैसे मैं झाड़ बहारू ठीक ठीक कर देती तो भी वह यह कह कर सबको दिखाता कि ठीक नहीं बहारा और मुझे धमकाता। बर्तन मैं सदाकी तरह मांजती पर वह छींप काट कर कहता कि यह जूठा लगा है। खानेके लिये जली या कच्ची रोटी देता, तरकारी नहीं देता और दालमें कभी बहुत पानी मिला कर देता, कभी जूठा दे देता। बार बार

मारता और ऐसी २ बातें कहता जिनसे मेरा जी दुखता था ये सब बातें महाराजजीसे छिपाकर करता। दो एक बातोंका इशारा मैंने महाराजजीसे किया था जिससे उन्होंने उसको डांटा था पर वह इससे और मुझ पर कुढ़ने लगा। पीछे ऐसी छोटी छोटी बातोंकी शिकायत महाराजसे करना भी मुझे पसन्द नहीं आया। अगर वह साधु भाग जाय तो सब काम स्वयं हरिदास महाराज को करना पड़ेगा इस ख्यालसे मैं तरह दे गयी और चार महीने तक यह दुःख भोगा। लेकिन पीछे मुझे डर हुआ कि यह किसी दिन मुझे फंसा न दे, क्योंकि म पंथी हूं तो भी १० वर्षकी उमर है और रूप है इससे वहां रहनेमें मुझे डर मालूम होने लगा। "मरहरि धरहरि को करे जननि सुतहिं बिष देइ!" जब साधुकी ऐसी नीयत है तब क्या ठिकाना? न जाने ऐसे कितने साधू भेषधारी दुराचारी साधु नाम और मठ मन्दिरोंको कलंकित कर रहे हैं। ऐसे दुराचारियों की करतूत से अगर लोगोंकी श्रद्धा साधुओं के ऊपर से हट जाय तो आश्चर्यही क्या है?

एक भली सेठानी से परिचय।

मैं मन्दिर से निकलना चाहती थी पर कुछ सुबीता न होनेसे लाचार होकर अपमान सह रही थी और बहुत सावधानीसे दिन काटती थी। इतने में ईश्वरकी कृपासे सूरतका एक सेठ हवा खाने के लिये उधर आये जिधर मैं रहती थी। उनकी सेठानी बड़ी धर्मात्मा थी। उस

मैं भजन बहुत अच्छे लगे। वह वहां डेढ़ महीने रही। इसमें मेरा उसका गहरा स्नेह होगया। मैं उसके साथ सूरत चली गयी। वहां उसने मुझे बड़े आदरसे रखा।

मलदूर दलका एक महात्मा।

उस भले मठ के यहां बहुतेरे अच्छे २ आदमी आया करते थे। उनमें गुजरातका हीराभाई नामका एक उत्साही जवान गृहस्थ भी था। उससे मेरी जान पहचान हो गया। वह मुझे अपनी बहन मानकर मेरी उन्नतिके लिये हर रोज तीन घंटे मिहनत करने लगा और अच्छी २ पुस्तकें पढ़कर मुझे सुनाने लगा तथा ऊंचे ऊंचे विचार मुझे बहुत सरल भाषामें समझाने लगा। इससे मेरा ज्ञान बहुत बढ़ने लगा। अब मुझे और किसी तरह की उपाधि नहीं थी, इससे यह ज्ञान मेरे हृदयमें बहुत अच्छी तरह टिकने लगा और थोड़े समयमें मैं अनेक स्त्रियों से बहुत अधिक अनुभवि हो गयी।

बहनो! हीराभाई मुझे सिखानेके लिये इतना बड़ा उत्साह रखता था और हृदयकी उमंगसे इतना अधिक स्नेह करता था तथा इतनी बड़ी मिहनत करता और बहुत दूरसे आनेका इतना कष्ट उठाता था कि उसका ऐसा परमार्थी स्वभाव देखकर मुझ पर गहरा असर हुआ। न जाने हम दोनोंमें पहलेका ऐसा क्या सम्बन्ध था कि हीराभाई मुझ पर अपनी सगी बहनसे भी अधिक स्नेह करता और मैं भी उसको बड़े भाई या पिताके बराबर समझती थी। अब तो बहुत आदमियोंसे मे-

परिचय होगया है और मेरा दरजा तथा मान भी बढ़ गया है तथा मेरे दयाके कामोंकी लोग कदर भी करते हैं; इससे वे लोग मुझ पर बहुत सद्भाव और प्रेमकी दृष्टि रखते हैं। पर अभीतक हीराभाईके ऐसा परोपकारी और उदार तथा निर्लोभी मनुष्य मैंने दूसरा नहीं देखा। दिन दिन उसपर मेरा स्नेह बढ़ने लगा और ज्यों २ मैं जी लगाकर उससे ज्ञान सम्पादन करने लगी त्यों त्यों उसके मनमें मेरे लिये ऊंचे विचार जमने लगे। उसने समझा कि ज्ञान देनेके लिये यह बहुत योग्य पात्र है, ऐसा पात्र सब जगह नहीं मिलता; इतना ही नहीं बल्कि इसको जो ज्ञान दिया जायगा उसका असर बहुत दूरतक फैल सकेगा। यह बात हीरा भाई पहलेसे ही समझता था इससे वह मेरे लिये बहुत ख्याल रखने लगा। पर वह एक छापेखानेका मनेजर था और मैं जिस सेठके यहां रहती थी उसका घर छापेखाने से बहुत दूर था, इससे मेरे यहां जाने आनेमें हीराभाईका बहुत समय निकल जाता था। इसके सिवा हमने देखा कि यहां तो हीराभाई जब संपर कर आता है तब कुछ ज्ञानकी बातें होती हैं और मैं अन्धी होने से अकेली कुछ कर नहीं सकती। इससे हीराभाई ने सलाह की कि मैं उसके साथ रहूं तो अच्छा। यह बात मुझे भी पसन्द आई। सेठ सेठानीसे अनुमति लेकर मैं हीराभाई के यहां रहने लगी।

अज्ञान स्त्रियोंकी मूर्खता भरी डाह।

दुःख मानो यह समझ कर कि अब भी मेरा कष्ट थोड़ा है मुझे ढूंढ़ा करता था। इसमें हीराभाईके यहां रहने में भी एक विघ्न आ पड़ा। बात यह है कि सज्जन हीरा की बहू बड़ा अनदेखनी, बड़ी वहमी तथा गर्की मिजाजकी थी और किसी आदमीकी असली भलाई वह समझ नहीं सकती थी। वह ऐसी थी कि उसका ख्याल बुराई की तरफ जल्द दौड़ जाता था। इससे वह हीराभाईसे कलह करने लगी और मुझे भी कुछ कड़े शब्द तथा मिहना थोठर सुनाने लगी। पीछे यह बात बढ़ गई, क्योंकि वह सब आदमियोंके सामने खुसमखुसा कहने लगी कि इसके पति और अंधोका सम्बन्ध ठीक नहीं है, इसमें कुछ गड़-बड़ है। इस तरह चुटीली चुटीली बातें कहने लगी। तो भी हम इसकी परवाह नहीं करते थे। तब वह साफ साफ कहने लगी कि यह रांड मेरे पतिको वार बैठी है। बताइये अब मेरी फजीहतमें क्या बाकी रही? सारे मुहल्ले में उसकी यह बात चलने लगी और वह दिन दिन मुझे तंग करने लगी। साधु चरित्र हीराभाईका मन मेरा अपमान देखकर बहुत दुखी होने लगा। उस समय उसने अपनी स्त्रीको समझानेके लिये बहुत मिहनत की पर किसी तरह वह हठीली और मानवाली समझ नहीं सकी। अन्तमें हैरान होकर हीराभाईने दिन उसके साथ बहुत झगड़ा किया जिससे वह कर मायके चली गयी और दो वर्ष तक नहीं

दो वर्षमें हीराभाईके रात दिनके लगातार परिश्रमसे मेरा ज्ञान बहुत बढ़ गया। भक्तिके विषयमें, धर्मका रहस्य समझनेमें समाजसुधारमें, देशोन्नतिमें, राजनीतिमें, बालकोंके पालन पोषण में, बीमारोंकी सेवा सहायता करनेमें, स्त्रियोंकी दशा सुधारनेमें और परमार्थमें जीवन बितानेके विषयमें जी खोलकर बड़ी आसानी और असरकारक रीतिसे अपने विचार प्रकट करने लायक शक्ति मुझमें आ गयी। इसके बाद मैंने हीरा भाईसे कहा कि आप ऐसा कोई बन्दोबस्त कर दें कि जिस से मैं कुछ काम कर सकूं। यह बात हीराभाईको भी पसन्द आयी। उसने मुझे विधवा विश्राममें रहनेका बन्दोबस्त कर दिया।

हीराभाईका ऐसा परमार्थ देखकर वारवार मेरे जी में यह बात आती कि यह मजदूरों में महात्मा है। महात्माके सम्बन्धमें हमलोगोंका ख्याल बहुत अधूरा है, इससे हमलोग समझते हैं कि भगवावस्त्रमें, मन्दिरोंमें, पहाड़ों में और गुफाओंमें महात्मा होते हैं। पर हर'एक जातिमें, हर एक धर्म्ममें, हर एक देशमें और हर एक पोशाकमें भी सच्चे महात्मा होते हैं। यह बात हमलोग अच्छी तरह नहीं जानते, इससे हीराभाई जैसे गरीब आदमीको हम महात्मा नहीं कह सकते। पर मैं समझती हूं कि हम अपनेमें इस प्रकार काम करनेवाले भाई बहनोंको जब महात्मा मान सकेंगे और समझ सकेंगे तभी हमारी ठीक ठीक उन्नति [illegible]।; क्योंकि हिमालयके ऊपरके महात्मा हमारी

वर्त्तमान दशामें जितना काम आ सकती है उससे होरा भाई जैसे महात्मा आजकल हमलोगोंके लिये कहीं अधिक उपयोगी हो सकते है। इसलिये मैं तो अब होरा भाई के ऐसे महात्माओंको ही खोजती हूं।

मधुरी मैया विधवाविश्राम में पहुंची।

इसके बाद विधवाविश्राममें बहुत शान्तिसे रहनेका मुझे मौका मिला। मैं स्त्रियोंकी मंडलीमें धर्मकी तथा स्त्रियोंके कर्त्तव्यकी और आत्माकी उन्नतिके उपायोंकी बातें करने तथा और भजन गाने लगी। लोगों पर इसका बहुत अच्छा असर हुआ, क्योंकि ईश्वरकी कृपासे मेरी वाणीमें कुछ बल था और मैं जो कुछ कहती वह बाहरसे ही नहीं बल्कि दिलसे कहती थी; इससे मेरे कहनेका असर मैं जितना समझती थी उससे कहीं अधिक लोगों पर होता था। यह देख कर मेरी हिमाम बढ़ गयी जिससे मैं धीरे धीरे मेले ठेलों में छोटे मोटे व्याख्यान देने लगी। इस तरह दिन दिन मेरी यह शक्ति अधिकाधिक खिलने लगी। मेरे व्याख्यानोंसे लोग खुश होने लगे और फिर तो हर एक सभामें मुझे चाह कर बुलाने लगे। मैं बड़ी खुशीसे हर जगह जाने लगी और परम कृपालु परमात्माकी बख्शी हुई शक्तिको उनके लिये और उनके बालकोंके लिये खर्च करने लगी। इससे दो वर्षमें मेरा नाम सब जगह प्रगट होगया और मेरे कामका बड़ा बखान होने लगा। पर मेरा बहुत बखान हो और मुझे बहुत इज्जत मिले ... मण्डलीके यहांसे बारबार मेरा बुलावा आवे और

विश्रामकी प्रधान स्त्रीको कोई बात भी न पूछे यह बात उससे नहीं सही गयी; इससे वह मुझसे डाह करने लगी। डाहका बीज तो आरम्भके दो चार महीने बीतते ही जम गया था पर एक वर्ष बाद वह बहुत बढ़ गया और दूसरा वर्ष तो मैंने बहुत अपमान सह कर उसको मातहतीमें बिताया; क्योंकि परमार्थके लिये अपमान सहनेकी टेव डालनेका मेरे लिये बड़ा बढ़ियां मौका था। इससे वर्ष भर उसका अपमान मैं सहती रही। पर ज्यों ज्यों समय बीतने लगा त्यों त्यों प्रधान स्त्री शान्त होनेके बदले अधिकाधिक क्रोध दिखाने लगी और पीछे वह मुझे उस आश्रम से निकलवा देनेके उपाय करने लगी। पर मेरे विषय में अच्छे विचार रखनेवाले आदमी उस संस्थाके मुखियों में इतने अधिक थे कि वह कुछ कर नहीं सकी।

डाहका फल—बुराईसे भलाई होती

अन्तमें उससे नहीं रहा गया। उसने कहा कि ... आश्रममें या तो मधुरी मैया नहीं या मैं नहीं। अगर इसको यहां रखना है तो मैं यह आश्रम छोड़ कर चली जाऊंगी। इस प्रकार उसने खुल्लमखुल्ला और सच्ची धमकी उस आश्रमके ट्रस्टियोंको दी। तब मैंने उन आश्रमके मुख्य मुख्य सद्गृहस्थोंसे कहा कि भाइयो! मेरे ऊपर आपका बड़ा उपकार है। आजतक आपने मुझे इस आश्रममें आश्रय दिया इसके लिये मैं शुद्ध अन्तः करणसे

करे और इस आश्रमको बहुत उपयोगी बनावे। मुझे अब कृपा करके विदा दीजिये। भगवानकी दयासे मैं और कहीं गुज़ारा कर लूंगी क्योंकि देशके लिये और भगवानके प्रीत्यर्थ सेवा करनेकी इच्छा रखनेवाले निर्लोभी मनुष्यको दिनमें एकबार भोजन मिल जाना कोई बड़ी बात नहीं है। इसलिये मेरे कारण प्रधान स्त्रीको यह आश्रम छोड़ना पड़े यह उचित नहीं है। मुझे ही विदा देनेकी कृपा कीजिये। मैं स्वयं विदा मांगती हूं। इस वास्ते मेरे लिये आप ज़रा भी चिन्ता न करें, क्योंकि भगवान दयालु है। सेवा करने वालों और अनाथोंको वह ज़रूर ही मदद करता है। आप मेरी फ़िकर न करें और मुझे खुशी से विदा दें। यह बात ट्रस्टियों को नहीं रुची। उन्होंने प्रधान स्त्री को बहुत समझाया पर उसने किसी तरह नहीं समझा। अन्तमें सबने मिलकर उसका इस्तेफ़ा मंज़ूर किया और कुछ दिन आश्रमकी स्त्री सेक्रेटरीको स्थानापन्न प्रधान बना कर दो महीने बाद स्थायी रूपमें मुझे वह पद दिया।

मधुरी मैयाके परमार्थके काम।

ईश्वरकी कृपासे अब मुझे बहुत कुछ सुभीता हो गया है और मुझे जितना चाहिये उससे कहीं अधिक सामान मिल जाता है। इसका कारण यह है कि जो भगवानके लिये भगवानके बालकों तथा अपने भाईबन्दोंकी ... करनेमें जिन्दगी लगाता है उसको मदद स्वयं

करता है। इससे जगतके बड़ेसे बड़े ओहदेवाले और धनी तथा विद्वानसे विद्वान आदमी भी लोगोंका जितना भला कर सकते हैं उससे कहीं अधिक ईश्वरके ऐसे कृपा-पात्र भक्त कर सकते हैं। उनमें निजका स्वार्थ न होनेसे एक तरहका ऐसा अलौकिक बल आ जाता है जो दुनियादार आदमियोंमें नहीं होता। इससे ऐसे सेवा करने वाले आदमी व्यवहार चतुर तथा बहुत चलती वाले आदमियोंसे कहीं अधिक काम कर सकते हैं। इसीसे मैं भी कुछ कुछ अच्छा काम कर सकती हूं तथा दूसरे कितने ही आदमियोंसे कितने ही अच्छे काम करा सकती हूं। जैसे—जबसे मैंने इस आश्रमको सम्हाला है तबसे आजतक ३ वर्षमें ईश्वर-कृपासे विधवाओंके सात बालकोंको मैं बचा सकी हूं; सत्तर बाल विधवाओंको विधवाश्रममें सेवा करनेके लिये भेज सकी हूं और ११५ छोटे बच्चोंको अनाथालयोंमें तथा गृहस्थोंके यहां भेजनेका सौभाग्य प्राप्त कर सकी हूं। रास्तेमें भटकते हुए सैकड़ों बीमार भिखमंगोंको अस्पताल भिजवाया है और मुझे विश्वास है कि सब भाई बहनोंकी मददसे और कितने ही अच्छे काम इस आश्रममें रह कर मैं कर सकूंगी। इसके सिवा बाहर आने जानेसे कितने ही काम हो जाते हैं। और फिर मैं कहती हूं कि यह सब करनेमें मेरी कुछ भी खूबी नहीं है बल्कि यह सब लोगोंकी सहायताका फल है और परम कृपालु परमात्माको अपने बालकोंकी सेवा करना रुचता है तथा हमारे देशका कल्याण करना उसकी इच्छा है इसीसे सब

काम बनता जाता है और लोगोंको परमार्थके विचार सूझते जाते हैं। यह सब कहकर मैं तुमलोगोंको यही बताना चाहती हूं कि जो मेरी तरह सेवाके काममें लगते हैं उनके लिये बहुत बड़ा मैदान खुला पड़ा है; उनके लिये बहुत बड़ी मदद तयार है; उनके पक्षमें हजारों आदमी हैं और उनके लिये थोड़ी मुद्दतमें बहुत बड़ी सफलता है; इसमें कुछ भी सन्देह नहीं।

ईश्वर प्रत्यक्ष जान कर काम करो, तुम्हें अवश्य सफलता मिलेगी।

दिव्यदृष्टि महात्मा संजयने कहा है—

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥

अ० १८ श्लो० ७८

जहां योगेश्वर श्रीकृष्ण है और जहां उनके साथ धनुषधारी अर्जुन है वहीं शोभा है, वहीं लक्ष्मी है, वहीं बड़ी विजय है, वहीं दिन दिन बढ़ने वाला ऐश्वर्य है और वहीं अचल नीति है। ऐसा मेरा मत है।

मतलब यह कि गीतामें यह अन्तिम श्लोक कहकर व्यासजी हमलोगोंको समझाते हैं कि जहां प्रभु हाजिर है यानी प्रभुको हाजिर जानकर जहां काम होता है और

इसके अनुसार काम करनेवाला धनुषधारी अर्जुन है अर्थात् प्रभुका मित्र बना हुआ जाग्रत जीव है—पुरुषार्थ करने वाला हरिजन है, अपने बन्धुओंकी सेवा करने वाला देश सेवक है—वहीं असली शोभा है, वहीं पूरी लक्ष्मी है, वहीं बड़ीसे बड़ी विजय है, वहीं दिन दिन बढ़ने वाला ऐश्वर्य है और वहीं अचल नीति है। यह मेरा मत है कह कर दिव्य चक्षुवाले महात्मा संजय हमलोगोंको बताते हैं कि भगवान योगियोंका ईश्वर है इसलिये अगर तुम उसके साथ मिल जाना चाहो तो वह तुम्हारे साथ मिल जायगा। अगर तुम अर्जुनकी तरह उसका मित्र बनना चाहो तो वह तुम्हारा मित्र हो सकता है। अगर तुम उसको अपने हृदयमें पधरवाना चाहो तो वह भी वहां पधार सकता है और अपना परिचय तुम्हें दे सकता है। यहां तक कि जहां वह है—जहां उसकी मददसे काम लिया जाता है वहीं सब प्रकारकी सफलता और सब प्रकारका सुख होता है। इसलिये बहनो! उसको अपने साथ रखकर, अपने हृदयमें रखकर, अपने भाइयोंमें देखकर तथा उसको अपने सामने हाजिर जानकर परमार्थका काम करना सीखना चाहिये। ऐसा करें तो हर एक काममें हमारी विजय, विजय और विजय ही है, इसमें कुछ भी शक नहीं। अगर किसी भी लाइनमें आगे बढ़ना हो तो विजय पानेकी यह कुंजी याद रखना। इससे पेचदारसे पेचदार ताला भी आसानीसे खुल जायगा।

इत्यादि फेरबदलसे घबराना नहीं; दशा तो पलटा ही खाती है ।

बहनो ! अब विचार करो कि कहां मैं देहातकी रहने वाली, कहां मैं गरीब मा बापकी बेटी, कहां काकीका जुल्म, कहां सासरेकी अमीरीका सुख, कहां दुधमुंहे चार बेटे, कहां रंडापा, कहां बेगानी अस्पताल, कहां प्रेमसे चार दिनमें दो लड़कोंका मरना, कहां अज्ञान सेठानीकी गुलामी, कहां लड़केका गायब होना, कहां आंखोंका जाना, कहां अंधापेका दुःख—अभी ! यह दुःख दुश्मनको भी मत देना—कहां मन्दिरका आश्रय, कहां लफंगे रामप्रसाद साधुकी लुचई, कहां सूरतकी नेक सेठानी, कहां हीराभाई की भलाई, कहां उसका बहूका लगाया हुआ कलंक, कहां विधवा विश्राम, कहां उस आश्रमकी अध्यक्षा महाशयाका द्वेष और कहां इतने बड़े परमार्थके काम !! यह सब देखकर मुझे तो अपने जीवनमें बड़ा विचित्रता मालूम होती है। और सबके जीवनमें कुछ फेरबदल होता ही है, पर मेरा जीवन तो हजारोंमें किसी किसीका होता है; क्योंकि दुनिया फेरबदलवाली है. इसलिये ऐसे फेरफारका धक्का सहना और उस समय घबरा न जाना, बल्कि हिम्मत और शांति रखना ही खूबी है। क्या ऐसा बड़ा फेरबदल और मुशकिलें सहना हिम्मतका काम नहीं है ? बेशक यह बहुत बड़ा हिम्मतका काम है । इसलिये याद रखना कि शूर वीरताकी, मरदानगीकी, बहादुरीकी

हिम्मत कुछ एक ही तरफ नहीं रखना चाहिये और कभी किसी मौकेपर काम आनेवाली एक ही विषयकी बहादुरी से सन्तोष नहीं करना चाहिये बल्कि हमें ऐसी सच्ची बहादुरीकी जरूरत है कि हम अपनी जिन्दगीमें होने वाले हर एक छोटे बड़े फेरबदल के समय धीरज रखें और हिम्मत रखें। तभी हमारी खूबी कहलायगी।

अब हमें परमार्थका दुःख सहना सीखना चाहिये।

यह दुःख सहनेका आनन्द।

बहनो! इसके सिवा मैं दूसरी बात आपको यह समझाना चाहती हूं कि हर एक आदमीकी जिन्दगीमें फेरबदल होता है, क्योंकि फेरबदल प्रकृतिका नियम है, इसलिये जिन्दगीमें कितनी ही बार सुखका प्रसंग आता है और कितनी ही बार दुःख का भी प्रसंग आता है और वह खुश होकर न भोगें तो लाचारीसे भोगना पड़ता है। जैसे-किसीको लड़का न होनेका दुःख है; किसीको लड़केके कहना न माननेका दुःख है; किसीको लड़केके मर जानेका दुःख है; किसीको मा बापके मर जानेका दुःख है; किसीको गरीबीका दुःख है; किसीको वहमका, मूर्खता का तथा रोगका दुःख है और किसीको रंडापेका दुःख है। इस प्रकार कितने ही तरहके दुःख कितने ही आसियों को हैं और ये सब दुःख वे जिन्दगी भर भोगते हैं और उन्हीं में छटपटाया करते हैं तथा रोया धोया करते हैं। पर ...का दरवाजा खोल देनेवाला थोड़ी देरका परमार्थका

दुःख लोग नहीं सह सकते; इसीमें संसारके दुःख बहुत भारी हो जाते हैं। अगर हम लोग परमार्थ का दुःख सहना सीखें तो हमारे निजके सब दुःख उड़ जायं और कितने ही दुःख तो सुखके रूपमें बदल जायं। परमार्थका दुःख सहनेमें इतना बड़ा फल है। तो भी हमलोग ऐसे अभागे हैं कि सारी जिन्दगी जगतके निकम्मे निकम्मे दुःख सहते हैं और अधिक अधिक पापमें पड़ते हैं। पर जो दुःख सहनेसे पुण्य मिलता है उस परमार्थके दुःखको हम नहीं सह सकते; इसीसे हमारी खराबी होती है और इसीसे हम पीछे रह जाते हैं! जैसे—कितनी ही स्त्रियां अपनी देवरानी, जेठानी, ननद सास या भौजाईका मेहना ओठर और ताना तिशना सारी जिन्दगी बिना कारण सहती हैं; परन्तु परमार्थका काम करनेमें कोई आदमी जरा भी अपमान करे तो उसको नहीं सह सकतीं। कितनी ही बहनें वैधव्यके दुःखके कारण पीटपीट कर अपनी छाती तोड़ती हैं और अपने लहूको पानी बना डालती हैं और जिन्दगीको घटाकर बेमौत मर जाती हैं; परन्तु प्रभुके लिये प्रभुके बालकोंकी सेवा करनेका दुःख सहनेको उन्हें नहीं सूझती और जिनको सूझती है उनको भी यह काम करना पसन्द नहीं है। इसी तरह वे अपने छोटे छोटे दुःखोंको बहुत भारी समझती हैं और दुःखका विचार करके उसमेंसे नये नये दुःख निकालनेमें ही अपनी जिन्दगी गंवा देती है; पर परमार्थके सहज सहज दुःख सहनेकी हिम्मत उनमें नहीं आती। इसलिये मैं जो कुछ तुम लोगोंको समझाना चाहती हूं, उसमें मुख्य

कामकी बात यह है कि हमें परमार्थका दुःख सहना सीखना चाहिये। जब हम यह दुःख सहेंगे तभी हमारे जगतके दुःख घट सकेंगे ; क्योंकि परमार्थका दुःख सहनेमें एक तरह का ऐसा आनन्द है कि उसकी लज्जतमें हम व्यवहारके सब दुःख भूल जाते हैं। परमार्थका दुःख सहनेमें जो खूबी है जो मिठास है और जो मीठा नशा है वह ऐसा अलौकिक है कि उसकी खुमारी चढ़ जाने पर जगतका कोई दुःख किसी गिनतीमें नहीं लगता। इसलिये बहनो! अगर तुम्हें संसारका दुःख घटाना है तो परमार्थका दुःख सहना सीखो। अपना दुःख घटानेका यह सहज उपाय है और यह प्रभुका प्यारा काम है। व्यवहारके दुःखमें फंसे न रहकर परमार्थका दुःख भोगना सीखो। परमार्थका दुःख भोगना सीखो।

दुःखसे भी कुछ भला होता है और भलाई के लिये ही दुःख आता है

मैं अपनी जिन्दगीका फेर बदल कह कर तुम लोगोंको उसका तीसरा सिद्धान्त यह समझाना चाहती हूं कि ईश्वर हमको जो दुःख देता है उस दुःखमें भी उसकी कुछ दया होती है और हमारे आगे बढ़नेके लिये ही तथा हमारी स्थितिमें कुछ फेर बदल करनेके लिये ही वह हमको दुःख देता है ; इसलिये हमको दुःखके समय ढारस रखना सीखना चाहिये और यह विश्वास रखना चाहिये कि इससें भी प्रभु का भला करेगा। मैं कुछ अच्छी अच्छी पोथियोंमें

थोड़ी हुई बातें तुमसे नहीं कह रही हूं। बल्कि मेरी जिन्दगीमें जो जो घटनाएं हुई है और जो जो तजरबे मुझे पक्के तौर पर हुए है उन्हींकी बातें मैं कहती हूं। जैसे—मैं यह मानती हूं कि अगर बचपनमें मेरे मा बाप न मरगये होते और अपनी काकीकी कड़ाईमें मुझे न रहना पड़ता तो शायद मुझमें आजकी सी कोमलता न आ सकती। इसके बाद मेरी काकीने अपने घरसे मुझे निकालनेके लिये उतावलापन करके नौवर्ष की उमरमें मेरा ब्याह कर दिया; उसमें भी मुझे तो प्रभुकी दया ही दिखाई देती है; क्योंकि ऐसा होनेसे मैं एक अच्छी सासके मातहत जाने पायी थी और वहां मुझे जिन्दगीके उपयोगी गृहस्थी की शिक्षा मिली। अपनी नेक सासके हाथ तले ही मैंने घरका सब काम काज सीखा था। अच्छी रसोई बनाना, अचार, पापड़, रायता, मुरब्बा आदि तय्यार करना मैंने उन्हींसे सीखा था तथा देने लेनेका तरीका, मेहमानोंका सम्मान, लोगोंके साथ गृहस्थके तौर पर बात चीत करना इत्यादि सब उन्हींसे सीखा था। पीछेसे जब मुझे अमीरोंके घर रंडापेके समय नौकरी करनी पड़ी तब यह सब बहुत काम आया था। अगर सीखने योग्य उमरमें काकी मुझे अपने घर रख छोड़ती तो मैं गृहस्थीका यह सब काम काज न सीख सकती। इसलिये उसने जो मुझे अपने घरसे अलग कर दिया उसमें मुझे प्रभुकी दया ही दिखाई देती है। इसके बाद हमारे ऊपर गरीबीका दुःख आ पड़ा और आलीशान इमारतके बदले हमें पांच रुपये

भाड़ेकी कोठरीमें रहना तथा पचीस रुपयेकी तलब पर गुजारा करना पड़ा। इस गरीबीमें भी अब मैं ईश्वरकी दया समझती हूं क्योंकि इससे मुझे गरीबीके दुःखका अनुभव हुआ और जब मौका मिला तब उन दुःखोंको घटानेकी मेरी बड़ी इच्छा हुई। अगर गरीबीका दुःख मैंने स्वयं न भोगा होता तो शायद उसका मुझपर इतना अधिक असर न पड़ता। इसलिये मुझे अमीरीका सुख दिखाने और फिर गरीब बनानेमें प्रभुका हाथ और उन्नतिकी सीढ़ी दिखाई देती है। इसके बाद चार सुन्दर लड़कोंका सुख देने और फिर उन्हें लेलेनेमें भी मुझे तो प्रभुका कुछ गहरा संकेत ही दिखाई देता है; इन दो तरहके परस्पर विरुद्ध अनुभवोंसे भी मैं बहुत कुछ सीख सकी हूं और उनसे मैंने जगतको मोह और वैराग्यकी दृष्टिसे देखा है। इसलिये इन अच्छे और बुरे दोनों प्रसङ्गोंसे भी मेरी कुछ उन्नति ही हुई है। प्लेग की आफतमें चार दिनमें मेरे दो लड़के मर गये, इस दुर्घटनासे भी मैं बहुत सचेत हुई हूँ और अपनी भूलसे बच्चोंका बहुत बड़ा नुकसान होता है यह बात मैं अपने छोटे लड़केके गुम हो जानेसे खूब समझ गयी हूं। गरीबी आदमीका कचूमर कैसे निकाल देती है इसका तजरबा भी मुझे इस बातसे हो गया कि मेरे लड़के गरीबीके कारण ही प्लेगसे मर गये। इससे मैं भलीभांति समझ रही हूं कि गरीबोंकी मदद करनेकी कितनी बड़ी जरूरत है तथा हर एक आदमीको अपनी स्थिति सुधारने और ऊंचे दरजेमें [illegible] कितनी बड़ी जरूरत है। इसी प्रकार मुझे अपने

डापेसे भी बहुत कुछ शिक्षा मिली है; उन बड़ीसे बड़ी और यंकरसे भयंकर आफतोंपर भी विचार करनेसे बहुत कुछ समझने योग्य बातें मिल सकती हैं। क्योंकि उस समय मेरे तिकी दशा ऐसी हीन थी और उनका मन ऐसा निराश हो गया था, उनका चित्त अन्दरसे ऐसा दुखी रहता था कि इस हालतमें अगर वह बहुत दिनोंतक जीते तो वह उल्टे बहुत दुखी होते। या तो वह पागल हो जाते या ऐसी किसी शारीरिक व्याधिमें फंस जाते जिसके परिणाममें मौत हो होती। उनको लड़कोंके मरनेका दुःख देखना पड़ता तो बहुत अखरता। इसके सिवा मेरे जीमें यह आता है कि आगे चल कर ईश्वरकी मरजी मुझे जिस स्थितिमें रखनेकी थी उसमें वह रुकावट डालते; इसीसे उसने यह रुकावट दूर कर दी हो तो कुछ आश्चर्य नहीं है। वैधव्य स्त्रियों पर बड़ीसे बड़ी विपद है और उस समय सुप्रवृत्ति वाली; प्रेमवाली तथा सत्वगुणी स्त्रियोंमें और जो अपने पतिका सुख भलीभांति भोग चुकी हैं उनमें वैधव्यके साथ ही गूढ़ वैराग्य आ जाता है। मुझमें भी उस समय वैसा वैराग्य आया था। इसलिये यह सब पाठ सीखनेके लिये ईश्वरने मुझे ऐसी दशामें डाला हो तो कुछ आश्चर्य नहीं है। इसके बाद नासमझ सेठानीकी गुलामीसे भी मुझे आगे बढ़नेका मौका मिला। जनस्वभाव समझनेका तथा अज्ञानता कारण हमारी बहनोंके मनमें कितनी अधिक संकीर्णता रहती है और उसे दूर करनेकी कितनी जरूरत है तथा से मा बाप अपने लड़कोंमें कितने बड़े दुर्गुणोंके बीज बो जाते

हैं यह सब जाननेका मौका मुझे इस गुलामीमें मिला है। इसके बाद तीस वर्षकी भरी जवानीमें मैं अन्धी हुई। इसमें भी मुझे कुछ दैवी हाथ दिखाई देता है। यद्यपि मैं उस समय चीखती चिल्लाती थी कि हाय! हाय! इतनी कम उमरमें अन्धापा! अगर बुढ़ापेमें अन्धी हुई होती तो ठीक होता; हाय दैया! हाय मैया! इस जवानीमें अन्धापा कैसे सहा जाय? परन्तु अब मुझे ऐसा मालूम होता है कि वह मेरी भूल थी। क्योंकि जिस समय मेरी स्मरणशक्ति अच्छी थी, जिस समय मेरे शरीरमें बल था, जिस समय मेरी कल्पनाशक्ति खिलती जाती थी और जिस समय मेरी दूसरी इन्द्रियां फुर्तीली थीं उस समय अन्धापा आनेसे उन सबकी मददसे मैं बहुत कुछ काम कर सकी। अगर बुढ़ापेमें अन्धी होती तो इन सबकी मदद बिना मैं कुछ न कर सकती। फिर मुझे ऐसा जान पड़ता है कि अगर मैं अन्धी न हुई होती तो इतने ऊंचे दरजे पर नहीं चढ़ सकती; क्योंकि मुझपर दूसरे दूसरे लोगोंको दया न उपजती और दूसरी मामूली विधवाएं जैसे रोते कलपते अपना दिन काटती हैं वैसे ही मेरा समय भी बीतता। पर अन्धी होनेसे मुझ पर लोगोंको अधिक दया उपजी और अन्धी होनेके कारण ही मैं विशेष जागृत हुई। यह दुःख मुझपर न पड़ा होता तो अपनी आत्माका कल्याण करनेका इतना बड़ा बल मुझमें न आ सकता; बल्कि मैं लोकलाजकी रिवाज और व्यवहारकी चालाकीमें ही पड़ी रहती। पर ... मरजी मुझे इस तरह रखनेकी नहीं थी, इससे उसने

मेरी आखें ले लीं। इसके बाद हरिदास महाराजके मन्दिरमें रामप्रसाद साधू की छेड़छाड़में भी मुझे प्रभुकी कुछ दया ही दिखाई देती है। अगर ऐसी आफत न आती तो उस मन्दिरमें चौका बर्तन करने और चक्की पीसनेमें ही मेरी सारी जिन्दगी चली जाती और मुझे बाहर जाने या और कोई अच्छा काम करनेकी न सूझती। इसके पश्चात् हीरा माईकी बहूकी नीचतामें भी मुझे प्रभुकी दया ही दिखाई देती है; क्योंकि जब कभी अच्छा काम हाथमें लिया जाता है तब पहले लोग उल्टी बातें कहते ही हैं; इसमें कुछ सन्देह नहीं। उससे डर कर भड़क जायं तो कुछ काम नहीं हो सकता। मुझमें जो ऐसा बल आया कि मेरी बाबत चाहे कोई कितनी ही खराब बात कहे मुझे क्रोध नहीं आता वह हीराभाई की बहूके आक्षेपनके कारण ही। अगर वह उस समय मेरे सिर ऐसा कलंक न लगाती और मुझे ऐसी बात बरदाश्त कर जानेकी आदत न होती तो आज मैं ऐसी ऐसी बातें न सह सकती। इसके बाद विधवा-विद्यामकी अध्यक्षा मुझसे डाह करने लगी; इसमें भी मुझे कुछ प्रकृतिका हाथ और अपनी उन्नति ही दिखाई देती है। क्योंकि उसकी डाहके कारण मैं अधिक प्रसिद्ध हुई और उस आश्रमकी सुखिया मेरा अधिक ख्याल रखने लगी। इतना ख्याल पहले नहीं रखती थी। इसका फल यह हुआ कि मुझे आश्रमकी अध्यक्षाका स्थान मिला और उस महिलाने दूसरे शहरमें दूसरा आश्रम खोला। यद्यपि अध्यक्ष पदकी

मुझे इच्छा न थी और उनमें मैं कुछ खुश नहीं हुई थी तो भी इतना तो मुझे स्वीकार करना चाहिये कि उस दरजे और सत्ताके कारण मैं कुछ अधिक काम कर सकती हूं। इस-लिये मुझे तो इसमें भी ईश्वरका कृपा हो दिखाई देती है।

दुनियामें दुःख तो होता ही है; इसलिये दुःखमें भी ढारस रखना चाहिये।

बहनो! ये सब बातें बताकर मैं तुमको यह समझाना चाहती हूं कि हमारे दुःख निरा दुःख ही नहीं हैं, बल्कि उनमें भी प्रभुके कुछ संकेत होते हैं और अगर उनसे लाभ उठाना आवे तो उनसे भी हमारी उन्नति होती है। फिर हमें न रुचे तो भी जबतक हम इस दुनियामें हैं तबतक किसी न किसी तरहके दुःख मिलते ही हैं। इसलिये उनको शान्तिसे भोग लेना चाहिये और दुःखोंका भी सदुपयोग करना तथा उनसे भी कुछ अच्छा अर्थ निकालना और उसका अनुभव करना सीखना चाहिये। ऐसा करनेसे सच्चा दुःखमें भी दयालु ईश्वरका आशीर्वाद दिखाई देता है। घरगृहस्थीके व्यवहारमें प्रसङ्गवश जो अच्छी बुरी घटनाएं हों तथा उनसे जो सुख दुःख हो उसको धीरज और शान्तिसे भोग लेनेकी हमें आदत डालना चाहिये। ऐसा करना ही हमारा मुख्य काम है, क्योंकि स्त्रियां क्षमाका रूप हैं और क्षमाका अवतार समझी जाती हैं, इसलिये जिन्दगीमें आ पड़नेवाले हर एक प्रसङ्ग पर सहन-शीलता रखने और बुरे प्रसङ्गोंको भी हिम्मतसे सहलेनेमें

ही स्त्रियोंकी सच्ची खूबी है और यही स्त्रियोंकी कसौटीका समय है। तुम अगर मेरे व्यावहारिक सादे जीवनकी बातोंसे ऐसा अच्छा अर्थ ले सको और उसे अपने जीवनमें ढाल सको तो मैं अपनी मिहनत सफल समझूंगी। मैं प्रार्थना करती हूं कि परम कृपालु परमात्मा ऐसा बल तुमको दे। इस शुभ आशीर्वादके साथ मैं अपना आजका भाषण समाप्त करती हूं कि तुम्हारे हाथसे परमार्थके बड़े बड़े काम हों।

इसके बाद सभानेत्रीने कहा कि देवी मधुरी मैयाने आज हमको जो अमृत पिलाया है उसपर और कुछ कहना उसकी खूबीको ढक देनेके बराबर है। क्योंकि अपने बिलकुल सादे और अनुभवी ढङ्गसे उन्होंने जो उत्तम सिद्धान्त हमें समझाये हैं उनमें कुछ अधिक इस विषयमें कहनेकी, शक्ति, अनुभव तथा ज्ञान तो हमारी मण्डलीकी किसी बहनमें नहीं है। इसलिये उसकी कुछ आलोचना न करके इस सलाहके साथ मैं आजकी सभा बरखास्त करती हूं कि मधुरी देवीका हर एक वचन हृदयमें रखकर उसको जीवनमें लगाना और घर गृहस्थी आनेवाले दुःखके समय हिम्मत रखना तथा उस दुःखसे अच्छा अर्थ निकालना सीखना। यही मेरी विनती है। अन्तमें यह कहना है कि "स्त्रियोंकी आरोग्यता" पर अगले सप्ताह मनोहरी बहनका व्याख्यान होगा। उस [illegible]र पर सब बहनें पधारनेकी कृपा करें।

इसके बाद दूसरे सप्ताह जब बहनमण्डलीकी सभा जुड़ी तब स्त्रियोंकी आरोग्यताके विषयमें मनोहरी बहनने नीचे लिखा भाषण किया—

जीवनका मूल्य—हमारी जिन्दगीका मोल नहीं हो सकता, वह अनमोल है ।

इस दुनियामें सबसे ऊंची, बड़ीसे बड़ी कीमतीसे कीमती, श्रेष्टसे श्रेष्ट और महत्वकी जो वस्तु है वह हमारी अनमोल जिन्दगी है। जिन्दगीसे बढ़कर अधिक महत्वकी वस्तु इस जगतमें और कुछ नहीं है। क्योंकि जिन्दगी परमात्माका प्रकाश है; जिन्दगी प्रभुका चैतन्य है; जिन्दगी आत्माको पहचाननेका द्वार है; जिन्दगी सब जीवोंको प्यारीसे प्यारी वस्तु है और जिन्दगी प्राणियों को मिला हुआ ईश्वरका आशीर्वाद है। इसका कारण यह है कि इस जगतमें जो कुछ अच्छे से अच्छा काम हुआ है, जो कुछ अच्छेसे अच्छा काम होता है और जो कुछ अच्छेसे अच्छा काम होगा वह सब जिन्दगीकी बदौलत । अगर जिन्दगी बनी न रहे तो किसीसे कुछ भी न हो सके। इसलिये जिन्दगी सबसे अनमोल चीज है। करोड़ों रुपये दें, सारी दुनिया का राज्य दे दें और इस दुनियामें जो कुछ अच्छेसे अच्छा है वह सब दे दें तो भी कोई आदमी या कोई देवता भी हमारी जिन्दगीका एक क्षण नहीं दे सकता। जिस समय मृत्यु आयी हो और सिर्फ आखिरी सांस

बाकी हो उस समय थोड़ी और सांसके लिये, थोड़ी देर और जीनेके लिये तीनों लोकका राज्य दे दें तो भी जिन्दगी नहीं मिल सकती। ऐसी अनमोल जिन्दगी है; इससे शास्त्रोंमें कहा है कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चार प्रकारके महान पुरुषार्थ जिन्दगीकी मददसे ही हो सकते हैं। इसलिये जिन्दगीकी सद्भावना, उसकी कीमत समझना और उसका बुरा उपयोग न करना हमारा प्रधान कर्त्तव्य है। इस कर्त्तव्यको पूरा करनेके लिये हमें अपनी जिन्दगीकी कदर समझना चाहिये और इसका उपाय जानना चाहिये कि वह कैसे अधिकसे अधिक उपयोगी हो सकती है तथा कैसे बढ़ सकती है। इस विषय पर विचार करनेसे ही पहली बात ध्यानमें आती है वह यह है कि जिन्दगीका सम्बन्ध स्वास्थ्य से है। अगर शरीर और मनका स्वास्थ्य अच्छा हो तो जिन्दगीसे अच्छा लाभ लिया जा सकता है। अगर इन दोनोंका या दोनोंमेंसे किसी एकका स्वास्थ्य कमजोर हो तो जिन्दगीसे कम लाभ लिया जा सकता है। इसलिये अपने शरीर और मनको आरोग्यता रखना हमारा मुख्य कर्तव्य है। इस जगतमें सबसे मूल्यवान वस्तु जिन्दगी है और ऐसी अनमोल जिन्दगीका आधार शरीर और मनकी तन्दुरुस्ती है, इसलिये हमें ऐसे उपाय जानना और करना चाहिये जिनसे हम हमेशा आरोग्य रह सकें; क्योंकि जिन्दगीका पाया आरोग्यता पर है। अपने शरीर तथा मनको आरोग्यताके विषयमें जरा भी बेपरवाही नहीं दिखाना चाहिये।

आरोग्यताके साधारण नियम।

आजकल लोग देखते हैं कि हमारी सब बहनें अकसर बीमार पड़ती हैं; यहांतक कि दिन पर दिन उनके शरीरकी बनावट अधिक कमजोर और नाजुक होती जाती है और उनका कद और वजन दिन पर दिन घटता जाता है। अगर ऐसा ही होता रहा तो भविष्यमें उनकी सन्तानोंकी कैसी अधम दशा होगी यह विचारना कुछ मुश्किल नहीं है। पीढ़ी दर पीढ़ीके घाटे और रोजके घाटेको कौन पूरा कर सकता है? ऐसा हमेशेका घाटा कोई भी पूरा नहीं कर सकता। इसलिये अपना शरीर सुधारनेका हमें ध्यान रखना चाहिये, इतना ही नहीं बल्कि इसका कारण जानना चाहिये कि हमारा शरीर क्यों कमजोर होता है और उसका कद तथा वजन क्यों घटता जाता है!

बच्चे जननेके नियम जानना चाहिये।

(१) बच्चे पैदा करनेके लिये वैद्यकशास्त्र तथा धर्मशास्त्रमें जो नियम हैं उनको हम नहीं जानतीं और नहीं मानतीं, इससे हमारे बच्चे जैसे होने चाहियें वैसे नहीं होते बल्कि पेट से ही सड़े हुए होते हैं। इस का कारण यह है कि हम अपनी घर गृहस्थीके दूसरे कामोंमें जितनी लापरवाही नहीं रखतीं उतनी लापरवाही इस मुख्य विषयमें रखती हैं और झूठी शर्मकी तथा रिवाजोंकी गुलामीके कारण कितनी ही बार जान बूझकर भी हम इसमें बहुत गहरी भूलें

कर देती है, इससे हमारे तथा हमारे बालकोंके शरीर निर्बल होते हैं। इसलिये बच्चे पैदा करने के नियमों पर हमें खास ध्यान रखना चाहिये। पर अफसोस है कि गंवार गरीब किसान ज्वार बाजरेका बीज बोनेमें जितनी सावधानी रखते हैं तथा जानवरोंके शौकीन गाय भैंस और घोड़ियोंमें अच्छे बच्चे पैदा करनेके लिये जितना ख्याल रखते हैं उतना ख्याल भी हम मनुष्य रत्न पैदा करने के लिये नहीं रखतीं। इसका फल अच्छा कैसे हो! सो पहले गर्भाधान के लिये स्त्री पुरुषकी उमर तथा शरीर सम्पत्तिका विचार करना चाहिये और अपने मनभावक सन्तान कैसे उत्पन्न हो सकती है इसके नियम जानना चाहिये। यह अपने बालकोंकी तन्दुरुस्ती सुधारने के लिये पहली युक्ति है और यह सब जानना तथा इस के अनुसार अपना शरीर सुधारनेका मुख्य उपाय है। परन्तु इसके लिये खास पुस्तकें पढ़ना चाहिये और तरह तरहके व्याख्यान सुनना चाहिये। इसके बिना ऐसे नाजुक विषयका, हौसलेके विषयका, रिवाजके विषयका और जिसमें धर्मकी सलाह आ घुसी है उसका एकदम खुलासा नहीं हो सकता। मुझे आज के एक ही भाषणमें ऐसी ऐसी कितने ही बातें कहना है, इससे मैं आज इस विषयोंको बहुत थोड़े में कहती हूं।

बच्चोंको पालनेमें ध्यान रखना चाहिये।

(२) बच्चे पैदा करनेके प्राकृतिक नियम हम नहीं जानतीं और नहीं मानतीं। इस भारी भूलके कारण

ही कमजोर बच्चे पैदा होते हैं और उन कमजोर बच्चोंको पालना भी हमें नहीं आता, इससे ये बच्चे दिन पर दिन और कमजोर होते जाते हैं। बच्चोंको पालना कोई छोटी मोटी नहीं बड़े कामकी बात है। तिसपर भी हममें कितनी ही ऐसा समझती हैं कि ये बच्चे तो रोते गाते यों ही बड़े हो जायंगे। पर इस समझमें बड़ी भारी भूल है। और उसका फल यह होता है कि हमारे देशमें छोटे बच्चोंकी मृत्यु बहुत अधिक होती है। इसका और कोई कारण नहीं है, खास यही कारण है कि जिस ढङ्गसे बच्चोंको पालना चाहिये उस ढङ्गसे हम उनको पालना नहीं जानतीं, इसीसे, हमारी भूलके कारण ही, हमारी लापरवाहीके कारण ही हर साल हमारे देशमें लाखों बालक मर जाते हैं। अगर इस विषयमें जरा ध्यान दिया जाय, मामूली समझसे काम लिया जाय और ऋतुके अनुसार उनकी खुराक रखी जाय, सोने बैठने, घूमने फिरनेमें नियमसे काम लिया जाय तथा बचपन में ही, पलनेमें ही कुछ अच्छी आदतें उनमें डाली जायं और कुछ अच्छे गुणोंका बीज उनमें बोया जाय तो हर साल लाखों बालक मरनेसे बचाये जासकते हैं। इसमें कुछ भी शक नहीं है। पर अफसोस है कि बालकोंको कैसे पालना, कैसे खुश रखना, उनसे कैसे कामलेना और उनको हंसते खेलते कैसे ज्ञान देना चाहिये ये बातें हमारी बहनें नहीं जानतीं। इसीसे उनके निर्दोष बालक [illegible] जाते हैं और बेचारी भोली भाली स्त्रियां

अपनी भूलका दोष भाग्य और दैवपर डाला करती है। परन्तु बहनो! याद रखना कि दूसरोंकी भूलसे हमारी जितनी खराबी होती है उससे कहीं ज्यादा हमारी खराबी अपनी भूलसे होती है। और यह खराबी किसी बेगानेको नहीं भोगनी पड़ती बल्कि अपने प्यारे बच्चोंको ही भोगनी पड़ती है। इसलिये बच्चोंके पालनेमें हम जितना ही कम ध्यान देती हैं उतनी ही हमारी नालायकी है। इतना ही नहीं, बच्चोंके पालनेमें हम जितना ही कम ध्यान देती है उतना ही ईश्वरके सामने दोषी होती है; क्योंकि परम कृपालु परमात्माने अपनी अमूल्य पवित्र आत्माको किसीको न देने योग्य बड़ीसे बड़ी थाती हमें सौंपी है और उसकी यह थाती हमारा बालक है। इसलिये जैसे बने वैसे बालकोंको अच्छेसे अच्छे ढङ्गसे पालना चाहिये और उनको अच्छीसे अच्छी शिक्षा देना चाहिये। यह हमारा मुख्य कर्तव्य है

स्त्रियोंके हाथमें बालकोंके पलनेकी डोर है। इससे उनकी महिमा बड़ी है।

बहनो! इस संसारमें स्त्रियोंका जो इतना आदर है वह किस लिये? पुरुष पसीना गिराते हैं, दूर दूरके देशोंमें भटकते हैं और हमारे लिये भयानक जोखों उठाते हैं और हम घरमें बैठी बैठी आरामसे सिरकी पटिया संवारा करती हैं, साबुन मला करती है और हिंडोले पर बैठ कर झूला करती हैं। क्यों? हममें ऐसी क्या बात है कि पुरुष

पड़ोसे कड़ो मिहनत करते हैं और हम घरकी ठंढी छायामें मौज करती हैं। इसका एक ही कारण है और वह यह है कि हमारे हाथमें पलने की डोर है, हमारे हाथमें बालकोंके पालनेका सबसे बड़ा और पवित्र काम है। इसलिये हमको घरकी ठंढी छायामें और शान्तिसे रहनेका प्राकृतिक स्वत्व है। बुद्धिमान जन कहते हैं कि जिसके हाथमें स्वर्गकी डोर है उससे भी बढ़कर भाग्यशाली वह है जिसके हाथमें बालकोंके पलनेकी डोर है। वह अधिक जिम्मेदारी-वाली है और अधिक अधिकारवाली है। इसका कारण यह है कि जिस बालककी डोर हमारे हाथमें है उस बालकको सुधारना बिगाड़ना हमारे हाथमें है। मतलब यह कि बालकके झूलेकी डोर कुछ सूत या सनकी डोर नहीं है बल्कि मनुष्यकी जिन्दगी सुधारनेकी डोर है; यह देशके भविष्यकी डोर है, यह एक आत्माकी उन्नतिकी डोर है, यह पलनेमें झूलनेवाले बालकके भाग्यकी डोर है और यहभी ! बालकके पलनेकी डोर मोक्षका दरवाजा खोलनेकी डोर है। इसीसे महात्मा लोग कहते हैं कि जिनके हाथमें स्वर्गकी डोर है उनसे भी उन माताओंका दरजा बढ़कर है जिनके हाथमें बालकोंके पलनेकी डोर है। जिनके हाथमें स्वर्गकी डोर है उन देवताओंका राजा भी किसी देवताको मोक्षधाममें नहीं भेज सकता, वह उसको सिर्फ स्वर्गका सुख दे सकता है और उसका पुण्य समाप्त होने पर फिर उसको नीचे धकेल देता है; परन्तु जिनके हाथमें पलनेकी डोर है वे पवित्र माताएं आत्मे

तो अपने पुत्र पुत्रियोंको महात्मा बनाकर, जिन्दगी सार्थक कराकर, चारासी लाखके फेरेंसे छुड़ाकर परमकृपालु परमात्माकी सेवामें—मोक्षधाममें भेज सकती हैं। इतना बड़ा बल स्त्रियोंमें है और इतनी बड़ी सत्ता स्त्रियोंमें है। पहलेके प्राचीन मनु जैसे महात्माओंने स्त्रियोंका आदर करनेका आदेश किया है और कहा है कि जिस घरमें स्त्रियां दुखी होती हैं उस घरका सत्यानाश हो जाता है। बहनो! अब विचार कीजिये कि स्त्रियोंकी जो इतनी बड़ी महत्ता प्राचीन ऋषियोंने कही है वह किस लिये? क्या उनके शरीरको सुघराई के लिये? कहिये कि नहीं। उनकी दिखाऊ नजाकतके लिये? कहिये कि नहीं। तब क्या सिर्फ घड़ी भर की पशुवृत्ति के मामूली सुखके लिये इतना बड़ा अधिकार हमें दिया गया है? कहिये कि नहीं। तब हमको विचारना चाहिये कि इतना बड़ा अधिकार हमको किस लिये दिया गया है। बहनो! याद रखना कि हमारे मटक मटक कर बोलने, नखरेदार चाल चलने, ऊपरी प्रेम दिखाने, नये नये जेवर और कपड़े पहनकर अंगड़ाई लेने और छूटी लटोंकी खूबी, पैजनी की झनझनाहट तथा चेहरे की सुन्दराइटके लिये मनु महाराजने नहीं कहा है कि

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्रा फलाः क्रियाः॥

"जहां स्त्रियोंकी पूजा होती है यानी जहां स्त्रियां सुखी रखी जाती हैं वहां देवता वास करते हैं। और जिसके

यहां स्त्रियोंका सम्मान नहीं होता उनको किसी कामका फल नहीं मिलता और उनकी सारी मिहनत व्यर्थ जाती है।"

बल्कि हमारे हाथमें पलनेकी डोर है, यानी प्रभुके बालकोंको हमारे हाथमें थाती है, पवित्र निर्दोष आत्माओंकी हमारे पास थाती है और उनकी उन्नतिका भार हमारे ऊपर है इसीसे—उन्हींके कारण हमारा ऐसा सम्मान है। अगर उनकी मदद न होती तो हमारी इतनी बड़ी कीमत कभी नहीं हो सकती। इसलिये बालकोंको अच्छे ढङ्गसे पालना, प्रकृतिके नियमानुसार पालना, देशकालका संयोग देखकर पालना तथा अपनी स्थिति और देशका भविष्य देख कर उनको पालना हमारा मुख्य काम है। परन्तु यह काम हम अच्छी तरह नहीं जानतीं, इसीसे हमारे बालकोंका शरीर कमजोर होता है, उनका मन कमजोर होता है और वे कम उमरवाले होते हैं। ऐसा न होने देनेके लिये हमें बालकोंका पालन करनेके बड़ेसे बड़े, सहजसे सहज, प्रथमसे प्रथम और अन्तिमसे अन्तिम नियम जानना चाहिये और उनके अनुसार चलनेकी कोशिश करना चाहिये। अगर उनमेंसे थोड़ा बहुत भी माना जाय तो हमारे बालकोंके शरीर तथा मनका स्वास्थ्य सुधरे बिना न रहे। इसलिये बालकोंका पालन करनेके विषयमें खास ध्यान देनेके लिये मैं सब बहनोंसे बारबार विनती करती हूं।

खाने पीने में लापरवाही करनेसे कितने ही रोग होते हैं।

(१) हमारे बालक कमजोर रहते है, कमजोर होते है और बीमार रहा करते है इसका तीसरा कारण यह है कि उनकी खुराकके विषयमें हम बहुत लापरवाही दिखाती है, इससे उनकी तन्दुरुस्ती पर बहुत बुरा असर पड़ता है। जिन्दगीको बनाये रखनेमें खुराक बहुत जरूरी चीज है; इसलिये खुराकके विषयमें हर एक आदमीको खास खबरदारी रखना चाहिये और उसमें भी बालकोंके लिये तो बहुत विचार विचार कर काम करना चाहिये। बालकोंका स्वभाव बड़ा खवकड़ होता है। उनको छोटी उमरमें देखने, सुनने, सूंघने और छूनेका जितना मन होता है उससे अधिक खानेका मन होता है। इसका कारण यह है कि बचपनमें उनकी दूसरी इन्द्रियां बहुत तेज नहीं होतीं पर भूखकी वृत्ति और खानेकी रुचि उनमें बहुत मजबूत होती है और खानेकी चीजका गुण दोष जाननेकी उनमें समझ नहीं होती; इससे जो कुछ मिलता है उसको वे पहले मुंहमें ही डालते हैं यहां तक कि बहुतेरे बालकोंको यह अन्दाज भी नहीं मिलता कि अब पेट भर गया है, नहीं खाना चाहिये। इससे मौका पाने पर वे जरूरतसे कहीं ज्यादा खा जाते हैं। उनका ऐसा करना कुछ आश्चर्यकी बात नहीं है, क्योंकि उस समय उनका यह कुदरती स्वभाव होता है; परन्तु इस

समय अगर मा बाप लापरवाही दिखावें तो उनका बहुत बुरा हाल होता है। वे राख, मिट्टी, कोयला आदि अला बला खाजाते हैं; इतना ही नहीं बल्कि कितनी ही ऐसी चीजें भी-जो बालकोंको बहुत रुचती हैं—मौका मिलने पर उनकी अंतड़ी जितनी हजम कर सकती है उससे कहीं अधिक खा जाते हैं। और कितनी ही नादान माताएं समझती हैं कि लड़के जितना ही ज्यादा खायं उतना ही अच्छा। इससे वे उनको ठूस ठूस कर खिलाती हैं; लड़के खानेमें इनकार करते हों तो भी हठ करके, उन पर गुस्सा होकर और उनको मार मार कर भी खिलाती हैं। बालकोंकी जठराग्नि बालकोंके ही अनुसार होती है, इससे उन कोमल बालकोंकी नन्ही सी जठराग्नि सख्त चीजोंको नहीं पचा सकती। इसलिये उनको सादी और सहजमें पचने लायक चीजें देना चाहिये। इसके बदले कितनी ही माताएं उनको घी शक्करकी और बड़ी उमरके आदमियोंसे भी न पचने योग्य मिठाई खिलाती हैं और यह समझती हैं कि इस तरह खिलानेसे लड़के जल्द अच्छे हो जायंगे, पर इससे उलटे उनकी खराबी होती है।

बालकोंकी खुराकके बारेमें यह बात विशेष ध्यानमें रखने योग्य है कि गायके दूधके बराबर बढ़िया खुराक उनके लिये दूसरी कोई चीज इस दुनियामें नहीं है। पर अफसोस है ...। गोवधके कारण तथा जंगलोंके कड़े कानूनके कारण और ... पड़ते हुए अकालके कारण गरीब हो जानेसे लोग ...य नहीं रख सकते। क्योंकि गाय रखनेका खर्च गरीब

लोगोंसे नहीं निबह सकता। इससे दूध दिन पर दिन महंगा होता जाता है। और महंगीके कारण उसमें मिलावट होती है; इससे शहरोंमें जैसा चाहिये वैसा शुद्ध दूध धनवानोंको भी नहीं मिल सकता और गरीब आदमी अपनी गरीबीके कारण अपने बच्चोंको दूध जैसी उत्तम वस्तु नहीं दे सकते। इससे बालक दुर्बल रहते हैं और ऐसी पुष्टिकारक उत्तम खुराक बिना बचपनसे ही उनका गठन बहुत ढीला होजाता है। बड़े होने पर वे बेकामके—निर्बल होते हैं। अजी! दूधको क्या कहें, दूध तो दूर रहा हमारे देशके ६ करोड़ भिखमंगोंके बालकोंको रूखी सूखी रोटी का टुकड़ा भी वक्त पर कहां मिलता है? नहीं मिलता। मांगी हुई भोजन या घटियासे घटिया अबकी घटियासे घटिया रीतिसे जो खुराक बनायी जाय और बिना किसी अच्छी सामग्रीके या बिना नियम के खायी जाय तो उसका कैसा असर होगा यह समझना कुछ मुश्किल नहीं है। इसलिये बहनो! एक विचार कीजिये कि खुराक जैसी जिन्दगीकी बहुत जरूरी चीजमें भी बहुत लापरवाही हो और उसका भी ठिकाना न हो तो बालकोंकी तन्दुरुस्ती कैसे अच्छी रहेगी? नहीं रहेगी।

बहनो! जैसे खुराकके विषयमें बहुत खबरदारी दरकार है वैसे ही पानी पीनेमें भी बहुत सावधानी चाहिये; क्योंकि कितने ही तरहके रोग पानीमें पड़े हुए कीड़ोंके कारण होते हैं। जैसे, कितने ही आदमियोंको मलेरिया ज्वर बहुत होता है। वह पानी पीनेमें लापरवाही रखनेसे ही होता है।

यहां तक कि कितनी ही वार हैजा आदि छूतके रोग भी पानीके द्वारा बहुत फैल जाते हैं। पेटकी कई बीमारियां पानीके विकारसे ही होती है। क्योंकि पानीके साथ जमीनके अन्दरकी धूल और बाहरसे पड़ने वाले कूड़े कर्कटका चूर भी पेटमें चला जाता है; इसलिये जैसे बने वैसे पानी साफ करनेका ध्यान रखना चाहिये और इस प्रकार शुद्ध करके पीना चाहिये कि जिससे पानीके भीतर के कीड़े नष्ट हो जायं। पानी साफ करनेकी बहुत सी युक्तियां है पर वे सब यहां नहीं कही जा सकतीं। इसके लिये तो एक खास भाषण होना चाहिये। तभी उसकी कुछ जानने योग्य खूबियां मालूम हो सकती हैं। आज थोड़ेमें इतना ही कहना है कि जैसे खुराक में बहुत साव-धानी की जरूरत है वैसे ही पानी पीनेमें भी बहुत सावधानी रखनेकी जरूरत है। इसलिये ऐसे जरूरी विषयमें लापरवाह मत बन जाना।

खुली हवासे तन्दुरुस्तीको बहुत फायदा पहुंचता है।

(४) हमारे स्वास्थ्यके अच्छा न होनेका चौथा कारण यह है कि खुली, ताजी हवाका फायदा हम नहीं जानतीं, इससे उससे जितना चाहिये उतना लाभ हम नहीं उठातीं। जनानखानोंमें, बुरकोंमें, द्वार-बन्द घरोंमें और लाज के घूंघटमें ही हम अपना अनमोल जीवन गवां देती हैं और परम कृपालु परमात्माने कृपा

करके सुन्दर हवा जैसी जो अनमोल चीज गरीबसे गरीब आदमियोंको भी मुफ़्त दी है उसका पूरा पूरा लाभ हम नहीं उठातीं; इसीसे हमारे शरीरको अधिक खराबी होती है। हवाका विशेष गुण समझनेवाले अनुभवी डाक्टर कहते हैं कि सौ तरहकी दवाएं खानेकी अपेक्षा हवा खानेसे अधिक फायदा होता है। इसीसे हमारे यहां कहावत है कि "सौ दवा न एक हवा।" ऐसा अमूल्य लाभ हवासे है। और वह हवा हमको ईश्वरकी कृपासे मुफ़्त मिलती है, तो भी हम ऐसी नादान हैं, रिवाज की ऐसी चेरि हैं और ऐसी अभागी हैं कि ऐसी मुफ़्त मिलनेवाली ताजी हवाका लाभ भी नहीं लेसकतीं। इस कारण हम ताजी हवा और खुले दिलसे कसरत करनेके लाभसे वंचित रहती हैं।

परदा होनेका कारण तथा उसकी खराबी।

बहनो। स्त्रियोंको घरका घुम बना रखने और घरके अंधेरे कोनेमें डाल रखनेका ख्याल पुराने समयके हमारे पवित्र ऋषियोंको नहीं था। वे तो स्त्रियोंको अपना आधा अंग समझते थे और जितनी स्वतंत्रता आप भोगते थे उतनी ही स्वतंत्रता अपने परिवारकी स्त्रियोंको भोगने देते थे। इसके दृष्टान्त वेदोंमें, पुराणोंमें तथा पुरानी कथाओं और नाटकोंसे चाहे जितने निकाल सकते हैं। इसके सिवि हम अधिक दूर क्यों जायं? हम नहीं जानतीं कि भगवान रामचन्द्रसे बढ़कर कोई नीतिमान और धार्मिक राजा हुआ है। सीताजीकी बराबरी करनेवाली कोई सती हुई

यहां तक कि कितनी ही वार हैजा आदि छूतके रोग भी पानीके द्वारा बहुत फैल जाते हैं। पेटकी कई बीमारियां पानीके विकारसे ही होती है। क्योंकि पानीके साथ जमीनके अन्दरकी धूल और बाहरसे पड़ने वाले कूड़े कर्कटका चूर भी पेटमें चला जाता है; इसलिये जैसे बने वैसे पानी साफ करनेका ध्यान रखना चाहिये और इस प्रकार शुद्ध करके पीना चाहिये कि जिससे पानीके भीतर के कीड़े नष्ट हो जायं। पानी साफ करनेकी बहुत सी युक्तियां है पर वे सब यहां नहीं कही जा सकतीं। इसके लिये तो एक खास भाषण होना चाहिये। तभी उसकी कुछ जानने योग्य खूबियां मालूम हो सकती हैं। आज थोड़ेमें इतना ही कहना है कि जैसे खुराक में बहुत साव-धानी की जरूरत है वैसे ही पानी पीनेमें भी बहुत सावधानी रखनेकी जरूरत है। इसलिये ऐसे जरूरी विषयमें लापरवाह मत बन जाना।

खुली हवासे तन्दु

फायदा

(४) हमारे

कारण यह है

जानतीं, इस

नहीं ७

और

।व

है। फिर भी पवित्र सीताजी कितनी स्वतंत्रता भोगती थीं यह बात हमसे छिपी नहीं है। उसी तरह दमयन्ती, द्रौपदी, शकुन्तला, गार्गी, कैकेयी, सुभद्रा, रुक्मिणी इत्यादि पहले जमानेकी स्त्रियां कितनी स्वतंत्रतासे रहती थीं यह बात पुराण जाननेवालियोंसे छिपी नहीं है। पर इसके बाद स्त्रियोंके अधिकार पर कुछ कुछ अंकुश डाला जाने लगा और स्त्रियोंके कितने ही काम करनेमें भी रुकावट पड़ने लगी। क्योंकि बौद्ध धर्मका यह एक मुख्य सिद्धान्त है कि मनुष्यमें जो कामदेव है वह मनुष्यका शत्रु है। यह काम विशेषकर स्त्रियोंमें है, इसलिये जिनको मोक्ष लेना हो उनको स्त्रियोंके संसर्गसे दूर रहना चाहिये। इस तरहका विचार बौद्ध धर्मवालोंने पहले हमारे देशमें फैलाया और उस धर्मका जोर उस समय बहुत बढ़ता गया। इससे धीरे धीरे उसका असर हिन्दूधर्म पर हुआ। हिन्दू भी मानने लगे कि "द्वारमेकं नरकस्य नारी" यानी नारी नरकका एक दरवाजा है। इसके बाद धीरे धीरे स्त्रियोंका दरजा और अधिकार आर्य गृहस्थोंसे घटने लगा और दिन दिन वह विचार बढ़ता गया। इसके बाद मुद्दत तक हमारे देशमें मुसलमानोंका राज्य रहा। उनलोगोंमें जनानखाने और परदेका रिवाज था। उनको देखा देखी रजवाड़ोंमें चिक परदेका रिवाज जारी हुआ और उस समयके कितने ही मुसलमान हाकिमोंके अनीति भरे जुल्मके कारण साधारण लोगोंमें परदेका रिवाज चल पड़ा।

रिवाज़ उस समय, देश-काल-पात्रके अनुसार उनको

होती है। शरीरका स्वभाव ही ऐसा है, उसकी रचना ही ऐसी है और प्रकृतिकी इच्छा ही ऐसी है कि काम किये विना शरीर अच्छा रह नहीं सकता। क्योंकि जरूरत के अनुसार काम किये विना शरीरमें जरूरत लायक गरमी नहीं आ सकती; गरमी आये विना शरीरकी जो रगड़ होनी चाहिये वह नहीं होती और रगड़ विना उसकी जो रासायनिक फेरफार होना चाहिये वह नहीं होता। इससे ठीक ठीक खुराक नहीं पच सकती, अच्छी नींद नहीं आ सकती, चाहिये जितना तेजीसे लहू दौड़ नहीं सकता और जिस नियमसे सांस लेना चाहिये उस नियमसे सांस नहीं ली जा सकती। इससे शरीर बिगड़ता है; क्योंकि प्रकृतिके नियम तोड़कर और मनमानी चाल चलकर कोई आदमी तन्दुरुस्त नहीं रह सकता। तिसपर भी हमारी बहुधा [illegible] [illegible] रहती हैं, आलस्यवश पड़ती हैं, [illegible] पर [illegible] रहती हैं, [illegible] [illegible] लगाकर [illegible] हैं और [illegible] कुछ भी काम नहीं करतीं। काम करनेमें उनको लज्जा आती है। और

मांजना चाहिये और काम करना सीखना चाहिये तथा जरूरी कसरत करना चाहिये। पर जहां अपने घरका काम करनेमें भी शरम लगता है वहां कसरतकी बात कौन पूछे?

बहनो! इस समय यह हमारा हाल है। इससे हम सच्ची तन्दुरुस्ती नहीं पा सकतीं। इसलिये अगर शरीर को अच्छा रखना हो तो उसमें उसको शक्तिके अनुसार काम लेना सीखना चाहिये। जब यह सीखेंगी तभी हमारा शरीर अच्छा रह सकेगा और जब यह अमूल्य उत्तराधिकार अपने बालकों का दे सकेंगी तभी हम उनकी सच्ची भलाई कर सकेंगीं। इसलिये बहनो! अगर अपनी तन्दुरुस्ती सुधारना हो और भविष्यकी पीढ़ीका कल्याण करना हो तो काम करना सीखिये। काम करना सीखिये।

अपने हर एक काममें नियम रखना चाहिये।

(६) हमारा शरीर जो बहुत कमजोर और असमर्थ है इसका छठा कारण यह है कि हममें किसी तरहका नियम नहीं है; हर एक बातमें बड़ा बेनियम है। जैसे, खाने, सोने, बैठने, पोशाक पहनने, कामकाज करने, रोजगार धंधा सीखने, पढ़ने, बच्चोंकी सम्हाल रखने और इसी तरहकी जिन्दगीकी हर एक बातमें बड़ा बेनियम है और इसके कारण हमारी तन्दुरुस्ती अच्छी नहीं रहती। स्वयं प्रकृति नियमके अधीन है; इससे उसने हमारा शरीर भी ऐसा बनाया है कि वह नियमसे रहने पर ही अच्छा रह सकता है। वैद्यक

होती है। शरीरका स्वभाव ही ऐसा है, उसकी रचना ही ऐसी है और प्रकृतिकी इच्छा ही ऐसी है कि काम किये विना शरीर अच्छा रह नहीं सकता। क्योंकि ज़रूरत के अनुसार काम किये विना शरीरमें ज़रूरत लायक गरमी नहीं आ सकती; गरमी आये विना शरीरकी जो रगड़ होनी चाहिये वह नहीं होती और रगड़ विना उसमें जो रासायनिक फेरफार होना चाहिये वह नहीं होता। इससे ठीक ठीक खुराक नहीं पच सकती, अच्छी नींद नहीं आ सकती, चाहिये जितना नसोंमें लहू दौड़ नहीं सकता और जिस नियमसे सांस लेना चाहिये उस नियमसे सांस नहीं ली जा सकती। इससे शरीर बिगड़ता है; क्योंकि प्रकृतिके नियम तोड़कर और मनमानी चाल चलकर कोई आदमी तन्दुरुस्त नहीं रह सकता। तिसपर भी हमारे बहुभाइने भूखो गरजमें रहता है, आडम्बर मानो है,

भयानक सूरतकी घोर प्रलयकी अग्नि जैसी आगमें बिना कारण कोई आदमी अपनी खुशीसे पड़नेको तय्यार नहीं होगा। परन्तु वह समय अभी बहुत दूर है; क्योंकि हम लोगोंका ज्ञान अभी उतनी दूर तक नहीं पहुंचा है। तो भी बड़ाबड़े महात्माओंके वचनसे, पवित्र शास्त्रोंकी आज्ञासे और वैद्यकशास्त्रकी सहायतासे तथा निजके हर रोजके अनुभवसे हम इतना अच्छी तरह समझ सकती हैं कि आनन्दमें रहनेमें लाभ है और शोकमें रहनेमें नुकसान है। इसमें किसी तरहका सन्देह नहीं है। तिस पर भी हम इतनी नादान हैं, ऐसी अभागी हैं और ऐसी कमजोर दिलकी हैं कि बिना कारण जहां तहांसे दुःख और शोक बिसाह कर हाय हाय किया करती हैं और चिन्तामें तथा भूतके सोचमें और भविष्यकी फिकरमें तथा बापके बाप और माकी माके नाम पर रोनेमें ही जिन्दगी गवांती हैं और परम कृपालु परमात्माके दिये हुए उत्तम मनुष्य शरीरके सौन्दर्य्य तथा स्वास्थ्य नाश करती हैं। लेकिन यह नहीं समझतीं कि ऐसा करना महापाप है।

कितने ही पापोंको हम पाप नहीं समझतीं, इससे हमारी दुर्दशा होती है।

बहनो! हमारे शरीर और मनकी जो अधम दशा है उसके कारण आप जानती हैं? उसके अनेक में एक मुख्य कारण यह भी है कि जिन पापोंकी

समझनेके लिये अभी जैसा चाहिये वैसा साधन हमारे पास नहीं है, क्योंकि हमारा विज्ञान (सायंस) अभी इस विषयमें बहुत अधूरा है। आनन्दसे मगजके ज्ञानतन्तुओं में क्या क्या फेरबदल होता है और कैसी कैसी क्रियाएं होती हैं यह हम साफ तौरसे नहीं जानतीं, वहां तक अभी हमारा आधुनिक वैद्यकशास्त्र नहीं पहुंचा है। पर महात्मा लोग कहते हैं कि इस विषयमें बहुत कुछ जानने योग्य है और जब इस विषय के भेदोंको लोग समझेंगे तब उनकी तन्दुरुस्ती पर एक नया ही प्रकाश पड़ेगा और दुनियाको उससे बहुत ऊंचा ज्ञान तथा अपना चरित्र सुधारनेका महान बल मिल सकेगा। एक्सरेज किरण तथा रेडियम इत्यादिसे मिलते जुलते और जो नये आविष्कार होंगे उन सबके संयोगसे एक नये ढङ्गका यंत्र बन सकेगा जिससे मगजके अन्दरके ज्ञानतन्तुओंमें होनेवाला फेर बदल देखा जा सकेगा, उसका फोटो लिया जा सकेगा और उसमेंसे निकलने वाली आवाज सुनी जा सकेगी। यह सब प्रत्यक्ष देख कर अच्छी तरह समझमें आ सकेगा कि आनन्दी अन्तःकरण रखनेकी कितनी बड़ी जरूरत है। इतना ही नहीं, जैसे आनन्दका अच्छा असर मगजके सूक्ष्म ज्ञानतन्तुओं पर देखा जा सकेगा वैसे ही उनपर होनेवाला दुःखका बुरा असर भी देखा जा सकेगा। ... सब देख कर नालायकसे नालायक आदमीको भी अपना ... सुधारनेकी सूझेगी। चिन्तासे होनेवाली

मानव स्वभावी और मनका अग्नि जैसी आगमें बिना
कारण कोई आदमी अपनी खुशीसे पड़नेको तयार नहीं
होता। परन्तु वह समय अभी बहुत दूर है; क्योंकि
हम लोगोंका ज्ञान अभी उतनी दूर तक नहीं पहुंचा
है। तो भी हजारों महात्माओंके मतसे, पवित्र शास्त्रोंकी
आज्ञासे और वैद्यकशास्त्रकी सहायतासे तथा निजके हर
दिनके अनुभवसे हम इतना अच्छी तरह समझ सकती हैं
कि आनन्दमें रहनेसे लाभ है और शोकमें रहनेसे नुकसान
है। इसमें किसी तरहका सन्देह नहीं है। तिस पर
भी हम इतनी नादान हैं, ऐसी अभागी हैं और ऐसी
कमजोर दिलकी हैं कि बिना कारण जहां तहांसे दुःख
और शोक बेसाह कर हाय हाय किया करती हैं और
ख्यालों तथा भयके सोचमें और भविष्यकी फिकरमें
या बापके बाप और माकी माके नाम पर रोनेमें
जिन्दगी गवाती है और परम कृपालु परमात्माके
दिये हुए उत्तम मनुष्य शरीरके सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य नाश
करती हैं। लेकिन यह नहीं समझतीं कि ऐसा करना
महापाप है।

कितने ही पापोंको हम पाप नहीं समझतीं, इससे हमारी दुर्दशा होती है।

बहनो! हमारे शरीर और मनकी जो भ्रष्ट
उसके कारण आप जानती
एक मुख्य कारण यह

समझना चाहिये उनको हम पाप नहीं समझतीं, बल्कि जिन पापोंको हम अपनी सारी जिन्दगीमें कभी नहीं करतीं उनको पाप समझती हैं। जैसे-गोहत्या, ब्रह्म-हत्या, बालहत्या इत्यादिको, जिन्हें अच्छे हिन्दू कभी नहीं करते, हम पाप समझती हैं। बेशक ये महापाप हैं, इसमें कुछ सन्देह नहीं है। पर जो पाप हम सारी जिन्दगीमें कभी नहीं करतीं उनसे डरती हैं और जो पाप हमसे बारबार हो जाते हैं उनकी परवा नहीं करतीं। अब तो हमें नये तरहके पापोंसे भी बचना चाहिये। जैसे, अपनी तन्दुरुस्तीको न सम्हालना और परमकृपालु परमात्माकी दी हुई अनमोल देहको विना कारण अपनी ही भूलसे नष्ट होने देना महापाप है। दुःखके विचारोंमें रहना, भयके विचारोंमें रहना, शोकके विचारोंमें रहना और अच्छा संयोग होने पर भी विना कारण बुरी बुरी फिकरोंमें जीवन बिताना महापाप है। साधन होने पर भी अपनेसे होने योग्य अपने बन्धुओंकी, अपने देशकी तथा अपने धर्मकी सेवा न करना महापाप है। विना शक्ति, विना साधन और विना ज्ञानकी स्थितिमें सन्तान पैदा करना और पीछे उन बच्चोंका जीवन बिगाड़ना महापाप है। अन्तःकरणके विरुद्ध व्याह करना-व्याह क्या पुतला पुतली एक साथ कर देना-महापाप है। लोकलाजकी खातिर, रिवाजकी खातिर तथा तुच्छ स्वार्थकी खातिर पोलमें पड़े रहना और अपना अन्तःकरण बेचकर काम करना महापाप है। इस जगतमें आकर दुःख भोगना और सुखको

समझते थे अथवा जिनको हम पाप नहीं समझते, बल्कि जिन पापोंको हम अपने सारे जिन्दगीमें कभी नहीं करते उनको पाप समझते हैं। जैसे गोहत्या, ब्रह्म-हत्या, बालहत्या इत्यादिको, जिन्हें अच्छे हिन्दू कभी नहीं करते, हम पाप समझते हैं। बेशक ये महापाप है, इसमें कुछ सन्देह नहीं है। पर जो पाप हम सारी जिन्दगीमें कभी नहीं करते उनसे डरते हैं और जो पाप हमसे बारबार हो जाते हैं उनकी परवा नहीं करते। अब तो हमें नये तरहके पापोंसे भी बचना चाहिये। जैसे, अपनी तन्दुरुस्तीको न सम्हालना और परमकृपालु परमात्माकी दी हुई अनमोल देहको बिना कारण अपनी ही भूलसे नष्ट होने देना महापाप है। दुःखके विचारोंमें रहना, भयके विचारोंमें रहना, शोकके विचारोंमें रहना और अच्छा संयोग होने पर भी बिना कारण बुरी बुरी फिकरोंमें जीवन बिताना महापाप है। साधन होने पर भी अपनेसे होने योग्य अपने बन्धुओंकी, अपने देशकी तथा अपने धर्मकी सेवा न करना महापाप है। बिना शक्ति, बिना साधन और बिना ज्ञानकी स्थितिमें सन्तान पैदा करना और पीछे उन बच्चोंका जीवन बिगाड़ना महापाप है। अन्तःकरणके विरुद्ध ब्याह करना-ब्याह क्या पुतला पुतली एक साथ कर देना-महापाप है। लोकलाजकी खातिर, रिवाजकी खातिर तथा तुच्छ स्वार्थकी खातिर पोलमें पड़े रहना और अपना अन्तःकरण बेचकर काम करना महा-पाप है। इस जगतमें आकर दुःख भोगना और सुखको

सामर्थ्य पानेके लिये उचित उपाय न करना महापाप है। उच्च रीतिसे जीवन बितानेका ज्ञान प्राप्त न करना महापाप है। इस तरहके अनेक पाप हम बार बार करती हैं फिर भी उनको पाप नहीं समझतीं। इससे हमारे शरीरकी, हमारे मनकी, हमारे धर्मकी और हमारे देशकी खराबी होती है। इसलिये अब अपनी तन्दुरुस्ती सुधारनेके लिये, बलवान होनेके लिये, बहादुर होनेके लिये और परमकृपालु परमात्माने अपनी जिन उत्तम इच्छाओंसे मनुष्य को पैदा किया है उनको पूरा करनेकी योग्यता पानेके लिये हमें इस तरहके पापोंको पाप समझना सीखना चाहिये। जब हम उसे अच्छी तरह समझेंगी तभी उत्तम जीवन बिता सकेंगी।

भय, चिन्ता और दुःख आग है। इस आगसे होनेवाली खराबी।

बहनो! आनन्दमें रहनेकी कितनी बड़ी जरूरत है और आनन्दमें रहनेसे हमारी तन्दुरुस्ती और कान्ति पर कितना अच्छा असर होता है और यह सब कितनी आसानीसे हो सकता है यह समझ कर भी अगर हम आनन्दसे न रह सकें तो वह कितनी बड़ी भूल कहलायगी और कितनी बड़ी कमनसीबी होगी? तिसपर भी अफसोस है कि हमारी लाखों बहनें बिना कारण शोकमें और चिन्ता में रहने की भूल करती हैं और अपने शरीरका सत्यानाश कर डालती हैं। जरा विचार तो कीजिये कि अगर एक

सामग्री पानेके लिये उचित उपाय न करना महापाप है। उच्च रीतिसे जीवन बितानेका ज्ञान प्राप्त न करना महापाप है। इस तरहके अनेक पाप हम बार बार करती हैं फिर भी उनको पाप नहीं समझती। इससे हमारे शरीरको, हमारे मनको, हमारे धर्मको और हमारे देशको खराबी होती है। इसलिये अब अपनी तन्दुरुस्ती सुधारनेके लिये, बलवान होनेके लिये, बहादुर होनेके लिये और परमकृपालु परमात्माने अपनी जिन उत्तम इच्छाओंसे मनुष्य को पैदा किया है उनका पूरा करनेकी योग्यता पानेके लिये हमें इस तरहके पापों को पाप समझना सीखना चाहिये। जब हम उसे अच्छी तरह समझेंगी तभी उत्तम जीवन बिता सकेंगी।

भय, चिन्ता और दुःख आग है। इस आगसे होनेवाली खराबी।

बहनो! आनन्दमें रहनेकी कितनी बड़ी जरूरत है और आनन्दमें रहनेसे हमारी तन्दुरुस्ती और कान्ति पर कितना अच्छा असर होता है और यह सब कितनी आसानीसे हो सकता है यह समझ कर भी अगर हम आनन्दसे न रह सकें तो वह कितनी बड़ी [illegible] ायगी और कितनी बड़ी कमनसीबी होगी? [illegible]
है कि हमारी लाखों बहनें बिना कारण
में रहने को भूल करती हैं और अपने
कर डालती हैं। जरा विचार तो

तरफ हृदयमें शोक रूपी किरासनतेल की डिबिया जलावें और दूसरी तरफसे डाक्टरोंकी दवारूपी पानीकी बूंदें छिड़कें तो उससे कभी वह आग बुझ सकती है ? अन्दर चिन्ता भरकर बाहरकी कड़वी, खारी, तीखी खट्टी दवाओंकी मददसे तन्दुरुस्ती अच्छी रखी जासकती है ? कहिये कि नहीं । इसलिये बहनो ! अगर अपनी तन्दुरुस्ती अच्छी रखनी हो तो किसी तरहके शोक, रंजिश, भय या फिकरका विचार न करते रहना चाहिये और इसके दाग अपने हृदयमें नहीं पड़ने देना चाहिये ; क्योंकि इसका असर यहां तक नहीं रहता बल्कि हमारे बच्चोंपर भी पड़ता है । इस विषयमें एक नेक स्त्रीने अपनी एक पड़ोसिनका उदाहरण मुझे सुनाया था वह जानने योग्य है । इसलिये यहां कहता हूं ।

हमारे दुःखोंका हमारे कुटुम्बपर बहुत बुरा असर पड़ता है ।

* हमारी पड़ोसमें एक स्त्री थी । वह हमेशा बीमारीकी शिकायत किया करती । बार बार कहती कि मुझे जुकाम होगया । दो चार दिन बीतने पर कहती कि मेरा सिर दुखता है । महीनेमें पांच सात बार पैर सूजनेकी शिकायत करती । इस तरह कितनी ही बीमारियां उसको हुआ करतीं और बहुत मामूली होने परभी दूसरोंके सामने बहुत बढ़ाकर कहनेमें उसको एक तरहका आनन्द मिलता ।

* भाग्य फेरने की कुञ्जी से ।

अपनेको बीमार दिखानेके लिये वह बार बार कोशिश करती; क्योंकि उसे ऐसी आदत ही पड़ गयी थी। मुहल्लेमें जब कोई वैद्य या डाक्टर आता तो उसको नाड़ी दिखाया करती, बड़े बूढ़ोंके सामने रोया करती और वे बेचारे नेकदिल भोले भाले आदमी उसके दुःखके लिये बड़ी सहानुभूति दिखाते। इससे उसको सन्तोष होता और अपने कल्पित दुःख की बातें करनेमें उसे एक तरहका मजा मिलता था। अपनी सहेलियोंसे अपना दुःख कहने और उनकी सहानुभूति प्राप्त करने का उसे चसका पड़ गया था। ऐसा करते करते उसे इसकी टेव पड़ गयी और जरा भी देह अलसाय तो उसको बहुत बढ़ाकर दिखाना उसे आ गया। रास्तेमें चलते चलते बहुत थकावट दिखाने, बहुत तकलीफ में रहनेके ऐसा मुंह बनाने, बीमार आदमीकी तरह धीरे धीरे चलने, किसीसे बातचीत करते समय बीमार आदमीकी सी आवाज निकालने और रोजरोज दवाकी शीशी हाथमें लेकर जरा लटते पटते बाहर निकलनेकी उसे आदत पड गयी थी। यह सब किसी भारी बीमारीके कारण हो तो वह दूसरी बात है पर ऐसी कोई बात नहीं थी। सिर्फ मनकी कमजोरीसे कारण, मैं बीमार हूं इस ख्यालके कारण और पीछे बीमार बननेकी आदत पड़ जानेके कारण ऐसा होता था। पर इसका फल क्या होगा इसकी उसे कुछ खबर न थी या परवाह न थी। उसको देख देखकर उसके बच्चे भी ऐसे ही स्वभावके हुए। इससे उसको बुढ़ापेमें बहुत दुःख होने लगा। उसके पांच, लड़कियां थीं;

धन्यवाद।

पण्डित जगदीश्वरप्रसाद ओझा (मिथिलामिहिर, दरभंगा) और बाबू विष्णुप्रसाद सिंह (सुलतानगंज—पटना) से एक एक ग्राहक स्वर्गमालाको मिले हैं। विष्णुप्रसाद बाबूसे दो ग्राहक पहले भी मिल चुके हैं। इन सज्जनोंको धन्यवाद है।

प्रकाशक।